

पीपल्स मार्च

भारत के इंकलाब की आवाज़



एक ऐतिहासिक मोड़ :

भा.क.पा.(माओवादी) की एकता काँग्रेस-नौवीं महाधिवेशन का केन्द्रीय आह्वान :

आधार क्षेत्रों/मुक्तांचलों के निर्माण के लिए जन युद्ध को आगे बढ़ाएँ; छापामार युद्ध को चलायमान जंग में बदल दें; जन मुक्ति छापामार फौज को जन-फौज में बदल दें !!

जनवरी-फरवरी 2007 के दौरान किसी समय भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) का सर्वोत्कृष्ट नेतृत्व कामरेड चारू मजुमदार-कन्हाई चटर्जी (सी एम-के सी) नगर - एक छापामार इलाके के गहरे आंतरिक हिस्से में ऐतिहासिक भा.क.पा.(माओवादी) की एकता महाधिवेशन-9वीं काँग्रेस - के प्रतिनिधियों की हैसियत से इकट्ठा हुए। यह दो बरस के प्रदीर्घ अध्ययन, चर्चा और बहस का वह अंजाम होने जा रहा था जिसकी शुरुआत 21 सितंबर 2004 को संपन्न उस एकता बैठक द्वारा प्रस्तुत बुनियादी दस्तावेजों और पिछली सगमियों की समीक्षाओं पर शुरू हुई थी जब - भा.क.पा. (मा-ले)[पीपुल्सवार] तथा भारत का माओवादी कम्युनिस्ट केंद्र - इन दो क्रान्तिकारी प्रवाहों ने एक



हो कर भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) की स्थापना की। जब-पहले इलाका स्तर, तब जिला स्तर और फिर राज्य स्तर पर संपन्न निचले अधिवेशनों से सैकड़ों सुधार संशोधन प्रस्ताव भेजे गये तो यह एक विराट जनवादी चर्चा बन कर उभरी। राज्य अधिवेशनों ने समानुपातिक प्रतिनिधित्व के आधार पर - किसी राज्य में पार्टी सदस्यों की संख्या की गणना की बुनियाद पर-महाधिवेशन के लिए प्रतिनिधियों का निर्वाचित किया।

17 राज्यों से राजसत्ता की चौकस निगाहों से बचते हुए अत्यंत परिशुद्ध योजना के अंतर्गत जत्थों में अधिवेशन-स्थल पर पहुंचना शुरू किया। सरकार ने प्रण किया था कि यह महाधिवेशन संपन्न नहीं होने देगी। वे अपने गुप्तचरों के जरिये

समूचे देश में किसी तरह के संकेत खोज रहे थे उन्होंने छापामार इलाकों पर गहरी नजर रखी - जहां महाधिवेशन लिये जाये की संभावना थी उन्होंने केंद्र में एक अलग प्रकोष्ठ की स्थापना की, विशेषकर काँग्रेस महाधिवेशन के बारे में समूचे देश से गुप्त सूचनाओं के समन्वय के

बलों ने, बल्कि अधिवेशन स्थल की चारों दिशाओं में बसी असंख्य जनराशि ने निभायी। हालांकि उन्होंने किंवदंती बन चुके कामरेड बीके /नवीन (उर्फ चंद्रमौली) और उनकी संगिनी करुणा को गिरफ्तार कर लिया - जो काँग्रेस में हिस्सा लेने के उद्देश्य से चले थे, पर वे उन पर अत्यंत पाशविक यातनाओं का प्रयोग करने के बावजूद जरा सा संकेत तक हासिल करने में कामयाब न हो सके।

एक माह से अधिक समय तक प्रतिनिधियों ने पहले एक सप्ताह तक संशोधन-प्रस्तावों और ताजातरीन बहसों के अध्ययन में बिताया; महाधिवेशन अपने आप में ही एक पखवाह तक चला और फिर एक और सप्ताह निष्कर्षों को सुव्यवस्थित रूप देने में व्यतीत किया। अंत में 20 फरवरी 2007 के दुनिया के समक्ष महाधिवेशन के सफलता के साथ संपन्न

हो जाने की घोषणा की गयी।

लिए इसे स्थापित किया गया था, दुश्मन और प्रसार माध्यमों ने तो यह कयास भी लगाया कि महाधिवेशन दिसंबर 2006-जनवरी 2007 में कभी होने वाला है। इस भारी घेराबंदी के बावजूद महाधिवेशन जनवरी-फरवरी 2007 में बिना किसी त्रुटि के - अथवा सरकार और उसके राज-तंत्र को भनक तक न लगते हुए - मुकम्मल हो गया। मुखबीरों की उनकी फौज, उनके हाइ-टेक जासूसी-उपकरण और उनकी-बेहिसाब धन-शक्ति सारी की सारी भा.क.पा. (माओवादी) की अनुशासनबद्ध और व्यवस्थित योजनान्वयन के आगे नाकाम साबित हुई, और अधिवेशन का सफल समापन किया, रक्षा की जिम्मेदारी न केवल पी एल जी ए (जन मुक्ति छापामार फौज) के

हो जाने की घोषणा की गयी।

सभा-स्थल और उद्घाटन

एक गुरिल्ला प्रांत के जंगलों की गंभीर गहराई में यह वास्तव में स्थापित एक नगरी ही थी। कम्यून के बीचों बीच विशाल कवायद-मैदान और विशाल काँग्रेस सभागार बना था। एक विस्तृत इलाके में पसरे तंबुओं में प्रतिनिधियों, पी एल जी ए एवं अन्य कर्मियों तथा सुरक्षा साथियों का आवास था। अपने आपरेटों की पूरी टीम सहित एक कंप्यूटर कमरा, अनुवादकों तथा विभिन्न कर्मियों-कारकूनो की मदद से दस्तावेजों, संशोधनों का ही नहीं, अपितु उपलक्ष्य को ध्यान में रख कर प्रतिनिधियों द्वारा

लिखी गयी कविताओं की अटूट धारा का उत्पादन करता लगातार रात-दिन चलता रहा। समूचा सभा स्थल प्रतिदिन १५ घंटों तक चलने वाली जेनरेटरों से उद्दीप्त-प्रकाशित था ताकि लैपटाप, पर्सनल कम्प्यूटर्स, तथा जेराक्स मशीनें बिना रुकावट के काम कर सकें। सभी दस्तावेज तीन भाषाओं - हिंदी, अंग्रेजी और तेलुगु - में निकाले गये। सभा स्थल के मध्य से एक जल धारा बहती चली गयी थी जो महाधिवेशन-नगरी को २४ सौ घंटे पानी मुहैया करा रही थी। हां लगातार गर्म करते रहने के जरिये सभी को उबला हुआ पेय जल उपलब्ध कराया जा रहा था, इस तरह रोगाणुओं और बीमारियों को न्यूनतम बनाये रखा जा सका। एक विशाल खुले आकाश तले रसोई का निर्माण किया गया था जो नाश्ता एवं दिन में दो बार समूचे शिविर को भोजन उपलब्ध कराने के अतिरिक्त-प्रतिनिधियों के लिए नियमित चाय की अपूर्ति भी कर रही थी। भोजन सादा था पर उन हालातों में जितना पौष्टिक हो सकता था उतना पौष्टिक जरूर था। ये विराट आयोजन इन तैयारियों की जरा सी भी जानकारी बाहर रिसे बिना किया गया था। यह सचमुच ही एक विस्मयकारी-कार्य था जिसे इलाके की जनता और प्रांतीय सुरक्षा दलों (मिलिशिया) की व्यापक सहायता और समर्थन के बिना संपन्न करना संभव न था।

काँग्रेस सभागार का नाम कामरेड के एस-चंद्रमौली हाल रखा गया। एकताबद्ध पार्टी के वे दोनों केन्द्रीय कमेटी सदस्य थे जो पिछले दो वर्षों में शहीद हुए (कामरेड करम सिंह (के एस) पोलितब्यूरो के सदस्य थे और कामरेड चंद्रमौली मुखबीर से जानकारी मिलने की वजह से काँग्रेस में हाजिर होने की राह में पकड़ कर शहीद कर दिये गये) केन्द्रीय कमेटी की बैठकों का सभागार, विभिन्न प्रतिनिधियों के शिविर, चौराहों, रसोई, दवाखाना, पोस्टर-बैनर निर्माणगार, कम्प्यूटर कमरा आदि सभी के नाम शहीदों के नाम पर रखे गये। परेड मैदान का नामकरण मधुवन, गिरिडीह, उदयगिरि, जहानाबाद आदि हालिया वीरतापूर्ण फौजी कारवाइयों के नाम पर रखा गया। कुलमिलाकर यह तो गहरे वनों के बीच उभारी गयी एक वास्तविक नगरी ही थी।

कवायद मैदान तो परचमों, झंडों-बंदनवारों का सागर सा लग रहा था और पेड़ों को भी लाल कपड़ों से लपेट कर सजाया गया था। उद्घाटन के दिन समूचा पी एल जी ए, सांस्कृतिक कर्मी, कारकुन और काँग्रेस प्रतिनिधि तब निस्तब्ध-सावधान मुद्रा में खड़े रहे जब पार्टी के महा सचिव कामरेड गणपति ने लाल ध्वज पहराया। सब ने समवेत स्वर में लाल झंडे का गीत गाया। लाल झंडा काँग्रेस की पूरी अवधि में फहराता रहा और काँग्रेस के पूरा हो जाने के बाद ही अंतर्राष्ट्रीय गीत गायन के साथ उतारा गया। वरिष्ठ नेता, पोलितब्यूरो सदस्य कामरेड किशन ने विषय-प्रवेश हेतु संक्षिप्त भाषण दिया जबकि महासचिव ने काँग्रेस की विशाल महत्व को विषद किया।

इसके बाद शहीद स्मारक पर पुष्पचक्र रखने का सत्र शुरू हुआ। उन गुजरे हुए साथियों की याद में, जिन्होंने क्रान्ति के लिए निर्भीक हो कर अपने प्राण न्योछावर किये, सभी साथियों ने खड़े होकर दो मिनट का मौन धारण किया। पार्टी कमेटियों, पीएलजीए, सांस्कृतिक मोर्चों, जन संगठनों/संयुक्त मोर्चों, पार्टी, पत्रिकाओं, कम्प्यूटर कर्मी, बाल-संगठन, महिला संगठनों एवं अन्य प्रतिनिधियों ने शहीद साथियों के नामों के साथ बिजली की कड़कड़ाहट जैसे गगनभेदी नारों के बीच शहीद स्मारक पर पुष्प-चक्र समर्पित किये। शहीद स्मारक फूलों से लगभग ढक गया।

आखिरकार, एक विशाल जुलूस के साथ कम, जो कामरेड सीएम-केसी नगर कम्प्यून की राहों पर से घूमता हुआ, आसमान भेदते नारों और क्रान्तिकारी गीतों के मुक्तकंठ गायन के बीच कवायद-मैदान का कार्यक्रम संपन्न हो गया। यह सचमुच ही उत्सव का मौका था। खुले सत्र के समाप्त होने के बाद सभी प्रतिनिधि काँग्रेस-सभागार में दाखिल हुए।

जब सभी प्रतिनिधियों ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया, तो कामरेड किशन मंच पर आये, और अपना स्वागत भाषण दिया। अपने स्वागत भाषण में उन्होंने काँग्रेस स्थल तक पहुंचने के लिए तमाम प्रतिनिधियों ने जो भारी खतरों को मात दी, उसका उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि इसी प्रक्रिया में प्रतिनिधि और केन्द्रीय

कमेटी के सदस्य कामरेड चंद्रमौली और उनकी सहचरिणी का. करुणा गिरफ्तार हो गये, उन्हें भीषण यातनाएं दी गयीं और फिर उन्हें शहादत मिली। उन्होंने आगे जोड़ा कि यह काँग्रेस ऐतिहासिक परिघटना है और यह विचारधारागत, राजनीतिक, फौजी और सांगठनिक - तमाम मुद्दों पर चर्चा करेगी और क्रान्ति के सम्मुख उपस्थित इन तमाम समस्याओं को हल करने की प्रक्रिया में यह चर्चा होगी। उन्होंने सभी उपस्थितों से कार्य-सूची पर ध्यान देने का आग्रह किया और चर्चा-बहस और संश्लेषण की प्रक्रिया से संघर्ष को उन्हे स्तर पर ले जाने की कोशिश करने की गुजारिश की।

तत्पश्चात् कामरेड बिमल ने प्रत्येक प्रतिनिधि का नाम-नाम से परिचय दिया और जैसे-जैसे नाम पुकारे गये वे प्रतिनिधि एक-एक कर मंच पर आये। उनके कंधे पर प्रतिनिधि-बिल्ले महासचिव तथा कामरेड किशन ने चस्पां किये। तब जेलों में कैद साथियों-खासकर उन पांच केन्द्रीय कमेटी सदस्यों - कामरेड वरुण, विजय, तपस, चिंतन और शोभा - जो बंदी होने के कारण काँग्रेस में हाजिर नहीं हो पाये - के बारे में एक प्रस्ताव पढ़ा गया। इसके उपरांत पांच सदस्यीय सभापति मंडल का निर्वाचन हुआ। इसमें दो महिला कामरेड्स चुनी गयी। समूची पदनिवृत्त केन्द्रीय कमेटी ने परिचालन कमेटी (स्टीरिंग कमेटी) की भूमिका निभायी जिसमें पोलितब्यूरो सदस्यों ने नेतृत्व प्रदान किया।

अंत में, महासचिव कामरेड गणपति के उद्घाटन-भाषण के साथ उद्घाटन सत्र संपन्न हो गया। इस संबोधन में उन्होंने दोनों माओवादी प्रवाहों के दीर्घ इतिहास रेखांकित करते हुए इस काँग्रेस द्वारा हासिल किये जाने लायक प्रमुख कार्यों का उल्लेख किया। काँग्रेस के समक्ष उपस्थित बहसों की अहमियत अधारेखित करते हुए तथा जिस समर्पित भावना के साथ इसे संचालित करना है, पूर्व के नकारात्मक अनुभवों से जो सबक लेने हैं उनका बयान करते हुए अपना उद्घाटन-भाषण समाप्त किया (भाषण के संक्षिप्त सारांश के लिए बाक्स देखें)।

उद्घाटन सत्र के संपन्न हो जाने पर काँग्रेस ने अपना ध्यान काँग्रेस के सम्मुख उपस्थित

मसलों की ओर मोड़ दिया। इसने सर्वप्रथम पांच बुनियादी दस्तावेजों को अंतिम रूप देने हेतु इन्हें लिया और फिर अपना ध्यान राजनीतिक सांगठनिक समीक्षा के रूप में प्रस्तुत पिछले व्यवहार की पडताल पर केन्द्रित किया।

दस्तावेजों को अंतिम रूप

चर्चा के लिए लिया गया पहला दस्तावेज मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद के चमकते लाल परचम को उन्ना लहराये शीर्षक वाला मसौदा दस्तावेज था। इसे कुछ चर्चा और कतिपय सुझाये गये संशोधनों को शामिल करते हुए पारित कर दिया गया। यह दस्तावेज गागर में सागर की तरह पार्टी की मा-ले-मा संबंधी समझ की व्याख्या करता है और इसे एक समग्र संपूर्ण मार्क्सवाद के अभिन्न रूप में देखता है जिसका पिछले क्रान्तिकारी आंदोलनों के जरिये निरंतर विकास होता रहा है (पेरिस कम्यून, रूसी क्रान्ति, चीनी क्रान्ति तथा महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्तियों के जरिये) तथा खास कर हमारे महान शिक्षकगण मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन, स्टालीन एवं माओ द्वारा जिसे विकसित किया गया है। यह मा-ले-मा एक विज्ञान के तौर पर देखता है जो किसी भी दूसरे विज्ञान ही की तरह भविष्य में भी विकसित होने वाला है।

चर्चा के लिए लिया जाने वाला अगला दस्तावेज पार्टी कार्यक्रम का प्रारूप था। काँग्रेस में इस पर काफी गहन और विस्तारपूर्वक बहस हुई। प्रतिनिधियों ने एक मुक्त और बेबाक वातावरण में इस बहस में हिस्सा लिया। राज्य अधिवेशनों द्वारा प्रेषित ढेरों संशोधनों के समूचे समूह एवं अन्य हिस्सों पर भी ब्यौरेवार चर्चा हुई। काँग्रेस ने भारत के अर्द्ध-सामंती (semi-feudal) समाज की अपनी ही विशेषताओं की यों पहचान की कि यह ब्राह्मणवादी विचारधारा और उत्पीड़नकारी एवं भेदभावकारी जाति व्यवस्था के साथ गहराई से गुंथी है और एकमत से यह संकल्प पारित कर दिया। इसने दलितों के उत्पीड़न उनके खिलाफ भेदभाव पूर्ण आचरण के चरित्र की प्रदीर्घ चर्चा की और इससे जूझने के उपायों

की भी चर्चा की। इसी के अनुरूप पार्टी कार्यक्रम के प्रारूप में जरूरी नये हिस्सों को सम्मिलित करते हुए आवश्यक परिवर्तनों को भी स्वीकारा गया। इन्हीं बदलावों के आधार पर अन्य दस्तावेजों में भी संशोधन प्रस्तुत किये गये। इसके अतिरिक्त भारतीय समाज एवं राज्य के चरित्र, भारत में कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी आंदोलन एवं राष्ट्रीय मुक्ति संघर्षों के विभिन्न पहलुओं, भाकपा के नेतृत्व की भूमिका, भारतीय समाज का वर्ग विश्लेषण और इसमें मौजूद अंतर्विरोधों, समाज के विभिन्न वर्गों और घटकों के प्रति हमारा रुख तथा नवजनवादी राज्य के कार्य, आदि मसलों पर सविस्तार चर्चाओं के बाद ठोस और सुस्पष्ट निष्कर्ष निकाले गये, और इन निष्कर्षों को मसौदा दस्तावेज में शामिल कर लिया गया। इस तरह पार्टी कार्यक्रम



के मसौदे पर काँग्रेस एक अर्थपूर्ण बहस के जरिये विचारों एवं अभिमतों को केन्द्रीभूत कर पाने में सफल हुई।

पार्टी संविधान (नियमावली) के मसौदे को इसके बाद कुछ संशोधनों के साथ पारित कर दिया गया। तत्पश्चात् रणनीति और कार्यनीति (रणकौशल) दस्तावेज के मसौदे पर बड़ी बहस हुई। यह बहस कई दिनों तक चलती रही। यहां प्रमुख बहस निम्नांकित सवालों पर केन्द्रित थे : छापामार प्रांतों, छापामार आधारक्षेत्रों और मुक्तांचलों का रिश्ता एवं दोहरी सत्ता का सवाल; शासक वर्गीय गठजोड़ में दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग की भूमिका; पंजाब सरीखे विकसित देहाती इलाकों में आये बदलावों की प्रकृति और उनका विस्तार; भारत जैसे देश में क्या निर्वाचनों (चुनाव) का सवाल रणनीतिक महत्व का है

या कि सिर्फ एक और कार्यनीतिक प्रश्न है; अन्य महत्वपूर्ण सवालों के बीच ये बहस के अहम मुद्दे बन कर उभरे। इन सभी को बहुमत के आधार पर सुलझाया गया। साथ ही एक शहादत पा चुके साथी द्वारा रणनीति और कार्यनीति दस्तावेज के तीन वैकल्पिक अध्यायों को पेश किया गया। पर वाम संकीर्णतावादी अवस्थिति ले रही स्थापना मान कर काँग्रेस ने इन्हें खारिज कर दिया।

उपरोक्त बहस के मुद्दों पर निम्नलिखित निर्णय बहुमत के आधार पर लिए गये। दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग के सवाल पर यह तय किया गया कि भारतीय राज्य दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग और बड़े जमींदारों की संयुक्त तानाशाही है और दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग नेतृत्वकारी भूमिका नहीं निभाता है। काँग्रेस ने यह फैसला भी किया कि दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्ग और सामंतवाद - दोनों ही साम्राज्यवादी शोषण के मुख्य वाहक हैं। पंजाब में खेतिहार संबंधों के मसले पर काँग्रेस ने यह माना कि विकृत पूंजीवादी संबंधों के रूप में वहां बदलाव जरूर हुआ है, पर उसने कुल मिला कर

यही माना कि वहां मुख्य रूप से अर्द्ध-सामंती खेतिहार रिस्ते ही जारी हैं। भारत में चुनाव बहिष्कार के सवाल पर काँग्रेस ने फैसला किया कि यह एक रणनीतिक अहमियत रखने वाला मसला है। दोहरी सत्ता के सवाल पर इसने दोहराया कि किसी छापामार प्रांत के इलाके में दोहरी सत्ता नहीं रह सकती, क्योंकि वहां सत्ता के लिए विवाद है और यही प्रधान है। आधार क्षेत्रों (मुक्तांचलों) की स्थापना तक (शत्रु की सत्ता का) विध्वंस ही प्राथमिक कार्यभार होगा और जन सत्ता का निर्माण दायम होगा; आधार क्षेत्रों की स्थापना की प्रक्रिया में और उसे मजबूत करने (संगठित करने) के दौरान विध्वंस और निर्माण के बीच के रिस्ते में क्रमागत रूप से परिवर्तन होता है। गुरिल्ला आधार इलाके अपने स्वभाव में संक्रमणकालीन हैं और यह अपने

आप में कोई अलग, विशेष अवस्था (या प्रावस्था) नहीं है।

काँग्रेस ने जाति व्यवस्था, दलित उत्पीड़न तथा ब्राह्मणवादी विचारधारा एवं उनको मिटाने के लिए संघर्ष के सवालों पर कई संशोधनों को शामिल करने में सहमति दी, जिनका उत्स पार्टी कार्यक्रम में शामिल कर लिये गये संशोधनों में है। असंगठित क्षेत्र के मजदूरों के बीच काम करने से संबंधित संशोधनों को भी अंतर्भूत कर लिया गया। गंभीर बहस/चर्चाओं के आधार पर शामिल किये गये इन महत्वपूर्ण संशोधनों तथा कई अन्य संशोधनों को शामिल करने के पश्चात् जिन पर चर्चा नहीं हुई, रणनीति और कार्यनीति दस्तावेज और भी समृद्ध स्वरूप में अंततः पारित कर दिया गया।

अंत में काँग्रेस ने अपना ध्यान मसौदा राजनीतिक प्रस्ताव की तरफ फेर/चूँकि यह मसौदा दस्तावेज दो साल पहले तैयार किया गया था और तब से अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू परिस्थितियों में काफी कुछ विकास हुआ है, अतः इसे अध्ययन कर लेने पर सहमति हुई और प्रतिनिधियों ने सुझाव पेश किये। तीन मतभेदों में से एक, अर्थात् 'युग के सवाल पर' को सीधे मतदान के लिए रखा गया। ताकि समय बचाया जा सके, क्योंकि इस पर निचले अधिवेशनों में गहराई से बहस हो चुकी थी। संशोधनों को खारिज कर दिया गया तथा मसौदे में दी गयी परिभाषा को स्वीकृत किया गया कि यह साम्राज्यवाद और सर्वहारा क्रान्तियों का युग है। इस सत्र में अंतर्राष्ट्रीय रिश्तों के सवाल पर भी चर्चा हुई, खासकर क्रान्तिकारी अंतर्राष्ट्रीय आंदोलन (रिम) से संबंधों के सवाल पर। इस मुद्दे पर विस्तृत चर्चाओं के बाद, प्रथम केन्द्रीय कमेटी की बैठक में पारित संकल्प के आलोक में, काँग्रेस ने फैसला किया कि दूसरी केन्द्रीय कमेटी (तदर्थ) की बैठक ने जो संकल्प पारित किया था, वही प्रभावी बना रहेगा। जैसा उस संकल्प में साफ साफ कहा गया था: "हम 'रिम' को आज की दुनिया में एक सकारात्मक क्रान्तिकारी शक्ति और माओवादी केन्द्र हैं 'रिम' द्वारा शुरू की गयी बहस जब तक अपने अंजाम तक नहीं पहुँच जाती है, हमें 'को-रिम' तथा रिम के विभिन्न सहभागियों संगठनों से द्विपक्षीय संबंध जारी रखना ही होगा तथा साथ ही हम दुनिया की विभिन्न सच्ची माओवादी शक्तियों

के बीच बहुपक्षीय बैठकों को बढ़ावा देंगे।" काँग्रेस ने इसी संकल्प के साथ आगे बढ़ने एवं अंतर्राष्ट्रीय कार्य को पूरा करने के उद्देश्य से सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयवादी नजरिये के साथ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर 'रिम' द्वारा संचालित विचारधारात्मक-सैद्धांतिक संघर्ष में हिस्सा लेने का फैसला किया और उस तरह एकता-संघर्ष-एकता की बुनियाद पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर माओवादी शक्तियों के ध्रुवीकरण का मार्ग प्रशस्त करें, यह फैसला किया।

राजनीतिक प्रस्ताव के पारित किये जाने के बाद नव-स्थापित पार्टी के बुनियादी दस्तावेजों को अंतिमरूप देने का कार्य पूरा हो गया जिन को आधार मान कर अब नयी पार्टी अपने कार्यकलाप चलायेगी।

काँग्रेस से पारित संकल्प

सबसे पहले और सबसे अहम काँग्रेस द्वारा पारित वे संकल्प हैं जिन्हें क्रान्ति के तीन जादुई हथियारों - पार्टी, जन-सेना और संयुक्तमोर्चा - से संबद्ध कह सकते हैं।

पार्टी के सवाल पर, देश की बुनियादी जनता के बीच पार्टी संगठन को और भी गहरे निर्माण करने का संकल्प काँग्रेस ने किया। उसने पार्टी काडर को विचारधारा और राजनीतिक स्तर पर प्रशिक्षित करने तथा उन्हें सांगठनिक और नेतृत्व क्षमताओं/कौशलों से लैस करने की जरूरत पर जोर दिया। उसने मजदूर वर्ग तथा महिलाओं सहित बुनियादी वर्गों से कामरेडों को पदोन्नत करने की जरूरत को सामने रखा। उसने पार्टी की बोल्शेविकीकरण की लगातार जरूरत एवं लेनिन की शैली में पार्टी निर्माण की जरूरत को दोहराया। उसने पार्टी से देश भर में पार्टी सदस्यता की कसौटी (मानक) को न घटाते हुए ही भर्ती अभियान तीव्र करने का आह्वान किया।

इसके बाद जनता की फौज - पीएलजीए - पर प्रस्ताव पारित किया गया। काँग्रेस द्वारा निर्धारित केन्द्रीय कार्य हासिल करने के लिए पीएलजीए पर पारित किये गये संकल्प में उच्चतर फारमेशनों का निर्माण करने तथा जनमिलिशिया का व्यापकतम संभव जालतंत्र स्थापित करने का आह्वान किया गया। उसने पीएलजीए को बेहतर हथियारों से सुसज्जित करने और मिलिशिया को हथियारबंद करने का भी आह्वान किया।

उसने नौ गुरिल्ला प्रांतों तथा चार लाल प्रतिरोध इलाकों में युद्ध को तेज करने तथा नये इलाकों में भी लड़ाई विस्तृत करने की अपील की। उसने रिपोर्ट दिया कि पिछले 2 वर्षों में - एकता के बाद - पीएलजीए ने (बड़े, मध्यम और छोटे) कुल 130 से ज्यादा फौजी कार्रवाइयां की जिनमें 485 हथियार जब्त किये गये तथा 315 दुश्मनों का सफाया किया गया। क्रान्तिकारियों और जनता के बलों के खिलाफ दुश्मन के बढ़ते हमलों की उसने तीव्र भर्त्सना की और खास कर सलवा जुडुम के नृशंस अभियान का और ज्यादा धिक्कार किया। उसने अल्पतीव्रता वाले संघर्ष (एल आई सी) के भारतीय शासक वर्गों के उन तरीकों का जवाब देने का शपथ उसने किया जिन्हें इसके बारे में साम्राज्यवादियों, खास कर अमेरिकी आकाओं का समर्थन /दिशानिर्देश मिल रहे हैं। अंत में उसने दंडकारण्य और बिहार-झारखण्ड इलाकों को मुक्तांचलों में परिवर्तित करने का आह्वान किया।

संयुक्त मोर्चा और जनसंगठनों के निर्माण के सवाल पर काँग्रेस ने अपने संकल्प पर गंभीर ध्यान दिया। उसने "साम्राज्यवाद/सामंतवाद/दलाल नौकरशाह पूंजीपति वर्गों के विरोध में गोलबंद हो जाने की चेतना प्राप्त करने में जनता को सक्षम करने वाले शक्तिशाली जन-संगठनों का गठन करने और जनयुद्ध में भी हिस्सा लेने की चेतना उनमें जागृत करने पर अत्यधिक ध्यान देने" का आह्वान किया। उसने ताकतवर जनसंगठन बनाने का आह्वान किया और महज जन-समर्थन और जन-आधार के बीच अंतर को रेखांकित किया एवं जन-आधार मजबूत करने की पुकार लगायी। उसने आगे जोड़ा : "सशक्त संगठनों में संगठित एवं राजनीतिक तौर पर शिक्षित जन-सामान्य ताकि उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित हो ही सच्चे क्रान्तिकारी लाल गढ़ के दौर पर काम कर सकते हैं। एक बलशाली शक्ति के तौर पर संगठित जनता ही जन-संग्राम में भारतीय राज्य सरीखी बड़ी ताकत जिसे साम्राज्यवाद का समर्थन हासिल है" का असरदार रूप से जवाब दे सकती है।

संयुक्त मोर्चा गठित करने के सवाल पर संकल्प ने इस बात पर जोर दिया कि साम्राज्यवाद-विरोध, सामंतवाद विरोध की बुनियाद पर चार वर्गों की एका (गठबंधन) जब तक निर्मित नहीं की जाये, तब तक नव जनवादी क्रान्ति में देश

की व्यापक जनता को गोलबंद करना मुमकिन नहीं। इन में राजनीतिक संयुक्त मोर्चा (एस यू एफ) जो नयी सत्ता के अवयवों की स्थापना के साथ सशस्त्र-संग्राम के इलाकों में उभर रहे हैं और इनके आगे कूच से और आधारक्षेत्रों की स्थापना से ये आगे और भी दृढ़ीभूत (समेकित) होंगे। इसके मानार्थ संकल्प ने व्यापक कार्यनीतिक संयुक्त मोर्चा टी यू एफ के निर्माण पर जोर दिया जो विभिन्न स्तरों पर गठित किये जायेंगे और एस यू एफ के निर्माण की प्रक्रिया के अंग के तौर पर जिन्हें देखना होगा। उसने कहा कि आज माओवादी शिविर के भीतर जो हैं उनके अतिरिक्त व्यवस्था से पूरी तरह या उसके पहलुओं से असंतुष्ट करोड़ों लोग हैं जो इस (व्यवस्था) का विकल्प खोज रहे हैं। उसने कहा कि राज्य और अखिल भारतीय, दोनों स्तरों पर जनता के हर तबके में जन संगठनों के निर्माण - की प्रक्रिया संयुक्त मोर्चा - का र्वाइयाँ सफलता के साथ कर पाने के लिए महत्वपूर्ण पहलू है। संकल्प ने

समूची पार्टी से आह्वान किया कि हथियारबंद संघर्ष आगे बढ़ाने एवं एस यू एफ का निर्माण करने के दौरान ही जनता के हर जारी संघर्ष में प्रभावी तरीके से हस्ताक्षेप करे, जैसे खास कर खनिज-खान की परियोजनाओं, एस ई जेड्स, नदियों पर बांधों और शहरी विकास आदि के कारण बेदखल किये जा रहे लोगों की समस्या, आत्महत्याओं और कर्ज के खिलाफ किसानों और गुड़गाव में दृष्टिगत हुई मजदूरों के उभार, खैरलांजी हत्याओं के खिलाफ फूट पड़ी प्रतिक्रियाओं में व्यक्त दलित विक्षोभ, दिल्ली में व्यापारियों का उद्रेक आदि के अवसरों पर दमनकारी उत्पीड़नकारी भारतीय राज्य से अपनी मुक्ति के लिए संघर्षरत उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं के

साथ एकता कायम करने का भी उसने आह्वान किया।

इनके अलावा काँग्रेस ने कई और मसलों पर प्रस्ताव पारित किये, जैसे मृत्युदंड के खिलाफ, हिंदू फासिवादी के खिलाफ, एस ई जेड्स (विशेष आर्थिक क्षेत्र) के विरोध में बेदखली/विस्थापन के सभी कारणों के विरोध में, दलित-उत्पीड़न और खैरलांजी हत्याओं के खिलाफ, किसानों की आत्महत्याओं और कृषिसंकट के विषय पर एवं महिलाओं के सभी प्रकार के उत्पीड़न के खिलाफ। उसने बंदियों (कैदियों) के संघर्ष के समर्थन में तथा उनके अधिकारों के पक्ष में भी



प्रस्ताव पारित किया। इसके अलावा उसने भारत में उत्पीड़ित राष्ट्रीयताओं, खासकर कश्मीर तथा उत्तर-पूर्व की राष्ट्रीयताओं के संघर्षों के समर्थन में भी प्रस्ताव पारित किया। अंततः उसने दुनिया की जनता के साम्राज्यवाद के, खास कर अमेरिकी साम्राज्यवाद के विरोध में जारी संघर्षों का समर्थन करते हुए प्रस्ताव पारित किया; इराक, अफगानिस्तान, फलस्तीन, लेबनान और अन्य सभी संघर्षरत जनता को पूरा समर्थन जाहिर किया जो अमेरिकी साम्राज्यवाद और उसके गुणों के जैकबूटों तले कुचले जा रहे हैं। इस प्रस्ताव ने साम्राज्यवादी देशों में साम्राज्यवादी भूमंडलीकरण युद्ध एवं नस्ली भेदभाव, जैसे फौज में देखा गया, की विरोध में आंदोलनों के विशाल उभार

के प्रति गहरी एकजुटता व्यक्त की। अंत में उसने दुनिया भर में सभी माओवादी पार्टियों को गहरी एकता बनाने और उन जारी संघर्षों की रहनुमाई करने का आह्वान करते हुए प्रस्ताव को समाप्त किया।

पिछले व्यवहार की समीक्षा

शक की कोई गुंजाइश नहीं कि पार्टी के पिछले व्यवहार की समीक्षा करने वाले सत्र में सबसे ज्यादा वक्त लगा और यह स्वाभाविक ही था, और इसी में सबसे ज्यादा जीवन्त चर्चाएं हुईं क्यों कि यह आंदोलन के ठोस मूल्यांकन से संबद्ध था। काँग्रेस ने इनका विश्लेषण मा-

ले-मा तथा पार्टी की बुनियादी राजनीतिक दिशा के आलोक में करने का प्रयास किया।

सर्वप्रथम दोनों पार्टियों के साढ़े-तीन दशक दीर्घ इतिहास का सारांश संक्षेप में निकाला गया। पीपुल्सवार का सन 2001 में संपन्न काँग्रेस तक तथा एम सी सी आई का विलय होने तक का। इन पर कुछ चर्चा हुई तथा कुछ संशोधन

भी प्रस्तुत किये गये, पर चूंकि - ये पूर्व पार्टीयों के पिछले अधिवेशनों में निकाले गये निष्कर्षों के सारांश भर थे, इसलिए यहां चर्चाएं सिमित हुईं। मुख्य चर्चा 2001 के बाद - काँग्रेसोत्तर पीपुल्सवार पार्टी के व्यवहार पर - सितंबर 2004 तक के व्यवहार - तथा विलयोत्तर पार्टी के पिछले दो वर्षों के व्यवहार पर ही हुई।

चर्चा का मुख्य केंद्र पार्टी द्वारा निर्धारित कार्यों, खासकर, आधारक्षेत्र स्थापित करने की दिशा में जन-संग्राम को बढ़ाने के केन्द्रीय कर्तव्य को पूरा करने के मामले में हम किस सीमा तक सक्षम रहे, इस पहलू के इर्द-गिर्द स्थित था। यहां उसने व्यापकतम राज्य आतंक के बावजूद

दंडकारण्य और बिहार-झारखण्ड के दो मुख्य इलाकों में आगे बढ़ने की पार्टी की काबिलियत का मूल्यांकन किया।

दंडकारण्य में, हालांकि राज्य के बलों ने : सब जला दो - सब लूट लो - सभी की हत्या कर दो - सलवा जुडुम के परचम तले - यह नीति अपनायी, पार्टी यहां जन-संहारक बलों पर प्रभावी तौर पर पलटवार करने और उन्हें रक्षात्मकस्थिति में धकेल देने में कामयाबी पायी। विशाल मिलिशिया के रूप में यहां की जनता को असरदार ढंग से व्यापक पैमाने पर युद्ध में हिस्सा लेने के लिए गोलबंद किया जा सका है और इस तरह दुश्मन के घेरने और कुचलने के अभियान की काट की जा सकी है।

बिहार-झारखण्ड में भी सेंड्रां और अर्धसैनिक बलों का पार्टी ने प्रभावी प्रतिकार किया और आंदोलन को विस्तृत इलाकों में फैला दिया। झारखण्ड की सीमा से लगे छत्तीसगढ़ के इलाके में दुश्मन ने घटिया आंध्रप्रदेश की शैली में हत्याएं शुरू की जिसका उद्देश्य इलाके में अंकुरित हो रहे आरंभिक स्वरूप के आंदोलन को खत्म कर देना था, पर फिर भी आंदोलन टिका रह पाया। सशस्त्र संघर्ष असरदार ढंग से उड़ीसा में और पश्चिम बंगाल तक में फैल गया है जहां सीपीएम के सामाजिक-फासिस्ट गुंडों और उनके पुलिस बलों का सामना करना पड़ रहा है।

उसने चिंता के साथ आंध्रप्रदेश में आंदोलन को लगे आघात को गणना में लिया जहां राज्य-आतंक अभूतपूर्व अनुपात में जा पहुंचा है। उसने आंदोलन की कमजोरियों को सुनिश्चित रूप से चिह्नित किया, आघात के कारणों की सटीक पहचान की और इसके निवारण के लिए एवं आंदोलन को और प्रभावी तरीके से आगे ले जाने के लिए जरूरी तरीके तलाशे। उसने दर्ज किया कि यद्यपि आंध्रप्रदेश में आंदोलन ने भारी नुकसान झेला है, जनता फिर भी पार्टी का समर्थन करती आ रही है, और यही जन-समर्थन है जिसे एक बार फिर से एक जबरदस्त ताकत में संगठित करना होगा।

आंध्रप्रदेश सरकार के साथ बातचीत के मसले पर सुदीर्घ चर्चा हुई और बहुमत के आधार पर यह महसूस किया गया कि संबंधित शक्तियों की सापेक्ष ताकतों को देखते हुए, उन हालातों

में बातचीत के लिए जाना वरीय नहीं था।

उसने शहरी इलाकों में काम सहित अन्य राज्यों के आंदोलन का भी विश्लेषण किया। यह शिद्दत से महसूस किया गया कि इन इलाकों में, जो अपेक्षाकृत रूप से अब भी कमजोर हैं, आगे बढ़ने की बहुत जरूरत है। शहरी काम के महत्व पर भी चर्चा की गयी और इसे विकसित करने के तरीकों पर विचार किया गया। इसके अलावा आ चुके बदलावों के आलोक में तत्काल एक शहरी नीति को अंतिम रूप देने का फैसला किया गया। शहरी सर्वहारा को एक महत्वपूर्ण और क्रान्ति की अगुआ शक्ति के तौर पर पहचाना गया जिस पर कहीं अधिक ध्यान देने की जरूरत है।

उसने सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता के क्षेत्र में अपने काम का भी मूल्यांकन किया और दुनिया की सच्ची माओवादी शक्तियों के साथ और गहरा गठबंधन स्थापित करने का संकल्प लिया। नेपाल के माओवादी आंदोलन में आयी नयी रूझानों के संदर्भ में उसने उनके साथ सर्वहारा अंतर्राष्ट्रीयता की भावना से उनके द्वारा चुने गये पथ रास्ते के बारे में चर्चाएं जारी रखने का फैसला किया और भा.क.पा. (माओवादी) की गहरी चिंताओं को व्यक्त करने का निर्णय लिया। उसने बढ़ते विश्वव्यापी साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलन, खासकर अमेरिकी साम्राज्यवाद और उसके गुणों के खिलाफ उभर रहे आंदोलन को समर्थन देने और उसका हिस्सा बनाने का भी फैसला किया।

निष्कर्ष

काँग्रेस की मुख्य कार्यसूची पूरी हो जाने के बाद पदमुक्त हो रही केन्द्रीय कमेटी ने एक संयुक्त और लिखित आत्म-आलोचना प्रतिनिधियों के समक्ष प्रस्तुत की। तब तमाम प्रतिनिधियों को केन्द्रीय कमेटी तथा उसके वैयक्तिक सदस्यों की आलोचना करने का निमंत्रण दिया गया। इसके बाद नयी केन्द्रीय कमेटी चुनने की प्रक्रिया शुरू हुई। एक नाम सूची (पैनल) पेश की गयी और सुझाव आमंत्रित किये गये। अंत में केन्द्रीय कमेटी का निर्वाचन हुआ जिसने इसके बाद कामरेड गणपति को पार्टी के महासचिव के तौर पर चुना। इसके बाद नयी केन्द्रीय कमेटी तथा सभी प्रतिनिधियों ने अपने आप को क्रान्ति और साम्यवाद को

समर्पित करते हुए सामूहिक रूप से प्रतिज्ञा ली।

सभापति-मंडल की ओर से कामरेड रमा ने अपने और काँग्रेस प्रतिनिधियों के कामकाज की समीक्षा पेश की जिस से उन्होंने भविष्य के लिए सबक निकाले। कामरेड किशन ने अपनी समापन-टिप्पणी प्रस्तुत की। इसके बाद महासचिव ने काँग्रेस की ऐतिहासिक उपलब्धियों और सुदीर्घ काँग्रेस प्रक्रिया से उभरी दिशा के अमल के महत्व को रेखांकित करते हुए एक संक्षिप्त भाषण दिया। बड़े उत्साह-उमंग और नारों के बीच काँग्रेस सफलता के साथ संपन्न हो गया।

काँग्रेस के कामकाज के पूरे दौर में प्रतिनिधियों द्वारा रची कविताओं का प्रचुर प्रवाह प्रवाहित होता रहा जिनमें से अधिकतर हिंदी और तेलुगु भाषाओं में काँग्रेस और इसके राजनीतिक महत्व पर थीं। कामरेड नर्मदा (डी.के.) की काँग्रेस स्थल पर बच्चों के बारे में रची गयी कविता विशेष तौर पर हिला कर रख देने वाली साबित हुई। इस अवसर के निमित्त गीत-प्रणयित-एवं प्रस्तुत किये गये। प्रतिनिधिगण द्वारा अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में गीत पेश किये गये। हर शाम, स्थानीय सांस्कृतिक दल ने आधे घंटे का गीत और नृत्य प्रस्तुत किया जिनमें से की इसी अवसर के लिए रचे गये थे। एक दीवार पत्रिका भी थी जिस पर कविताएं चर्चा की जाती और हाल की खबरें भी। शहीद नायकों के छायाचित्र सभागार तथा पत्रिका के फलक पर, चारों ओर दृश्य थे। कविताओं में भी वे थे और नारों में तो लगातार हिस्सा बने हुए थे। केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कामरेड बीके/नवीन (वास्तविक नाम चंद्रमौली) और उनकी सहगामिनी करुणा की काँग्रेस आने की राह पर गिरफ्तार होकर (और तीव्रतम बहशी यातनाओं के बाद उनकी) शहादत समूचे काँग्रेस के कार्यक्रम-सूची में लगातार प्रतिध्वनित होती रही।

अंत में सभी कार्यवाहियों की समाप्ति के पश्चात् ध्वजावरोहण (झंडा उतारने) का कार्यक्रम लिया गया। जब समूचा शिविर ध्यानमग्न हो कर खड़ा था, महासचिव ने हंसिया-हथौड़े से युक्त लाल झंडे को उतारा, जबकि अंतर्राष्ट्रीय गीत गाया जा रहा था। तब उन्होंने अपनी निष्कर्ष परक टिप्पणी भी प्रस्तुत की और काँग्रेस को एक विराट सफलता दिलाने के लिए सभी उपस्थितों को धन्यवाद



दिया। उन्होंने कहा कि अचंभित कर देने वाले प्रयास और उच्चस्तरीय अनुशासन के अभाव में काँग्रेस कभी इतनी सुगमता से, बिना किसी त्रुटि के संपन्न करना मुमकिन ही नहीं होता। सभी संबंधितों के उन्हे अनुशासन के कारण ही समूचे आयोजन की गोपनीयता बरकरार रखी जा सकी। उन्होंने इसके बाद सभी को उन नये दस्तावेजों के साथ युद्ध के मैदान में कूद पड़ने को कहा जिन्हें बस कुछ ही पहले पारित किया गया था, और क्रान्ति को आगे ले जाने का आह्वान किया।

इसके बाद कई नयी केन्द्रीय कमेटी के सदस्यों ने संक्षिप्त वक्तव्य रखे। कामरेड किशन ने कहा कि अब, जबकि काँग्रेस संपन्न हो गयी है, उसका केन्द्रीय निष्कर्ष है जन-संग्राम को उन्हे-और उन्हे आगे बढ़ाना। सभी कुछ युद्ध के ऐतराफ और युद्ध के लिए किया जाय। जहां मुक्तांचलों की स्थापना करनी है, वहां छापामार युद्ध को चलायमान युद्ध में विकसित करना होगा; इसी प्रक्रिया में पीएलजीए को पी एल ए में रूपांतरित करना होगा। उन्होंने कहा कि काँग्रेस ने तो सभी कारणीय कार्य हम सब के आगे रख दिये हैं; हमें उन्हें तत्परता और कर्मठता के साथ पूरे करने हैं। उन्होंने बड़ी तादाह में महिलाओं को जन-संग्राम

में खींच लाने के बारे में भी कहा।

इसके बाद सभापति मंडल से कामरेड सत्तेन्ना ने बुनियादी दस्तावेजों को पारित करने और काँग्रेस में सही दिशा के विकसित होने के महत्व के बारे में बात की। उन्होंने आगे जोड़ा कि सरकार की चौतरफ हमलों की पृष्ठभूमि में हम केवल युद्ध को तीव्र करने के जरिये ही और तीन जादूई शस्त्रों को प्रभावी तौर पर सम्भाल कर ही आगे बढ़ सकते हैं। उन्होंने गुरिल्ला क्षेत्रों के विस्तार और डीके एवं बिहार-झारखण्ड में आधार क्षेत्र (मुक्तांचल) स्थापित करने के फौरी कार्यों को अमल करने का आह्वान किया। अंत में सभापति मंडल की तरफ से उन्होंने काँग्रेस को एक विराट सफलता प्रदान करने में सहायक सभी को धन्यवाद दिया; वे जिन्होंने काँग्रेस की सफलता के लिए रात-दिन काम किया - पीएलजीए की इकाइयां, महिला साथी, सांस्कृतिक दस्ता, रसोई के साथी, साज-सज्जा की टीम, बालकों का दल, एवं सबसे महत्व के सुरक्षा कामरेड्स एवं इलाके की जनता - को धन्यवाद ज्ञापित किया।

तब डीके के कामरेड सोनू ने कहा कि दुश्मनों के खिलाफ मा-ले-मा तथा हमारे दस्तावेजों को हथियारों की तरह उठाना चाहिए। हर गांव को

एक एक जनता के अभेद्य दुर्ग में बदल देना है। उन्होंने कहा कि हमें जनता के साथ और भी गहराई से एकताबद्ध, एकीकृत हो जाना होगा और अधिक से अधिक शक्तियों को जन-संग्राम में खींच लाना होगा। जनता और जनमुक्ति छापामार सेना को हथियारों से लैस करने का वृहद कार्य भी हमारे सामने है। जनता सरकार के रूप में उभरी नयी सत्ता को हमें गहन और विकसित करना होगा और उन्हें और उन्हे धरातल तक विकसित-विस्तृत करना होगा। समूची पार्टी को अब खुद को दंडकारण्य और बिहार-झारखण्ड को मुक्तांचलों में विकसित करने के कार्य में झोंक देना होगा।

अंत में कामरेड सुनिर्मल, जो सभा का संचालन कर रहे थे, ने समूची पार्टी को एक विराट छापामार युद्ध पट्टी विकसित करने पर ध्यान केन्द्रित करने का आह्वान किया, ऐसी छापामार युद्ध पट्टी जो देश के बड़े हिस्सों को अपनी आगोश में ले लेसके। इसीके साथ काँग्रेस का समापन हुआ और सभी अपने अपने क्षेत्रों में जन-संग्राम का नेतृत्व करने के कार्यभार के साथ तिरोहित हुए।

कामरेड गणपति का उद्घाटन भाषण पृष्ठ 14 पर

रजिता – संकल्प का प्रतीक

राधा

(8 मार्च के अवसर पर हम महिला मारगम से प्राप्त श्रद्धांजलि पुनर्प्रकाशित कर रहे हैं जो मूल तेलगू से अनूदित हैसंपादक)

(रजिता एक महिला कार्यकर्ता तथा महिला चेतना व ए पी सी एम एस (आंध्र प्रदेश चैतन्य महिला समाख्या) की नेता थी। वह हमारी एक सबसे प्रिय साथी थी। संगठन में लंबे समय तक रहने के बाद उसने एक अलग तरीके से जीने या विशेष काम करने का फैसला किया। वह तत्कालीन सी पी आई (एम एल) (पीपुल्सवार) में शामिल हो गई, जो सन् 2004 में सी पी आई (माओवादी) में परिवर्तित हो गई, और 23 जुलाई 2006 को आंध्र प्रदेश पुलिस के साथ एक मुठभेड़ में मार डाली गई। राधा उसकी छोटी बहन है और महिला संगठन में कार्यरत है। हमने मुठभेड़ में बरते गए क्रूर तरीके की और मुठभेड़ में मारे गए 8 माओवादियों के शव तुरन्त न सोंपने को लेकर पुलिस की हठधर्मिता की कड़ी भर्त्सना की थी। हमने रजिता की याद में सभाएं कीं यद्यपि उसने एक भिन्न मार्ग चुना था किन्तु हमारे रास्ते चाहे जो भी रहे हों, हमारा आम लक्ष्य महिलाओं की मुक्ति था। हम उसकी बहन की यह श्रद्धांजलि भेज रहे हैं ताकि आप इसकी एक झलक पा सके कि हमारी रजिता किस किस की व्यक्ति व नेता थी। हम आपका ध्यान इस तथ्य की ओर भी दिलाना चाहते हैं कि हम आंध्र प्रदेश में राज्य आतंक के चलते ऐसी महिला नेताओं का नुकसान बर्दाश्त नहीं कर सकते। रजिता से पहले भी ऐसी कई महिला नेता थीं और आगे भी ऐसी कई होंगी जो हमसे छिन जाएंगी यदि हम अपना मुंह नहीं खोलते और अपनी आवाज बुलंद नहीं करते जैसा खुद रजिता ने कियाए पी सी एम एस)

रजिता 1974 में पालामुर (महबूबनगर जिले) के पलेम गॉव में पैदा हुई थी। दो बेटों के बाद वह प्रभावहम्मा व कृष्णैया की तीसरी संतान थी। यह एक सूखा प्रभावित जिला था और उनका परिवार एक निर्धन परिवार था। इस पर भी वह एक संयुक्त परिवार की लड़की थी। लिहाजा उसकी परवरिश बहुत सी बंदिशों में एक आज्ञाकारी लड़की के रूप में हुई। बचपन से ही वह एक जिम्मेदार तरीके से सोचा व काम किया करती थी। अधिकतर वे लोग टैडा अंबाली (एक प्रकार का सांभर) और जोवार रोटी खाया करते थे। चावल खाना एक विलासिता थी। यद्यपि उसके पास न तो खाने के लिए खाना था, न पैरों में चप्पल, पहनने के लिए बस फटे कपड़े थे और पढ़ने के लिए किताबें नहीं थीं। परंतु वह स्कूल नियमित रूप से जाया करती थी। जैसे ही वह स्कूल से लौटती, माँ के साथ घर के काम में बराबरी से हाथ बँटायी करती। जब वह छोटी ही थी, सिर्फ आठवीं कक्षा में, उसने एक छोटी किराने की दुकान खोल ली चूँकि वह अपने परिवार के बारे में एक जिम्मेदार तरीके से सोचा करती थी। कभी-कभार वह धान कूटने में माँ की मदद किया करती। इस तरह से वे चावल पकाया करते। परिवार का भार उठाने के साथ ही वह अपने छोटे भाई बहन की देखभाल किया करती। वह एक माँ की तरह उनकी पढ़ाई व भलाई का ध्यान रखती। इस प्रकार से उसने गॉव में दसवीं तक पढ़ाई की।

चूँकि माँ-बाप ने सोचा कि लड़की की उम्र हो गई है इसलिए उसकी शादी कर देनी चाहिए। पर वे इतने गरीब थे कि खाने के लिए ही नहीं जुटता था। इसलिए उन्होंने तय किया कि अभी वे उसका विवाह नहीं कर सकते और रोजी रोटी

की तलाश में हैदराबाद शहर में आ गए। गर्मियों की छुट्टियों के दौरान उसने एक मोमबत्ती फ़ैक्ट्री में काम किया और टंकण (टाइपिंग) सीखी। छुट्टियां खत्म होने पर उसने एक सरकारी कालेज में इण्टर में दाखिला ले लिया। तब भी वह सुबह तड़के उठ जाती, घरेलू काम-काज निपटाती और तब कालेज जाती। कालेज के पहले साल की छुट्टियों के बाद उसने सरुनगर से मलकपेट पैदल एक सिलाई केंद्र में जाकर सिलाई सीखी। उसे पता लगा कि मुफ्त आशुलिपि (शार्टहैण्ड) कोर्स होता है और वह वहाँ भी गई।

वह पढ़ाई के लिए सुबह 4 बजे उठ जाती। रोज पिताजी ताना देते – एक लड़की को पढ़ने की जरूरत क्या है? वह उन तानों की कभी परवाह नहीं करती थी। इस तरह से उसने इण्टर दूसरा साल भी पूरा कर लिया। छुट्टियों के दौरान उसे कम्प्यूटर और अंग्रेजी बोलना सीखने के मुफ्त पाठ्यक्रम पता चला और उसने जाकर दाखिला ले लिया। उन हालातों में जहां माँ-बाप अपनी बेटियों को शिक्षा नहीं दिला सकते उसने सरकारी स्कूल व कालेज में पढ़ाई की तथा जहां कहीं भी मुफ्त कुछ नई चीजें सीख सकती थी, वहाँ गई। उसने संकल्प से काम किया। स्वयं को शिक्षित करने के लिए उसने एक जंग लड़ी।

दूसरी ओर बचपन से ही उसने यौन उत्पीड़न झेला। यह संयुक्त परिवार में जीजा के हाथों, घर के सामने रहने वाले अपने से चार साल छोटे एक लड़के के हाथों, शहर में एक पड़ोसी के हाथों, बसों में व बस स्टॉपों में मनचलों के हाथों और इन सबको पीछे छोड़ते हुए अपने ही सबसे बड़े भाई के हाथों हुआ। वह समझ नहीं

पायी कि क्यों उसके साथ यह सब घट रहा है। वह मानती थी कि भगवान उसे सारी मुसीबतों से छुटकारा दिला देगा और वह सभी देवताओं की धार्मिक भाव से पूजा किया करती यह प्रार्थना करते हुए कि उसका भाई बदल जाए, कि उसका परिवार संपन्न हो जाए तथा उसके हालात सुधर जाएं। शुक्रवार को संतोषी माता शनिवार को शनि, सोमवार को शिव और बृहस्पतिवार को साईबाबा। इन सब वारों में वह सुबह 4 बजे उठा करती, अपना सर धोती और प्रार्थना करने मंदिर जाया करती। किंतु कुछ नहीं बदला। दरअसल हालात बद से बदतर हो गए।

इसी दौरान वह इंदिरा प्रियदर्शिनी कालेज में दाखिल हुई और 'महिला चेतना' के संपर्क में आई। यह उसके जीवन में एक बड़े बदलाव का बिंदु था। उसने जाना कि इन सब समस्याओं को झेलने वाली वह अकेली नहीं है, कि समाज के प्रत्येक महिला किसी न किसी समस्या का सामना कर रही और सरकार साम्राज्यवादी, अश्लील संस्कृति को बढ़ावा दे रही है जिससे इन समस्याओं में इजाफा हो रहा है। उसने समझा कि इनके खिलाफ लड़ना ही इनका समाधान है। महिला चेतना के प्रोत्साहन से उसे दृढ़ विश्वास हो गया कि कम से कम अस्थायी रूप से समस्या को सुलझाने के लिए लड़कियों को कराटे सीखना चाहिए और आत्मसम्मान के साथ समस्या से जूझना चाहिए। 'कैसे एक सयानी लड़की कराटे सीख सकती है? उसकी शादी ही नहीं होगी अगर वह कराटे सीखेगी' – इस प्रकार कराटे सीखने से रोकने के लिए उसने घर में दबाव बनाया गया। यही नहीं यह उसके लिए असहनीय था कि कराटे प्रशिक्षक भी अपनी छात्र

लड़कियों का यौन उत्पीड़न कर रहे थे और इससे लड़किया प्रशिक्षण छोड़ रही थीं। इसलिए उसे पक्का विश्वास भरोसा हो गया कि केवल महिला कोच को लड़कियों को प्रशिक्षण देना चाहिए यदि लड़किया को मुक्त रूप से सीखना है तथा उसने खुद को उस दिशा में विकसित करने की कोशिश की। वह एक कोच बन गई और स्कूल, कालेज व झुग्गी-बस्तियों में लड़कियों मुफ्त कराटे सिखाने लगी। उसने कम से कम दस लड़कियों को कोच बनाने के मकसद से काम किया। इस मकसद से वह लड़कियों को इकट्ठा करने के लिए साईकिल से कई झुग्गी-बस्तियों में गई। वह खूब साईकिल चलाया करती थी। वास्तव में उसका शरीर काफी कमजोर था। यद्यपि वह पैदाइश से ही एक कमजोर बच्ची थी इसलिए वह स्वास्थ्य के मामले में काफी सावधानी बरतती थी कि कहीं यह उसके कराटे सीखने में रुकावट न बन जाए। यद्यपि उसका परिवार शाकाहारी था परंतु संगठन में शामिल होने के बाद उसने अपनी आहार की आदतें बदली तथा अपना स्वास्थ्य सुधारने का प्रयास किया। वह सुबह-सुबह कच्चे अण्डे के साथ दूध लिया करती और नियमित रूप से पत्तेदार साग सब्जी का सेवन करने की कोशिश करती और अंकुरित व कच्चा अनाज खाया करती। मांस में शक्ति मिलती है लेकिन चूंकि वह मांसाहार का खर्च वहन नहीं कर सकती थी इसलिए सस्ते दामों पर हड्डियां खरीदकर सूप बनाया करती और इसे पिया करती। इस सबसे व बहुत सक्रिय व सजीव रहती। वह कभी बीमार नहीं पड़ी। उसका विश्वास था कि हम अगर स्वस्थ हैं तो अधिक काम कर सकते हैं।

रोजना घर में झगड़े हुआ करते क्योंकि वे रोज शादी के लिए नए-नए लड़के लाते और उसे कराटे बंद करने को दबाव डालते। संगठन में कार्य करते हुए उसमें यह समझदारी विकसित हुई कि विवाह दो दिलों का मेल है और दो विचारधाराओं का मेल है तथा इसका जाति, धर्म, दहेज या दौलत से कोई लेना-देना नहीं है। उसने दृढ़ता से एलान किया कि वह औरों की मर्जी से विवाह नहीं करेगी। उसने प्रस्तावित दूल्हों और उनके परिवारों के सामने बैठने से इंकार कर दिया। इसलिए अब घृणा के साथ-साथ मार-पिट्टाई भी होने लगी। इस समय तक रजिता पहले से ही एक प्राइवेट नर्सिंग होम में रिसेप्शनिस्ट के रूप में कार्य कर रही थी। झगड़े बढ़े और उसने यह एलान करने के बाद कि वह

स्वतंत्र रूप से रह सकती है, घर छोड़ दिया। उसकी बहन ने उसका अनुसरण किया। माता-पिता ने सोचा कि उनका यह कदम समाज में उनकी बेइज्जती कर देगा। उन्होंने सोचा कि संगठन ने ही उसे ऐसा जबरदस्त कदम उठाने की हिम्मत दी है। इसलिए वे पुलिस में गए और उसकी मदद से संगठन के कार्यालय में आए तथा हमला किया। उन्होंने पत्थर फेंके और खिड़कियों के शीशे तोड़ दिए। बहुत ही भद्दे ढंग से उन्होंने संगठन को गालियां दी। आखिर दोनों बहनों को प्रेस में घोषणा करनी पड़ी कि वे दोनों बालिग हैं और उन्हें स्वतंत्र रूप से जीने का अधिकार है। महिला चेतना ने इस विषय पर एक जन सभा आयोजित की 'महिलाओं का आत्मसम्मान से जीना क्या अपराध है?'

संगठन के संपर्क में आने के बाद कुछ समय के अंदर ही रजिता महिला चेतना की एक कार्यकर्ता के रूप में उभर गई थी और इसकी उपसचिव बन गई थी। 1995 से 2003 के दौरान वह संगठन की सभी गतिविधियों व संघर्षों में अग्रिम मोर्च पर रही। उसने उनमें नेतृत्व दिया। जुझारू ढंग से संघर्ष किया। उसने विरोधियों को आंदोलन के सामने झुका दिया। हम तमाम संघर्षों में इसे देख सकते हैं चाहे यह सभिसडियों (अनुदानों) को खत्म करने के खिलाफ संघर्ष हो, कल्याणकारी कार्यक्रमों के कार्यान्वयन के लिए संघर्ष हो अथवा बंगलौर में ही जाकर सौन्दर्य प्रतियोगिता के आयोजन के खिलाफ संघर्ष हो जिसमें एपी सी एम एस ने इसके खिलाफ आह्वान किया था और 'रास्ता रोको' के दौरान इसके कई कार्यकर्ता गिरफ्तार हुए थे। पुलिस, जिस तरीके से कार्यकर्ताओं ने खासकर रजिता ने इन गिरफ्तारियों का प्रतिरोध किया था, उससे सकते में आ गई थी और उसकी टिप्पणी थी कि "तुम लोग महिला नहीं हो, लगता है तुम लोगों ने एल टी टी ई (LTTE) से ट्रेनिंग ली है"। कार्यकर्ताओं को बाल पकड़ कर घसीटा गया और इतनी बुरी तरह पीटा गया कि शरीर नीला पड़ गया तथा खून बहने लगा। लेकिन इन चीजों से रजिता कभी डिगी नहीं। उल्टा, हर घटना से राज्य के विरुद्ध उसकी घृणा बढ़ी। उसे लंबे बाल रखना सुहाता था। किंतु बंगलौर में गिरफ्तारियों के बाद उसने सोचा कि उसके लंबे बालों से पुलिस को उसकी पिटाई में आसानी हुई और उसने इन्हें छोटा करा लिया।

जब संगठन स्कूल की इमारत की मांग के साथ बच्चों को लेकर कलैक्टर (डी एम) के

कार्यालय में गया तो उसने डी. एम. से सवाल किया कि क्या वह अपने बच्चों को ऐसे स्कूल में पढ़ा सकता है और उसे उस खंडहर को आकर देखने की चुनौती दी जिसे स्कूल नाम दिया गया था। संबंधित अधिकारी तत्काल निलंबित कर दिए गए। वह सभी लड़ाइयों में अग्रिम मोर्चे पर रही चाहे चन्द्रबाबू के महिला जन्मभूमि कार्यक्रम के ढोंग का भण्डाफोड़ करना हो या झुग्गी-बस्तियों में पानी की व्यवस्था के लिए लड़ाई हो।

सन् 2000 में बाढ़ ने हैदराबाद को जल मग्न कर दिया। बहुत सी झोपड़-पट्टियां डूब गईं और हजारों लोग बेघर हो गए। दो शहरों की बाढ़ पीड़ित कमेटी के संयोजन के रूप में उसने राहत अभियान में हिस्सा लिया और पीड़ितों को चावल, पैसे तथा कपड़ों के वितरण में हाथ बंटाय। सरकार एलान कर रही थी कि वह पीड़ितों को सहायता देगी। पर एम आर ओ (MRO) ने राहत कोष में गोलमाल किया जो फतेहनगर के शिवमंदिर के निकट रहने वाले झोपड़ पट्टी निवासियों तक पहुंचना था ताकि चूंकि वह जनता के प्रश्नों का सामना नहीं कर सकता था इसलिए पुलिस भेज दी। रजिता और छः अन्य जन संगठनों के कार्यकर्ताओं तथा झोपड़पट्टीवासियों को पुलिस से सवाल करने पर हिरासत में ले लिया गया।

उसे दो दिन तक पुलिस थाने में और फिर चार दिन तक जेल में रखा गया। अपनी गिरफ्तारी पर परेशान होने के बजाए

उसने पुलिस से मांग कर अन्य गिरफ्तार लोगों को जरूरी चीजें मुहैया कराने की कोशिश की। जब पुलिस ने फोटो खींचने की कोशिश की तो उसने यह कहते हुए प्रतिरोध किया कि वे कोई चोर-उच्चके नहीं हैं और पुलिस को पीछे हटना पड़ा। जब भी उसे कोर्ट ले जाया जाता था वह लगातार नारे लगाती जाती थी। वह कहा करती थी कि यदि जनता को हमारी गैर कानूनी गिरफ्तारी के बारे में अवगत कराना है तो हमें जहां कहीं भी मौका मिले अपनी आवाज बुलंद करनी चाहिए। पुलिस स्टेशन में बिताए गए दो दिनों में वह गाया करती और अपनी गैरकानूनी गिरफ्तारी पर नाटक, खेला करती (यद्यपि वह अभिनय में कुशल नहीं थी) इस प्रकार से वह स्वयं तो उत्साह से दमकती ही, दूसरों को भी उत्साह से भर देती। महिला कांस्टेबलों को इतनी हैरती होती कि वे कहती 'हमने इतने लोगों को गिरफ्तार किया है लेकिन ऐसा हमने

कोई नहीं देखा जो इतना जिंदादिल हो और जिसे अपनी गिरफ्तारी का रत्ती भर भी मलाल न हों। उनमें से किसी-किसी ने तो रजिता से अपनी परेशानियाँ साझा करना शुरू कर दिया।

यही अनुभव जेल में भी दोहराया गया। उसने अपने 4 दिनों के समय में जेल वासियों की परिस्थितियों को समझने की कोशिश की। वह सभी महिला कैदियों के पास जाती और उनकी समस्याएं व गिरफ्तारी का कारण पूछती। तभी जेल अधिकारियों ने गौधी जंयती पर कार्यक्रम आयोजित किया। उसने इसमें विरोध स्वरूप भाग नहीं लिया। जब वह मंच पर गई और इस बात का हवाला दिया कि कैसे सरकार ने बाढ़ पीड़ितों के लिए राहत की मांग करने पर जेल में ठूस दिया तथा यह बताया कि जब तक ऐसी सरकारें बरकरार रहेंगी, हमारी जिंदगियों में कोई बदलाव आना नामुमकिन है, तो बहुत से लोग रो पड़े। उन्होंने बाद में उसे बताया कि वे अपनी निजी परेशानियों को लेकर आए थे परंतु वह और उसके साथी तो लोगों के लिए आए थे। वे उनकी बड़े स्नेह से देखभाल करने लगे 4 दिन बाद जब वह जमानत पर रिहा हुई तो उन सभी ने यूं महसूस किया कि जैसे उनका कोई अपना बिछड़ रहा हो और बड़े उदास हो गए। इससे जाहिर होता है कि वह उनसे कितना घुलमिल गई थी। जब उसने उनसे विदा ली और कहा कि वह वापस आएगी तो वो बोले 'तुम इस निरे नर्क में क्यों लौटना चाहती हो, बस कहो कि तुम्हारा पल्ला छूटा,' रजिता ने जवाब दिया 'जो भी इंसाफ के लिए लड़ता है, यह सरकार उसे जेल में ठूसती है इसलिए जब तक ऐसी सरकार कायम रहेगी, हमारे जैसे लोगों को बराबर जेल आते रहना पड़ेगा'।

जब जेल के अनुभव के बारे में पूछा गया तो उसने कहा कि उसे कैदी महिलाओं की पीड़ा को जानने का पर्याप्त समय नहीं मिला और क्या ही अच्छा होता यदि उसे जेल में एक हफ्ता और बिताने को मिलता। यह थी रजिता आपके लिए। हर चीज को राजनीतिक रूप से समझने की कोशिश करने वाली।

वह कराटे सीखने और बाद में सुबह कराटे सिखाने जाया करती थी, एक कम्प्यूटर आपरेटर के रूप में काम किया तथा संगठन में अगुवा कार्यकर्ता के रूप में सक्रिय रही। वह एक मिनट भी गंवाना पसंद नहीं करती थी। कहा करती थी कि हमें सक्रिय रहना चाहिए और तेजी से आगे बढ़ना चाहिए और इस पर अमल किया। अगर वह कोई चीज तेजी से नहीं भी सीख पाती तो मायूस नहीं होती थी। सीखने के लिए लगन से जुझती। उसके हर पहलू में यह बात नजर आती थी। वह जीवट से काम करना पसंद करती थी। वह भारी वजन भी आसानी से उठा लिया करती थी।

ऐसी तमाम मिसालें मौजूद हैं। जब वह संगठन में कार्यकारिणी सदस्य बनी तो बैठकों की कार्यवाही लिखने में उससे बहुत गलतियाँ होती। बिना गलतियों के तेजी से लिखने के लिए उसने रेडियो से समाचार लिखने का अभ्यास किया। हालांकि उसके कई लेखों को महिला मारगम (प्रांत स्तरीय संगठन का मुखपत्र) में जगह नहीं मिली पर वह हताश नहीं हुई और लिखती रही। आखिरकार उसके दो लेख प्रकाशित हुए। यद्यपि उसे गाना नहीं आता था फिर भी वह कड़ा रियाज करती थी। रागों का रियाज करने के लिए वह अलस्सुबह उठ जाती थी। सांस्कृतिक कार्यशाला में हिस्सा लेने पर सिर्फ रजिता ही थी

जिसने सभी प्रतिभागियों से बेहतर रियाज किया और उम्दा गाना सीखा।

रजिता एक ऐसी इंसान थी कि कितने ही लोगों ने कितने ही तरीकों से उसे हतोत्साहित किया था उसके प्रयासों में अड़चन पैदा की लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने इन चीजों को अधिक महत्व नहीं दिया तथा उन्हें एक चुनौती के रूप में लिया। उसने किसी भी मसले को सतही ढंग से नहीं देखा बल्कि गहराई से विचार किया। यदि वह कुछ करने की ठानती तो इसके लिए आकाश-पाताल एक कर देती। वह विश्वास करती थी कि महिलाओं की मुक्ति सर्वहारा की मुक्ति के साथ ही संभव है। और इसे सशस्त्र संघर्ष के बूते पर ही हासिल किया जा सकता है। इसलिए सन 2003 में वह माओवादी पार्टी में शामिल हो गई और 23 जुलाई 2006 को वाई. राज शेखर रेड्डी की जालिम पुलिस के साथ एक झुठी मुठभेड़ में वीरगति को प्राप्त हुई। हमारी रजिता हमें एक बार फिर मार्क्स की उक्ति की याद दिलाती है कि संकल्प यदि कठिनाइयों को जीतने का हो तो दुनिया में कुछ भी असंभव नहीं है। उसने इस संकल्प को सजीव रूप दिया। दरअसल रजिता में शुरू में कोई योग्यता नहीं थी और उसकी परवरिश बड़ी पाबंदियों में हुई।

अपने संकल्प के बल पर हर चीज हासिल करके, परंपराओं की बेड़ियों तोड़कर अपने परिवार व समाज के खिलाफ संघर्ष करके उसने साबित किया कि दुनिया में कुछ भी मुश्किल या असंभव नहीं है। इस प्रकार वह हमारे अनुकरण करने के लिए एक आदर्श बन गई।

पृष्ठ 24 का शेष

उपलब्धियों के उपरांत भी गर्व के हल्के से निशान के बिना, वह आपके हृदय में बस सीधे बस जाया करता। क्रांतिकारी शलीनता का मूर्त रूप! नये से नये रंगरूट के लिए भी वह दोस्त और सखा, कामरेड था। कहीं दूर बैठे फैंसले ले रहे किसी सुदूर के नेता की छवि से कोसों दूर। और हर बात में खुद मिसाल बन कर वह किस तरह रहनुमाई करता।

अखबारों में छपी खबरों ने उसके जीवन की एक झलक पेश करने की कोशिश की। उसकी उपलब्धियों, उसके व्यक्तित्व की छवि दिखलाने की चेष्टा की। मेरी आकांक्षा रही कि मेरे पास उन सब रिपोर्टों का अनुवाद करने का वक्त रहता, काश मेरे कामरेडों के लिए मैं केवल यह दिखाने के लिए भी ऐसा कर पाता कि आंध्रप्रदेश के राजनीतिक परिवेश में हमारे जिन नेताओं ने अमिट छाप बनयी है, उनके विषय में मीडिया कैसे लिखती है। उनकी बुर्रुआ संलन्नताएं चाहे जो भी हों, ऐसे नेताओं ने जो सर्वोच्च त्याग किये हैं उसके आगे नतमस्तक हुए बिना वे नहीं रह पाते। जनता के प्रति उनका समर्पण जिस परिदृश्य में आपको सिर्फ भ्रष्टाचार, भाई-भतीजावाद, मतलबी स्वार्थपरता, जनता के बारे में बेहद अनादर और अवहेलना का भाव ही राजनीतिक नेताओं में नजर आता है, वहां उनकी निस्वार्थता उनके प्रति अनायास ही आदर का संचार करता है। जब वे देखते हैं कि विशाल जनता का भारी बहुमत आंदोलन के प्रति हमदर्द रखता है तो वे इससे अलग कुछ और रिपोर्ट भी कैसे करें भला!

जब मैं समाचार वाचिका का दःखी चेहरा देखता हूं या लगभग रूदनभरी अखबारी श्रद्धासिक्त रिपोर्टें पढ़ता हूं तो सोचता हूं वे क्या सोच रहे होंगे? मीडिया में अवश्य ही ऐसा एक हिस्सा तो जरूर होगा, जो सोचता होगा- 'आह, ये लोग सतर्कता क्यों नहीं बरतते? इस तरह वे क्यों पकड़े जा रहे हैं? वे इस बदनाम पुलिस के हाथों में क्यों आ जाते हैं जो उन्हें यूं यातनाएं देती है? जो उनके शरीर में गोलियां उतार देने से पहले दो बार सोचती तक नहीं है?

पूँजीखाता परिवर्तनीयता का विकराल होता खतरा

अमरीकी राष्ट्रपति जार्ज बुश के दौर के बाद ताबेदारी करते हुए भारतीय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने पूर्ण पूँजी खाता परिवर्तनीयता की जोरदार वकालत की। बुश के भारत दौरे में उसके साथ औद्योगिक कप्तानों (सी ई ओ) का पूरा दल-बल था। भारतीय दलालों और लंपट नेताओं के साथ 24 क्षेत्रों में पूँजीनिवेश का एक अस्पष्ट सा वादा किया गया। अनुमान है कि ठीक उसी वक्त पूर्ण खाता परिवर्तनीयता का खतरनाक नुस्खा पेश किया गया। जार्ज बुश अभी अपने देश पहुँचा ही था कि भूमण्डलीकरण के हमारे पैरोकारों ने अमरीकी नुस्खे को आजमाने की गुहार लगानी शुरू कर दी। ये गुहारें अमरीकी डालर को और अधिक फायदा पहुँचाने के लिए थीं, उस साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण को आगे बढ़ाने के लिए थीं, जिसका अगुवा अमेरिका है। यह नई नीति विदेशी निवेशकों को, बुनियादी रूप से सट्टेबाजों को संकट के समय में कभी भी अपना कारोबार समेटने की छूट दे देगी और आसानी से उनकी रकम को डालर में बदल कर भारतीय अर्थव्यवस्था को अंधी गली में धकेल देगी।

नब्बे के दशक की शुरूआत में जब मनमोहन सिंह वित्तमंत्री बने तो भारत नेक साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण का कार्यक्रम अपनाया शुरू किया जिसका अर्थ था कि विदेशी पूँजी के लिए घरेलू बाजार बिना किसी रूकावट के पूरी तरह खोल दिया जाए। अब इस साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण के समर्थकों को समझ में आया कि निजीकरण व उदारीकरण के बावजूद इस प्रक्रिया में कुछ कमियाँ रह गई हैं। ये कमियाँ भारतीय मुद्रा-रूप के पूर्ण परिवर्तनीय न होने के कारण पैदा होती हैं। इसलिए उनकी मांग है कि हम रूप के बिना किसी बाधा के पूर्ण रूप से परिवर्तनीय बनाएं। इसका सीदा सा अर्थ है कि घरेलू व अनिवासी भारतीयों के द्वारा भारत से पूँजी के आवागमन पर बंदिश नहीं होगी चूँकि अमरीकी डालर दुनिया की सबसे ताकतवर व चलन वाली मुद्रा है इसलिए यह नया विनाशकारी कदम भारत में रूप के बदले में डालर के खुले इस्तेमाल पर कोई रूकावट नहीं रहने देगा। भारतीय अर्थव्यवस्था पर अमरीकी आधिपत्य और भी ज्यादा बढ़ाना साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण का ही एक अंग है। यहां यह जिक्र करना उचित होगा कि पूर्व विदेश मंत्री यशवंत सिन्हा, जिन्होंने स्वयं भारत पर अमरीकी प्रभाव व नियंत्रण की अभूतपूर्व बढ़ोत्तरी में मुख्य भूमिका निभायी, अब भारत को “अमरीका का

मुविकल राज्य” कहते हैं। और एक मुविकल राज्य की हैसियत से, व्यापक गरीब भारतीय जनता को डालर के रहमोकरम पर छोड़कर भारत ने डालर की ताकत को बढ़ाने के लिए पूँजी खाता परिवर्तनीयता की गारण्टी की है। यह उल्लेखनीय है कि नब्बे के दशक के शुरू में मनमोहन सिंह के कार्यकाल में भी आर्थिक सुधारों के दौरान पूर्ण पूँजी खाता परिवर्तनीयता की कोई कोशिश नहीं की गई। मनमोहन अब हमें विश्वास दिलाएंगे कि ऐसे कदम से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश में खूब बढ़ोत्तरी होगी।

तारापोर कमेटी की सिफारिशें

साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण के दौर में नब्बे के दशक के मध्य में तारापोर की अध्यक्षता में बनी कमेटी ने पूँजी खाते की पूर्ण परिवर्तनीयता अर्थात् दूसरे शब्दों में रूप के डालर के संदर्भ में बेरोकटोक विनिमय योग्य बनाने की सिफारिश की थी। लेकिन तभी दक्षिण एशिया में एक अभूतपूर्व संकट टूट पड़ा जिससे उन देशों की अर्थव्यवस्थाओं के दरवाजे पूर्ण पूँजी खाता परिवर्तनीयता के जरिए पूरी तरह से खुल जाने से विदेशी पूँजी उन देशों से फुर्र से उड़ गई। इस तबाही के नतीजों को देखकर भारत सरकार ने तारापोर कमेटी की सिफारिशों को उस समय ताक पर रख दिया। और अब बुश के भारत दौरे के साथ ही मौजूद भारतीय प्रधानमंत्री भारतीय रूप व डालर को परस्पर पूर्ण परिवर्तनीय बनाने की स्पष्ट हरी झण्डी देकर अमरीका को खुश करने पर आमादा हो गये। यहां यह याद रखना चाहिए कि अब तक भारत व अमेरिका के बीच एक रणनीतिक साझेदारी कायम हो चुकी है जिसमें भारत को एक सहायक (जूनियर) की भूमिका निभानी है। भारत की विदेश नीति पर अमेरिकी दादागिरी कभी इतने अधिक ठोस रूप से स्पष्ट नहीं रही जितनी अब है। भारत की आर्थिक अधीनता भारत-अमेरिका रक्षा संबंध से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध

है जो यह कहते हुए स्थापित किया गया कि “अमेरिका व भारत एक नए युग में प्रवेश कर गए हैं”। तारापोर कमेटी की सिफारिशों की स्वीकृत दरअसल अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भारत पर डालर की शक्ति की स्वीकृति दरअसल अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भारत पर डालर की शक्ति की स्वीकृति है, जबकि अमरीका-भारत सैनिक गठबंधन का

परिणाम सैनिक क्षेत्र में भारत पर अमेरिकी आधिपत्य होगा।

विदेशी पूँजी के आगम की प्रकृति

भारत को वर्तमान व्यवस्था के संचालन के लिए न्यूनतम 600 करोड़ डालर की आवश्यकता है। उदारीकरण व निजीकरण के दौर में विदेशी पूँजी ने भारत पर हमला बोल दिया। साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया में प्रवेश के समय से स्वाभाविक रूप से देश में विदेशी पूँजी का आगमन तेजी से बढ़ गया। यह बात बिल्कुल स्पष्ट है कि विदेशी पूँजी बुनियादी रूप से सट्टा बाजार में छापी है। पिछले साल उत्पादक क्षेत्र में निवेशित विदेशी पूँजी 443 करोड़ डालर के समतुल्य थी। दूसरी ओर भारतीय रिजर्व बैंक में वर्तमान में संचित 4130 अरब डालर के विदेशी विनिमय के आरक्षित भंडार का 30 प्रतिशत अर्थात् 500 अरब डालर विदेशी संस्थागत निवेशकों का हिस्सा है। उसी प्रकार घरेलू कंपनियों द्वारा लिए गए बाह्य वाणिज्यिक ऋण (ई सी बी) भी सन् 2005-06 में तेजी से बढ़ कर 150 अरब डालर के करीब पहुँच गए हैं। अगर हम विदेशी पूँजी के आगमन (निवेश) के चरित्र पर एक नजर डालें तो नजारा बिल्कुल साफ हो जाएगा। अब तक भारत की 600 करोड़ डालर की विदेशी मुद्रा की जरूरत पूरी नहीं हो रही है लेकिन यदि सट्टा बाजार में पूँजी की आमद को जोड़ा जाए तो भारत में आने वाली विदेशी पूँजी की रकम पिछले साल 1500 करोड़ डालर थी। भारत का उत्पादक क्षेत्र सट्टा बाजार के बराबर विदेशी पूँजी को आकर्षित नहीं करता। बिना पूर्ण पूँजी खाता परिवर्तनीयता के भी विदेशी पूँजी के अंवार ने भारतीय सट्टा बाजार को पाट दिया। फिर भी प्रधानमंत्री ने जनता ने जनता को यह कहकर गुमराह करने की कोशिश की है कि पूर्ण पूँजी खाता परिवर्तनीयता की नई नीति से उत्पादक क्षेत्र में विदेशी पूँजी का निवेश बड़े पैमाने पर होगा। हमारी दलील यह नहीं है कि ऐसी पूँजी उत्पादन के क्षेत्र में जायज है क्योंकि यह भी भारतीय अर्थव्यवस्था पर साम्राज्यवादी फंदा कसती है। यहां जोर इस बात पर है कि विदेशी साम्राज्यवादी पूँजी अब आसानी से दखल रखती है और सट्टा पूँजी को ज्यादा पसंद करती है तथा सैन्सैक्स में उछाल की वजह सट्टा बाजार में लगी यह सट्टा पूँजी है और यह बात पूँजीवाद के संकट

की ओर इशारा करती है। भारतीय रिजर्व बैंक के मुताबिक, अस्थिर पूँजी प्रवाह (जिसमें बढ़ता हुआ पोर्टफोलियो निवेश और अल्पावधि ऋण शामिल हैं) का आरक्षित भण्डार से अनुपात जो मार्च 2004 में 36 प्रतिशत था, सितंबर 2005 में तेजी से बढ़कर 40.5 प्रतिशत हो गया। इसके उलट कुल प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) का हिस्सा कुल निजी पूँजी निवेश में 10 प्रतिशत था। दरअसल शेयर बाजार में चलायमान पूँजी का जबरदस्त निवेश हमारी अर्द्धओपनिवेशिक व अर्द्धसामंती अर्थव्यवस्था के लिए गंभीर चिंता का विषय है। चालू खाता घाटा, अस्थिर स्टाक (भण्डार) व जमीन जायदाज (रीयल स्टेट) व्यवसाय का सम्मिलित प्रभाव, सट्टेबाजी में बड़ी धनराशि का निवेश इत्यादि अर्थव्यवस्था को एक गंभीर संकट की तरफ धकेल चुके हैं जो सन् 1997-98 के दक्षिण पूर्वी एशियाई मुद्रा संकट की याद दिलाता है। परंपरागत रूप से सट्टा बाजार व इसके संचालन को बहुत कम महत्व दिया जाता था क्योंकि सट्टा पूँजी की अर्थव्यवस्था में उत्पादन व पुनरोत्पादन में कोई भूमिका नहीं थी। लेकिन भूमण्डलीकरण के चक्र ने इस पूँजी को जबरदस्त महत्व दिया और इस प्रकार अर्थव्यवस्था को इस पूँजी के रहमोकरम पर हमेशा के लिए रख दिया। वर्तमान संप्रग (यूपीए) सरकार जिसे माकपा का समर्थन है, ने हमेशा सट्टेबाजों की बहुत तरफदारी की है और यह इसके पहले अंतरिम बजट में लंबी अवधि की पूँजी आय पर कर के खात्मे के फैसले से एकदम स्पष्ट है। और पिछले दो वर्षों में कर मुक्त सट्टा आय का लालच सट्टेबाजों को भारत के पूँजी बाजारों में अरबों डालरों का संस्थागत निवेश करने की ओर ले गया। इस व्यापक निवेश से स्टाक मारकेट (शेयर बाजार) में जबरदस्त उछाल आया। अभूतपूर्व सैन्सैक्स उछाल कुछ नहीं बस एक हवाई परिघटना है और यह बुलबुला किसी भी दिन फट सकता है जिसका परिणाम होगा आम भारतीय मध्यवर्ग की पीठ पर अकल्पनीय बोझ। यह हास्यापद और साथ ही विचित्र है कि भारत में अरबपति अब नियमित रूप से, उत्पादक क्षेत्र में मुनाफों के आम निवेश के जरिए नहीं बल्कि सट्टेबाजी व करमुक्त पूँजी आय के जरिए पैदा हो रहे हैं। और यह भी कि बजट ने भी इंडियन म्यूच्युअल फण्ड्स को सट्टेबाजी से आय अर्जित करने के लिए प्रेरित किया है। पूर्ण पूँजी खाता परिवर्तनीयता की वर्तमान स्थिति का सट्टा बाजार के बारे में सरकार की विनाशकारी नीति से पूरा संबंध है।

भारत से पूँजी के बहिर्गमन का परिदृश्य

विदेशी प्रत्यक्ष निवेश के अगुआ भली-भाँति जानते हैं कि उत्पादन के क्षेत्र में भारतीय बाजार फैल नहीं रहा है। अभी तक विदेशी प्रत्यक्ष निवेश लगभग 400 करोड़ डालर सालाना पर ठहरा हुआ है। पिछले साल भारतीय अर्थव्यवस्था में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफ डी आई) 434 करोड़ डालर था। साम्राज्यवादी भूमण्डलीकरण के 16 वर्षों बाद भी उत्पादक क्षेत्र या अवरचना में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश से उपेक्षा के स्पष्ट संकेत मिलते हैं। इसका कारण इस कड़वी हकीकत में छिपा है कि देश की आधी से अधिक आबादी को आजीविका के पर्याप्त साधन ही सुलभ नहीं हैं। किसानों की लगातार आत्महत्याएं, बाजार में ठहराव, बेरोजगारों की विशाल संख्या इत्यादि, विलासिता की सामग्री के उत्पादन को छोड़कर, उत्पादन के क्षेत्र में निवेश के लिए विदेशी निवेशकों को कोई बल प्रदान नहीं करती। इसलिए अब अमरीकी आकाओं को खुश करने के लिए मुद्रा की परिवर्तनीयता (दरअसल डालर के साथ परिवर्तनीयता) पर लगे मामूली प्रतिबंधों को भी अलविदा कहा जा रहा है

नए निवेश के बजाए बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भारतीय व दलाल उद्योग के अधिग्रहण में तेजी की वर्तमान प्रवृत्ति उल्लेखनीय है। बेटाफार्म जैसे विदेशी करोड़पति पहले ही 27 करोड़ डालर में रेड्डी लैबोरेट्री को खरीद चुके हैं, सुजलौन इनर्जी 57 करोड़ डालर में अमरीकी कंपनी हैनहस ट्रांशमिशन द्वारा खरीद ली गई है। यह सिलसिला जारी है।

आजकल अमरीकी डालर की हालात खस्ता है। अंतर्राष्ट्रीय मानक मुद्रा के रूप में इसकी लगातार गिरावट एक स्थायी समस्या बन गई है। अमरीकी पूँजीपति, खासकर सट्टेबाज, विनिमय योग्य डालर की कम यात्रा के बदले में ही भारतीय रूपए में निवेश की बेहतर संभावनाएं चाहते हैं। वर्तमान खाते की पूर्ण परिवर्तनीयता का निर्णय भारतीय अर्थव्यवस्था में केवल डालर के और ज्यादा निवेश को बढ़ावा देगा।

यह खतरनाक रूप से अमरीका समर्थक निर्णय भारतीय अर्थव्यवस्था को घोर अनिश्चिता की स्थिति में धकेल देगा क्योंकि पूँजी के बाहर जाने की दशा में (घरेलू व अनिवासी दोनों तरह के निवेशकों द्वारा अपने धन के प्रत्यावर्तन से) अर्थव्यवस्था और भी ज्यादा डांवाडोल हो जाएगी। इतिहास दिखाता है कि जब अर्थव्यवस्था लड़खड़ायी तो स्थानीय निवासियों द्वारा पूँजी का ऐसा निर्यात किया गया

और इससे सत्तर व अस्सी के दशक में दक्षिण अमेरिका पर कर्ज का अंबार लद गया। ब्राजील पर अस्सी के दशक की शुरुआत में बेहताशा बाहरी कर्ज धनी निवासियों द्वारा बाहर ले जायी गई अनुमानित पूँजी के लगभग बराबर था। और कर्ज की अदायगी की कीमत तथा शर्तों के अनुपालन के लिए कर्ज के पुर्ननिर्धारण की जरूरत पड़ी जिसका जबरदस्त बोझ गरीबों पर पड़ा। पूँजी खाते के उदारीकरण से तबाही की ऐसी ही तस्वीर तुर्की, इण्डोनेशिया, मैक्सिको आदि जैसे देशों में नजर आयी। ऐसा ही कहकर 1990 के दशक में दक्षिण पूर्वी देशों पर टूटा।

भारत के विशाल शेयर बाजार का बुलबुला कभी भी फूट जाएगा और सट्टेबाज जिनमें अमरीकी करोड़पति ज्यादा हैं हमारी समूची अर्थव्यवस्था को गंभीर संकट में धकेलकर आसानी से फरार हो जाएंगे। इस आसन्न संकट का दंश देश के आम आदमी को झेलना पड़ेगा। और संप्रग (यूपीए) सरकार का पूर्ण पूँजी खाता परिवर्तनीयता लागू करने का निर्णय भारतीय अर्थव्यवस्था पर डालर के सवारी गांठने के लिए रास्ता तैयार कर देगा और अर्थव्यवस्था पर संकट आने की स्थिति में डालरसवारी गांठने के लिए रास्ता तैयार कर देगा और अर्थव्यवस्था पर संकट आने की स्थिति में डालर के फरार होने की प्रक्रिया को सुगम बना देगा। और हमारी लंपट सरकार ने ऐसा जनविरोधी व राष्ट्रविरोधी निर्णय लिया है जबकि डालर का संकट खुद इतना ज्यादा स्पष्ट है। डालर यूरोप की मुद्रा यूरो के शक्तिशाली उभार से दबाव व तनाव में है। अब 25 तक देश यूरो अपना चुके हैं जिससे डालर को धक्का लगा है। भारत एक अर्द्धउपनिवेश है और अब अमरीका का रणनीतिक साझेदार है। पूँजी खाते की पूर्ण परिवर्तनीयता भारतीय अर्थव्यवस्था पर गिरफ्त बढ़ाने में मुख्य रूप इस प्रकार से मदद अमेरिकी आकाओं को मदद पहुंचाएगी और दक्षिण एशिया के देशों पर उनके शिकंजे को भी मजबूत करेगी। इस गिरफ्त के जरिए जबकि अमेरिका अपने संकट का बोझ कुछ हद तक भारतीय व दक्षिण एशियाई देशों पर डालने में सफल होगा, भारत में हम और बड़ी तबाही की तरफ बढ़ रहे हैं। पूँजी खाते की परिवर्तनीयता से जहां आम लोग पीड़ा झेलेंगे वहीं अमीर लोग अपनी दौलत आसानी से बाहर ले जा सकेंगे और इस तरह से घातक चोटों से बच जाएंगे।

हमने इससे पहले दक्षिण पूर्वी एशिया, तुर्की और लैटिन अमरीका में ऐसा होते देखा है।

कामरेड गणपति का उद्घाटन भाषण

यह काँग्रेस सी.पी.आई (एम-एल) भा.क.पा. (मा-ले) द्वारा 1970 में सफल 8वीं काँग्रेस का ही अटूर सिलसिला है। वह उस नयी क्रान्तिकारी प्रवाह का आरंभ था जो नक्सलबाड़ी के साथ फूट पड़ा था। भले ही तब की एम सी सी 8वीं काँग्रेस का हिस्सा नहीं थी, उस समय क्रान्तिकारियों की बहुसंख्याक हिस्सा मार्क्सवादी-लेनिनवादी रुझान के साथ था। 8वीं काँग्रेस का सारांश संशोधनवाद और सीपीआई (एम) द्वारा आयोजित 7वीं काँग्रेस से स्पष्ट विभाजन रेखाएं खींचने में निहित था। उस (काँग्रेस) ने नवजनवादी क्रान्ति का कार्य, दीर्घकालीन जनसंग्राम का पथ, मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ-त्से तुङ विचार धारा आदि को स्थापित कर दिया एवं खेतिहार क्रान्ति को क्रान्ति की धुरी के तौर पर देखा। भले ही एम सी सी कतिपय कार्यनीतिक मुद्दों पर असहमति मतभेद रखती थी, बुनियादी रणनीतिक और विचारधारात्मक सवालों पर, खासकर हथियारबंद संघर्ष को आगे बढ़ाने के अहम सवाल पर दोनों धाराओं की सोच सामान्य तौर पर समान थी।

माओ की मृत्यु और डेंड संशोधनवाद के सर उठाने के बाद दोनों धाराओं ने सभी रुकावटों पर कर लीं और पहलीबार 1981 में मिले और तभी दोनों ने विलय का फैसला कर लिया। पर कुछ कारणों के चलते यह अमल में न आ सका, परंतु दोनों पार्टियों यानी तब के भा.क.पा.(मा-ले) और एम.सी.सी. के बीच अच्छे रिश्ते जारी रहे। इसके बाद पीपुल्सवार और सीपीआई (एम.एल) (पार्टी यूनिटी) आपस में मिल कर एक हो गये और इसके पश्चात हम एक संक्षिप्त अंधकारपूर्ण-अध्याय का काल पाते हैं जब दोनों पार्टियों के

बीच झड़पे हुई। परंतु दुबारा 2001 में दोनों (पार्टियों के) प्रतिनिधि मंडल आपस में मिले और तबसे रिस्ते गहरे से गहरे होते गये। हम दोनों ने उस अंधकारमय अध्याय



के कालखंड के लिए गंभीर आत्म-आलोचना की। फिर दोनों धाराओं ने लगभग चार दशक लंबे इतिहास की गंभीर समीक्षा की, सबक लिए और आगे बढ़ आये। अब दोनों प्रवाहों में कई परिवर्तन हुए हैं, और मा-ले-मा की बुनियाद पर एक नयी पार्टी की स्थापना हुई है, जिसने दोनों पार्टियों के समृद्ध अनुभवों

को आत्मसात किया। दो प्रमुख माओवादी प्रवाहों के विलय (ऐकीकरण) की इस प्रक्रिया में कई छोटे समूह भी विलयित हो गये या विलयन की प्रक्रिया में हैं- जैसे जनशक्ति। वर्तमान काँग्रेस देश की सच्ची माओवादी शक्तियों को संगठित/समेकित/दृढ़ीभूत करने में आगे और मददगार होगी।

इस बीते इतिहास को देखने के बाद अब आइये, हम उन प्रमुख कार्यों का रुख करें जो इस काँग्रेस का समक्ष हैं। मा-ले-मा की पुष्टि करने के साथ ही हमें हमारे देश की टोस परिस्थितियों पर सृजनात्मक रूप से इसे लागू करने के जरिये और उन्ने धरातल तक उठाना होगा। 1967 से ही हम संशोधनवाद के खिलाफ हम एक तारतम्य पूर्व संगत संघर्ष चलाते आ रहे हैं। और आज उसी परंपरा में हम मा-ले-मा को अमल में लागू कर रहे हैं और क्रान्ति की आगे बढ़ा रहे हैं। हमें अपने व्यवहार से सीखना है, और इस प्रक्रिया के जरिये उन्ने कार्य निर्धारित करने हैं। इस काँग्रेस में हमें अपने व्यवहार का भी आकलन करना होगा, उसे तौलना होगा, कहां हममें गंभीर कमजोरियां हैं, सुनिश्चित तौर पर चिह्नित करना होगा, इन्हें सुधारना-प्रक्षालित करना होगा, और इस तरह हमारे आंदोलन को विराट छलांगों में आगे ले जाना होगा। इस काँग्रेस में हमें हमारी योजनाओं का बेहतर बनाना होगा, एक नयी कमेटी चुननी होगी और एक टीम की तरह काम करना

होगा।

भारत की क्रान्ति विश्व सर्वहारा क्रान्ति का अंग है। दुनिया की जनता का पहले क्रमांक का दुश्मन, अमेरिकी साम्राज्यवाद भीषण तीव्र संकट झेल रहा है। उसे हर ओर से दुनिया की जनता कूट-पीट रही है। साम्राज्यवादी संकट भी गहराता जा रहा है। उसी प्रकार भारत में, ज्यों-ज्यों संकट गहराता जा रहा है,



जनता उत्सफूर्त अनायास विद्रोह और जुझारू संघर्षों में फूट पड़ रही है - विस्थापन-बेदखली के खिलाफ, जैसे कलिंगनगर और अन्यान्, राजस्थान और विर्दा के किसान आंदोलन, खौरलांजी घटना के बाद दलितों का उफान, आदि-आदि। सभी ओर बड़े संघर्ष हैं। इन्हीं के साथ विभिन्न राष्ट्रीयताओं के सशस्त्र संघर्ष भी जारी हैं। ये सभी हमारी पार्टी की रहनुमाई में हथियार बंद लड़ाई आगे बढ़ाने के लिए बेहतरीन स्थितियों का सृजन करते हैं। पिछले दो वर्षों में - दोनों पार्टियों की एकता और भा.क.पा.(माओवादी) की स्थापना के बाद से - हमारा सशस्त्र छापामार युद्ध और हमारे जन संगठन कुछ हद तक आगे बढ़े हैं; कुछ इलाकों में योजनाएं विकसित की गयी हैं। पर बहुत कुछ करना अभी शेष है। खासकर हम पर दुश्मन के आक्रमणों की तीव्रता के स्तर के मद्देनजर।

एक और बिंदु है। पिछले 5-6 वर्षों में आंध्रप्रदेश में हमने गंभीर नुकसान झेले हैं। दुश्मन के हमलों का स्तर प्रचंड उत्कट और निष्ठुर है। हालांकि आघात लगा है, पर बहुसंख्या जनता अब भी हमारे साथ है। हमें यहां सबक निकालने हैं और आंदोलन की समीक्षा करनी है। यहां मिले तजुर्बे को दूसरी जगहों पर दोहराना नहीं है। आंध्रप्रदेश के आंदोलन के सबकों को समझना भी काँग्रेस के महत्वपूर्ण कार्यों में एक है।

अगर हम भारत में माओवादी आंदोलन के विकास को ऐतिहासिक तौर पर देखे तो हम पाते हैं कि नक्सलबाड़ी के बाद एम सी सी द्वारा नेतृत्व दिया जा रहा प्रवाह बिहार-झारखण्ड पट्टी/

क्षेत्र में बढ़ा जबकि भा.क.पा.(मा-ले) रुझान का केंद्र आंध्रप्रदेश था। ये दोनों इलाके माओवादी आंदोलन के मंच-केंद्र पर थे। आज मध्य-मंच पर दंडकारण्य और बिहार-झारखण्ड हैं जबकि आंध्रप्रदेश का आंदोलन तात्कालिक तौर पर पीछे हटा है।

जब माओवादी आंदोलन कुछ नुकसानों से मुखातिब होता है, विभिन्न रुझान सर उठाते हैं। कुछ दक्षिण की ओर मुड़ते हैं, दूसरे वाम दिशा की ओर; दूसरे कुछ सही पथ पर चलते हैं और क्रान्तिकारी आंदोलन को आगे बढ़ाते हैं। हमें बीते अनुभवों से सबक निकालना चाहिए और पार्टी के भीतर के संघर्ष को सही और ठीक तरीके से संचालित करना सीखना चाहिए। पीपुल्सवार में जब 1985 में मतभेद उभरे; हम उसे सही तरीके से संचालित नहीं कर पाये और परिणामतः विभाजन हो गया। दुबारा 1992 में पीपुल्सवार में हमें मतभेदों को सही तरीके से सुलझा नहीं पाये। पूर्वाश्रम की एम सी सी में भी 2001-2002 में मतभेद थे और अवसरवादी भारत-बादल गुट पार्टी छोड़ गया। पुरानी पार्टियों में इन तमाम मदभेदों के बीच सिर्फ अवसरवादी ही थे जो पार्टी छोड़ गये अब हमने इन अनुभवों को लिया है और मतभेदों के बावजूद आगे जा रहे हैं।

काँग्रेस इन तमाम बातों पर फैसले/निष्कर्ष पर पहुंचेगी और तब हम एक स्वर से आगे बढ़ेंगे। किसी पार्टी में हमेशा ही एकता और मतभिन्नता रहती है। अलग-अलग वक्त यह

या वह प्राथमिक हो जाती है। पार्टी में हमेशाही सही और गलत चिंतनों के बीच विभेद-मतभेद रहेंगे। इन मतभेदों से कोई पार्टी किस तरह मुकाबिल होती है, उसी में किसी पार्टी की प्रवीणता, उसका सयानापन झलकता है। केन्द्रीय कमेटी ने इन भिन्न मतों पर बहस की है। कुछ ने कहा कि दोनों प्रवाहों के बीच एकता सिद्धांतों पर आधारित नहीं है। यह सही नहीं है। पार्टी में विवाद कैसे सुलझाने है, हमें समझना होगा, पार्टी ही में क्यों, कहीं भी तभी उन्नति होगी।

आज काँग्रेस के समक्ष थोड़े नहीं, कई सवाल चर्चा, बहस और निपटने के लिए उपस्थित है। इन (अलग) नजरियों के बीच संघर्ष के जरिये हम अपना ज्ञान समृद्ध करेंगे और आगे बढ़ेंगे। हम कई मुद्दों का बहुमत की बुनियाद पर निष्पादन करेंगे; जब आम राय पर पहुंचना मुमकिन न हो, तब वही जनवादी है। चाहें जहां से आये, हमें सही विचारों को कबूल करने के लिए तैयार रहना चाहिए। चलिए, हम अहम सवालों पर ध्यान केन्द्रित करते हुए इस काँग्रेस में अनुशासन के साथ बहसों का संचालन करें। उपलब्ध अल्प समय के मद्देनजर काँग्रेस से अधिकतम हासिल करने की नजर से यह बेहद जरूरी है। हमारे देश की क्रान्तिकारी आंदोलन को विराट उछालों के जरिये आगे ले जाने की गरज से, आइये, हम एक उच्चतर स्तर की एकता हासिल करें।

लाल सलाम।

अमेरिका-भारत परमाणु सौदा: अंकल सैम के हाथों में बंधक भारत

-डॉ गुप्ता

अमेरिका-भारत परमाणु सौदे ने उस दुनिया में, जहां संयुक्त राज्य अमेरिका सरीखे साम्राज्यवादी मालिक सर्वोच्च सत्ता चलाते हैं, भारत की आजाद हैसियत का मुखौटा उतार दिया है। हेनरी जे. हाइड की 109 पृष्ठों का विधान संयुक्त राज्य-भारत शांतिपूर्ण अणु शक्ति अधिनियम-2006, भारत के समूचे परमाणविक शोध और विकास कार्यक्रम के ऐतराफ फंडा कस देता है। 8 दिसंबर 2006 को अंततः संयुक्त राज्य (अमेरिका) कांग्रेस द्वारा पारित कर दिया गया और इस पर भारत के शासक हर्षोल्लास से झूम उठे। एक बरस से ज्यादा समय तक भारत सरकार द्वारा अमेरिका-भारत परमाणु सौदे का बेशर्म औचित्य-प्रतिपादन और अमेरिकी साम्राज्यवादी आकाओं की नतीतम कठोर

धाराएं जो भारत को अमेरिकी आदेशों की बांदी बना देता हैं, ने यह स्फटिक सा स्पष्ट कर दिया है कि भारत ने राजी-खुसी अपनी किस्मत के डोर अमेरिकी के साथ बांध दी है। उम्दा कारीगरी से बना यह जघन्य-अपमानजनक अधि नियम जो अमेरिकी प्रशासक की खतरनाक (हानिकारक) योजनाओं का परिणाम है। ने वस्तुतः भारतीय राज्य के लिए परमाणु अप्रसार संधि की बाध्यताओं के अनुपालन को बाध्यकारी बना डाला है। इस परमाणु समझौते के जरिये भारत दैत्याकार अमेरिकी एजेंसी-नैशनल स्क्वियरिटी एडमिनिस्ट्रेशन (राष्ट्रीय सुरक्षा प्रशासन) के रोज-रोज की हुकुमबाजी के तहत आ जाता है, जो सी आई ऐ और एन एस ए सरीखी दूसरी अमेरिकी सुरक्षा(!) एजेंसियों के साथ निकट-सहयोग में काम करती है। सी. पी. आई. (एम) की अगुवाई में 'वाम' के समर्थन वाली 'संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन' (यूपीए) सरकार का अमेरिकी कांग्रेस "द्वारा अमेरिका-भारत परमाणु विधेयक पारित किये जाने के दिन ही उन्मत्त आंदातिरेक दरअसल आपराधिक चापलूसी की अभिव्यक्ति है। भारत सरकार के पारराष्ट्र मंत्रालय के प्रवक्ता श्री नवतेज सरना इस भारत विरोधी परमाणु सौदे का न सिर्फ स्वागत ही किया बल्कि उसने संयुक्त राज्य (अमेरिका) के राष्ट्रपति (अध्यक्ष) श्री जार्ज डब्ल्यू बुश और राज्य सचिव काण्डोलिसा राइस के "व्यक्तिगत प्रयास और समर्पण" की तारीफ भी की। सरना ने आगे बेशर्म-उल्लास के साथ यह भी जोड़ा कि भारत "और मजबूत भारत-अमेरिकी बंधनको कांग्रेस

नेतृत्व की और से मिले व्यापक द्विपाक्षिक समर्थन" से भारत उत्साहित हुआ है। भारत की जनता के लिए यह कैसा क्रूर मज़ाक है, जो अमेरिकी साम्राज्यवाद के जानलेवा व धमकी, बाहुबल-प्रदर्शन, आर्थिक शोषण और सांस्कृतिक प्रभुत्व के साये में अर्द्ध-औपनिवेशिक भारत में जीने को अभिसप्त हैं।

यह साम्राज्यवादी अधिनियम भारत पर अमेरिकी शिकंजा को और ज्यादा कसता है

इस साम्राज्यवादी कानून के जरिये न तो भारत अमेरिका से पूरा परमाणु सहयोग पायेगा और न ही हमेशा के लिए उन्हें (भारत का नागरिक परमाणु सुविधाओं को) अंतर्राष्ट्रीय निरीक्षण के तहत खोल देने के बाद भी, इसके एवज में इन नागरिक परमाणु सुविधाओं के लिए आजीवन परमाणु ईंधन की आपूर्ति ही हो पाएगी। भारत को किये गये तकनॉलॉजी हस्तांतरण पर कठोर अंतिम-उपयोगकर्ता-पड़ताल का साया तो हमेशा रहेगा पर ईंधन प्रक्रिया तकनॉलॉजी और संवर्धन (एनरिचमेंट और फ्यूअल प्रोसेसिंग टेक्नोलौजी) तक भारतीय संस्थाओं की पहुंच के बिना ही। अंतर्राष्ट्रीय अणु ऊर्जा एजेंसी (आर्ईए) के निरीक्षण (की शर्त) मान लेने के अलावा भारत को एक और अमेरिकी सुरक्षा-उपायों के संग्रह को भी स्वीकार करना होगा जिनका इस्तेमाल अमेरिकी आका तब कर सकेंगे जब उन्हें लगेगा कि पहली (निरीक्षण की अंतर्राष्ट्रीय) व्यवस्था कारगर नहीं है। अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा हर साल (अमेरिकी) कांग्रेस के समक्ष भारत के विनीत-आज्ञाकारी अच्छे बच्चे की भूमिका की कठोर तसदीकी (प्रमाण पत्र-प्रदान) का प्रावधान है कि भारत "पूरी तरह और सक्रिय रूप से" अमेरिकी और अंतर्राष्ट्रीय "ईरान को समझाने-बुझाने-मना करने,एकाकी करने, और जरूरत जड़ने पर दंडित करने और काबू करने के" प्रयासों में भागीदारी कर रहा है। यह "परमाणु-सहयोग" एकतरफा और पर अमेरिका को संवर्धन और ईंधन-प्रक्रियाकरण तकनालॉजियों की भारत को आपूर्ति न करने की गुंजाइश कर देता है। यह अधिनियम भारत का "सुरक्षोपायों के साये में ले लिये गये संयंत्रों के जीवन-काल के लिए परमाणु ईंधन संचय न करने के लिए

बाध्य करता है। यह साम्राज्यवादी कानून स्पष्ट कर देता है कि अगर भारत ऐसा (संग्रह) करता है तो अमेरिका भारत को सजा देने की क्षमता सुरक्षित रखता है। यह कड़ा कानून यह भी स्पष्ट कर देता है कि नयी परमाणु सुविधा प्रावधान रिपोर्टिंग आवश्यकताओं में सन्निहित है। इस रिपोर्टिंग में भारत की फौजी रिऐक्ट्रों द्वारा उत्पादित बिजली के वार्षिक अनुमान भी शामिल हैं। यह देश-द्रोही कानून भारतीय परमाणु वैज्ञानिकों पर 'सहयोग' थोपता है। यह तो विडंबना ही है कि इस कानून के बल पर अमेरिकी ऊर्जा सचिव (मंती) 'सहयोग' के नाम पर भारत के अणु ऊर्जा विभाग के कार्यकलापों में बेशुमार दखलंदाजी के अधिकारों का फायदा पाता है, भले ही उक्त विभाग ने ऐसी निगरानी/निगहबानी कभी चाही ही न हो। और यह सब 'सहयोग' के मीठे-मधुर नाम की आड़ में! अमेरिकी महाशक्ति के आगे दासता कबूलवाने वाला यह कानून भारत के परमाणु शोध और विकास की समूची जानकारी पर अमेरिका की कानून-सम्मत तांक-झांक और नियंत्रण के अधिकार दे देता है ताकि अमेरिका के रणनीतिक हितों के आगे भारत मल्था टेके।

भारतीय वैज्ञानिकों ने परमाणु-सौदे (समझौते) का विरोध किया

अमेरिकी कांग्रेस द्वारा कुख्यात परमाणु कानून के पारित किये जाने के तत्काल बाद अणु ऊर्जा विनियामक बोर्ड के भूतपूर्व प्रधान आदिनारायण गोपालकृष्णन ने उसकी धारा 109 का हवाला देते हुए "अप्रसार और सुरक्षा-उपायों पर" भारत के अणु ऊर्जा विभाग पर अमेरिकी राष्ट्रीय परमाणु सुरक्षा प्रशासन को एक संयुक्त कार्यक्रम के तौर पर जबरन थोपने के प्रयास के रूप में अभिवर्णित किया। पिछले अगस्त में एटमी ऊर्जा कमीशन के प्राक्तन सभापति डॉक्टर एच. एन सेठना, डॉ. एम. आर. श्रीनिवासन तथा डॉ. के.पी.अरूरूंगार सहित आठ वैज्ञानिकों ने भारतीय सांसदों को संबोधित दो-पृष्ठ के एक पत्र में स्पष्ट रूप से दो टूक शब्दों में कहा: "अमेरिकी प्रतिनिधि सभा द्वारा स्वीकृत स्वरूप में भारत अमेरिका समझौता परमाणुविक विज्ञान और तकनॉलॉजी (के क्षेत्र)में देशज परिशोध और विकास (आर एण्ड डी) चलाने की हमारी

स्वतंत्रता में अतिक्रमण करता है। बाहरी निगरानी या नियंत्रण अथवा किसी अंतर्राष्ट्रीय संस्था को संतुष्ट करने की गरज से हमारी आर एण्ड डी में व्यवधान/अवरोध नहीं पड़ना चाहिए।” (द स्टेट्समैन, 15/08/06)

अमेरिकी साम्राज्यवाद के हाथों में भारतीय परमाणु परिशोध और विकास का रेहन रख दिये जाने का सबूत तब साफ तौर पर मिल गया जब अमेरिकी दबाव के आगे नतमस्तक होकर सितंबर 2005 और (फिर दुबारा) मार्च 2006 में अंतर्राष्ट्रीय आणविक ऊर्जा एजेंसी की बैठकों में भारत ने ईरान के खिलाफ मतदान किया। भारत सरकार भारत की जनता से लगातार झूठ बोलती रही है, खासकर, वैज्ञानिक समुदाय से यह झूठ बोलती रही कि भारत अमेरिकी दबाव के आगे झुक नहीं रहा है। 27 फरवरी 2006 को मनमोहन सिंह ने संसद से कहा कि अमेरिका के साथ परमाणु संधि के जरिये “भारत वही लाभ और सुविधाएं/सहूलियतें हासिल कर लेगा जो संयुक्त राज्य (अमेरिका) जैसी विकसित परमाणु तकनीकों वाले अन्य राज्यों (देशों) को हासिल है।” भारत पर लादी गयी प्रतिकूल शर्तों को देखते हुए स्पष्ट है कि प्रधानमंत्री साफ-साफ अमेरिका के प्रति भारत की जी-हुजूरी छुपाने की कोशिश कर रहे हैं।

अमेरिका-भारत परमाणु सौदा संयुक्त राज्य अमेरिका की हिम्मत बढ़ाने वाला है

इस कुख्यात कानून पर जार्ज बुश द्वारा सहमति की मुहर लगा दिये जाने के तुरंत बाद अमेरिकी साम्राज्यवाद के तत्वावधान में संयुक्त राष्ट्र (सभा) ने ईरान के खिलाफ दंडों की घोषणा कर दी। ईरान का ‘अपराध’ बस यही है कि उसने उसके परमाणु कार्यक्रम के खिलाफ अमेरिका द्वारा लादी गयी जबरदस्ती-बाध्यताओं के प्रति अवज्ञा प्रदर्शित की है। हम जानते हैं कि अंतर्राष्ट्रीय अणु ऊर्जा एजेंसी (आइएईए) तक ने 2003 में इराक-आक्रमण से पहले जन-संहार के अस्त्रों के बारे में बुश प्रशासन के झूठे दावों और (अमेरिकी) कांग्रेस की कमेटी की रपोर्ट को भी, उसके कतिपय अंशों को “अतिचारी-बेहूदा और बेईमानी भरा” घोषित करते हुए संयुक्त राष्ट्र के निरीक्षकों ने भी सितंबर 2006 में खारिज कर दिया। (टाइम्स ऑफ इंडिया, 15/09/2006)। अमेरिका-भारत परमाणु समझौता, जो भारत को अमेरिकी आधिपत्य के अधीन बांध देता है। केवल

एशिया में अमेरिकी हितों को आगे बढ़ाने में ही सहायक होगा। इसकी “” अवस्था से भी यह तथ्य हद से ज्यादा स्पष्ट हो जाता है।

भारत-अमेरिका सैनिक संधि

अमेरिका-भारत परमाणु सौदा भारत के प्रतिरक्षा मंत्री श्री प्रणब मुखर्जी और अमेरिकी प्रतिरक्षा सचिव श्री डोनाल्ड रम्सफिल्ड द्वारा जून 2005 में हस्ताक्षरित भारत-अमेरिका सैनिक संधि के पीछे आया। भारत का अमेरिका (फौजी) साजसामानों में दिलचस्पी को नयी दिल्ली के काफी अच्छे खासे प्रतिरक्षा-खरीदारी में आपूर्ति कर पाने की रक्षा-उत्पादनों में लगी अमेरिकी कंपनियों की उमंग का साथ मिला। अब, कुछ सालों से भारत के फौजी अफसर-कर्मि अमेरिका फौजी प्रशिक्षण सुविधाओं, खासकर नौ सेना-विमानों में नियमित गहन प्रशिक्षण पा रहे हैं।

अमेरिकी कांग्रेस में पेश एक रिपोर्ट के मुताबिक सन 2004 में ही, तीसरी दुनिया के देशों में देश के बाहर हथियार खरीदने वाले खरीदारों की सूची में भारत अव्वल रहा, जिसकी कुल कीमत 33,472 करोड़ रु. थी, और जो दूसरे नंबर पर रहे सऊदी अरब के (13920 करोड़ रु.) कहीं आगे थी। भूतपूर्व सोवियत युनियन के भंग हो जाने के बाद से क्रमशः अमेरिकी हथियार भारत में उंडेला जाना शुरू हो गया है।

भारत की वायु सेना अमेरिका वायु सेना के साथ भारत में बारंबार हवाई कवायद के आयोजन कर रही है। पहले पहल यह ग्वालियर में संपन्न हुआ फिर 2005 में पश्चिम बंगाल के कलाईकुडा में इसका आयोजन हुआ। 24 अक्टूबर 2006 से ऐसे संयुक्त अभ्यास की तीन साला कार्यक्रम बनाया गया है। भारतीय नौ सेना अपने अमेरिकी प्रतिरूप-अमेरिकी नौ सेना-के साथ फौजी-तालीम में गत 5 नवंबर तक मलाबारतीर पर जा शामिल हुई। सन् 2000 से अक्टूबर 2006 तक ऐसे संयुक्त अभ्यास 9 बार आयोजित किये गये हैं।

भारत और इसकी अर्थव्यवस्था पर पूरे नियंत्रण की उन्मत्त भूख से बिलबिलाता अमेरिकी साम्राज्यवाद भारत में बढ़ती माओवादी शक्तियों के कारण चिंता में पड़ गया है। इस ने राज्य में माओवादी आंदोलन के दमन के लिए छत्तीसगढ़ सरकार को फौजी-मदद की पेशकश की माओवादी ताकतों को निर्यात करने के इरादे से अमेरिका और भारत ने अक्टूबर 2006 में ‘शलूजीत’ के गुप्त सांकेतिक नाम से संयुक्त फौजी अभ्यास किये। 13 अक्टूबर को एक सरकारी बयान में यह

कहा गया कि शहरों व उपनगरीय इलाकों में आंतकवादी कार्रवाइयों से निपटने की खातिर (दोनों सरकारों में) अभिप्रायों और तकनीकों का आदान-प्रदान होगा। जाहिर है, कि इस संयुक्त प्रयास के निशाने पर भारत में माओवादी भी थे।

अमेरिकी कांग्रेस द्वारा इस अपमानजनक कानून का पारित किया जाना अमेरिकी राज्य-उप-सचिव निकोलस बर्न्स तथा भारत में अमेरिकी राजदूत डेविड मलफोर्ड के लिए तत्काल संकेत था कि वे एक विस्तृत फौजी करार के लिए भारतीय अधिकारियों से बातचीत छेड़ें। अमेरिका के इन दो प्रतिनिधियों ने भारत के प्रतिरक्षा सचिव से उसी दिन मुलाकात की जिस दिन परमाणु अधि नियम को अमेरिकी कांग्रेस का भारी समर्थन मिला। बर्न्स ने पूरे अक्खड़पन के साथ स्पष्ट घोषणा की कि भारत के साथ फौजी रिश्ते का एक “पृथक-महत्वाकांक्षा” के बतौर अनुगमन किया जायेगा। उसने भारत के जलसेना को अमेरिकी युद्धपोत (जंगी जहाज) देने का आश्वासन भी लगे हाथों दिया। बर्न्स ने साफ लफ्जों में अमेरिकी राणनीतिक हितों का बयान यूँ किया: “फौजी बिक्री और तकनीकों/हस्तांतरण एक दीर्घकालीन रिश्ते के निर्माण में सहायक होगी।” यह संदेश ऊंची आवाज में और स्पष्ट था कि आगे से अमेरिकी साम्राज्यवाद भारतीय फौजी बलों पर प्रभुत्व चलायेगा और उसे नियंत्रित करेगा।

अमेरिका के भारत के साथ राणनीतिगत रिश्ते में चीनी उपादान

पहले माओत्से-तुंग के समय के चीन को निरंतर हमले के खतरे में/धमकी में रखना अमेरिकी साम्राज्यवाद की राणनीति थी। उसके लिए उसने जापान, ताइवान, दक्षिण कोरिया, फिलिपिन्स, भारत तथा ऐसे तमाम एशियाई राज्यों को अपने पीछे इकट्ठा कर लिया था जो उसके अधीनस्थ/जी हुजूरिया थे। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद के काल में अमेरिकी आधिपत्य तले युरोप की कम्युनिस्ट विरोधी पश्चिमी अर्थ-व्यवस्थाओं को पुनरुत्पादित करने के लिए मार्शल प्लान लाया गया। राष्ट्रपति ट्रूमन के तहत 1950 में कोरियाई युद्ध के चलते अमेरिकी फौजी खर्च बेहद ज्यादा बढ़ गया। एशिया में उस समय कोरियाई युद्ध के चलते अमेरिकी योजनाओं को पूरा करने के लिए नेहरू सर्वोत्तम उम्मीदवार के तौर पर मिला। 21 अक्टूबर 1949 के दिन न्यूयॉर्क टाइम्स ने रिपोर्ट प्रकाशित की कि जॉन फॉस्टर डुल्लेस (जो

जल्दी ही अमेरिका का राज्य सचिव बन गया) ने “सिफारिश की कि सुदूर पूर्व में कम्यूनिज्म को नियंत्रित करने के युद्ध में नेतृत्व इलाके के उन्हीं लोगों को प्रदान किया जाये। जिनके हित इस संघर्ष में दांव पर लगे हों। श्रीमान डल्लेस ने पंडित जवाहरलाल नेहरू, भारत के प्रधानमंत्री, जो इस समय न्यूयॉर्क के दौरे पर हैं, का नाम यह कहकर सुझाया कि यही वह शख्स है जो नेतृत्व की भूमिका निभा सकता है”। इस सुझाव से भी पहले, 7 दिसंबर 1947 को ही भारत में अमेरिका के राजदूत ने घोषणा की, “विश्व-संघर्ष में भारत को हमारे पक्ष में रखना बेहद अहमियत रखता है।” यह विश्व संघर्ष का अर्थ, जाहिर ही है, अमेरिका का कम्यूनिज्म और साम्राज्यवाद के खिलाफ आजादी के आंदोलनों के विरोध में साम्राज्यवादी अमेरिका का अभियान ही था। और अब विश्व संघर्ष का अर्थ अमेरिका अलग-अलग तौर पर, “आतंकवाद”, लोकतंत्र के दुश्मन आदि-इत्यादि नामों की आड़ में जिस किसी को अपना शत्रु मानता है, उनके खिलाफ आक्रमण और भारत इसमें उसका बैना-भागीदार/शिरकतदार बन कर इस तथाकथित विश्व-संघर्ष में अमेरिकी साम्राज्यवाद की विभत्स-वहसी नीतियों को सटीक तरीकों से पूरा करता है।

कुछ काल तक भारत के शासक वर्गों ने सोवियत सामाजिक साम्राज्यवादी भालू के आलिंगन का आनंद लिया और 1972 के प्रारंभ में उसके साथ फौजी समझौता भी कर लिया। 1990 के आसपास सोवियत संघ के विखंडन के साथ ही भारत अमेरिकी आकाओं के निकट से निकट चला आता गया। एक अर्द्ध उपनिवेश होने के नाते भारत लेकिन अन्य साम्राज्यवादही मालिकों से असमान रिश्तों को कभी नहीं तोड़ सकता है। अमेरिकी साम्राज्यवाद की वर्तमान आधिपत्य की स्थिति और भारत की उसके अधीनस्थ अनुचर/जी हुजूरिये की भूमिका के चलते, युद्ध अपराधी जार्ज बुश का 2006 के प्रारंभ में उस समय लाल कालीन बिछा कर स्वागत किया गया, जब वह अपराधी भारत की धरती पर उतरा। वर्तमान यूपीए सरकार से अमेरिका के साम्राज्यवादी अभियान में बुश को खुले दिल से समर्थन हासिल हुआ। पूंजी-खाता परिवर्तनीयता (कैपिटल अँकाउन्ट कन्वर्टिबिलिटी) सरीखें आंतरिक नीतियों तथा ईरान, उत्तर कोरिया इत्यादि के सिलसिले में भारत की पारराष्ट्र नीतियों को अमेरिकी-मालिकों को खुश करने के लिए तदनु रूप ढाल लिया गया। जुलाई 2005 का भारत-अमेरिका शिखर वक्तव्य तथा मार्च 2006 का वक्तव्य, दोनों ही

उन गुप्त धिनौने सौदों को कतई उजागर नहीं करते, जो इन दोनों सरकारों ने किये हैं।

पहले का लाल चीन अब एक ताकतवर पूंजीवादी देश में बदल गया है। वर्तमान दुनिया में अमेरिकी साम्राज्यवाद दूसरी ताकतों से प्रभुत्व के लिए होड़ कर रहा है। मुकाबला कर रहा है। 9 मार्च 2002 को लॉस एन्जेलिस टाइम्स ने अमेरिका के संशोधित परमाणु मुद्रा (भंगिमा) की समीक्षा का भेद खोल दिया जिसमें चीन तथा रूस सहित छः और देशों के खिलाफ परमाणु अस्त्रों के इस्तेमाल की आपातकालीन योजनाएं निहित थीं। भूतपूर्व अमेरिकी रक्षा सचिव रॉबर्ट एस मैकनामारा लिखते हैं: “मैं प्रत्यक्ष अनुभव से जानता हूँ कि अमेरिकी परमाणु नीति आज दूसरे राष्ट्रों और खुद हमारे राष्ट्र के लिए भी ऐसे जोखिम पैदा करता है जिन्हें स्वीकार नहीं किया जा सकता”। वह दर्ज करता है कि “शीतयुद्ध के खत्म होने के एक दसक बाद भी अमेरिका की बुनियादी परमाणु नीति अपरिवर्तित है”। (फ्रंट लाइन - 10/04/1992)। भारत के विदेश सचिव श्री श्याम शरण का 28 नवंबर 2005 को भारत-आर्थिक शिखर परिषद (इंडिया इकॉनॉमिक समिट) में दिया गया भाषण एशिया और उसके परे चीन की बढ़ी क्षमताओं का हवाला देता है। उसने यह स्पष्ट कर दिया: “मैं सोचता हूँ कि एशिया इलाके में भारत और अमेरिका कहीं बेहतर संतुलन लाने में योगदान कर सकते हैं।” दसके बाद श्री शरण ने भारत-अमेरिका संयुक्त सैनिक भूमिका का जिक्र करते हुए जोर देते हुए कहा: “इलाके के लिए आपस में स्वीकृत प्रतिमान के अनुशासन के तहत ज्यादा से ज्यादा देशों को लाने की जरूरत है। मैं समझता हूँ कि अमेरिका और भारत दोनों इसमें योगदान कर सकते हैं।” (नुक्ताचीनी हमारी) साफ है, अमेरिका भारत का इस्तेमाल खासकर चीन के खिलाफ एक प्रतिभार के (पासंग) के तौर पर करता है। अमेरिका के कसते आलिंगन को देखते हुए अमेरिकी प्रभुत्व के अंतर्गत अमेरिका-भारत परमाणु सौदा कुछ समय पहले ही एक वास्तविकता बन गया था। अमेरिका ने 20 अक्टूबर 2005 को ही परमाणु आपूर्तिकर्ता समूह (न्यूक्लियर सप्लायर्स ग्रुप)की एक बैठक में असफलता के साथ भारत को तकनॉलॉजी बिक्री पर लगाये गये प्रतिबंध उठा लेने की मांग करने वाला एक प्रस्वाव आगे लाया था। ‘परमाणु प्रसार पर रोकथाम’ के सवाल पर अमेरिका ने पहले ही खुद को ‘पहरेदार की भूमिका सौंप रखी है। पर भारत के लिए उस मौके पर उसने अमेरिकी फौजी रणनीति का

अनुसरण करते हुए ही, अपवाद-विशेष मामला - होने का तर्क आगे करते हुए पैरवी की। यह धिनौनी परमाणु संधि दक्षिण एशिया इलाके में भारत की विस्तारवादी भूमिका को भी संतुष्ट करती है। खुद श्री बुश के निर्लज्जतापूर्ण परमानंद के स्वर्गीय (कयामत के दिन के) क्षणों का सुख भोगने का इसमें एक और कारण निहित है। एटमी ऊर्जा अधिनियम 2006 पर दस्तखत करने के तुरत बाद जब वह क्लाइव्लैंड सिटी क्लब, ओहियो में था, तब दिये गये एक साक्षत्कार में बुश ने शांति के लिए अमेरिकी प्रयास में भारत तक हिस्सेदार होने प्रमाण पत्र दिया। खुशी से फूले न समाते हुए बुश ने कहा कि भारत किसी भी मायने में ईरान जैसा नहीं है, और यह अत्यधिक पारदर्शी जनतांत्रिक देश है। (दैनिक स्टेट्समन 23/03/2006) भारत की अशेष जनता भारत के शासक वर्गों की पीठ थपथपाने के पीछे साम्राज्यवादी मनसूबे को इस चाशानी में लिपटी काठ-कबाड़ में कडुआहट के साथ अनुभव करती है।

‘आतंकवाद’ के खिलाफ लड़ाई-भारत को जकड़ने-लूटने का एक बहाना

तथाकथित ‘आतंकवाद’ के खिलाफ लड़ाई अमेरिका परस्त युद्ध-भय उभारने की अमेरिकी साजिश में जानबूझकर औजार बनने के मामले में पिछली राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठजोड़ (एनडीए) सरकार और वर्तमान ‘वाम’ समर्थित संयुक्त प्रगतिशील (यूपीए) गठबंधन सरकार दोनों, निदर्शनीय रूप से खुद प्रमाण देती आयी हैं। भारतीय सेना के साथ अमेरिकी सेना के संयुक्त अभ्यास, रणनीतिक विषयों का अमेरिका के साथ साझा लेन-देन, भारतीय धरती पर अमेरिकी संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई)के कर्मियों के कार्यालय, भारत में माओवादियों को खत्म करने के भारत-अमेरिकी फौजी योजना इत्यादि इस उपमहाद्वीप में अपना नव-औपनिवेशिक खेल खेलने देने में अमेरिकी आकाओं क खुलकर मदद करने में भारतीय शासक वर्गों की दुष्टतापूर्ण भूमिका की और मुखर रूप से इंगित करते हैं।

सी आइ ए के साथ ‘रॉ’ के बढ़ गये आतंकवाद-विरोधी रिश्तों ने अमेरिकी गुप्तचरों की भारत में पैठ के लिए सारे दरवाजे खोल दिये हैं। अमेरिका के नेतृत्व में साम्राज्यवादी-भूमंडलीकरण के साथ दुनिया की अर्थव्यवस्था निरंतर संकटों के चपेट में है। अमेरिकी जासूसी विभाग की सिनेट (ऊपरी सदन) की

चयनित कमेटी को अब भारी धन-राशि प्रदान की गयी है। खुद अमेरिका में ही अब बुनियादी जानकारी तक को नियमित रूप से 'संवेदनशील' घोषित कर साधारण जनता की पहुंच से परे रखा जाने लगा है जबकि 'संयुक्त राज्य अमेरिका देशभक्त (पैट्रीअट) ऐक्ट' नागरिकों को व्यापक राज्य-निगरानी के तहत रख देता है। इस निगरानी में उनकी यात्रा संबंधी विवरणों से लेकर वे पुस्तकालय से कौन सी किताब लेते हैं-तक सभी बातों को सामिल किया गया है। सशस्त्र पुलिस गश्ती तो अब व्यापकतम हो गयी है। ये तमाम बातें अमेरिकी साम्राज्यवादी शासन के भय और वहां की सिनेट ने 447 शत-कोटी डालर्स की अमेरिकी फौजी बजट अगली छःमाही के लिए सेतु राशि के तौर पर 70 शत कोटि डालर्स की अनुपूरक धन राशि के साथ पारित कर दिया जो खुद ही अब तक का रिकार्ड बजट है।

अमेरिकी प्रभुत्व और लूट के खिलाफ बढ़ते विरोध ने अमेरिकी नीति-निर्माताओं के मन में भय का संचार कर दिया है। अमेरिकी जासूस-एजेंट भारत में अब अतिसक्रिय हो गये हैं। 2006 की जुलाई के मध्य में राष्ट्रीय सुरक्षा काउंसिल सचिवालय (एन एस सी एस) के व्यवस्था विश्लेषक एस एस पॉल की गिरफ्तारी ने जनता के सामने यह आलोक में ला दिया कि कैसे 'रा' आइ वी एवं समूचे राष्ट्रीय सुरक्षा सचिवालय तंत्र के भीतर सीआइए ने मजबूत उपस्थिति विकसित कर ली है। पॉल को अमेरिकी राजनयिक मिंचेस से राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद के जाने-माने सूचना विशेषज्ञ तथा राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गंठजोड़ (वाजपेयी सरकार द्वारा 2000 में स्थापित भारत-अमेरिकी साइबर सुरक्षा फोरम के भारतीय संयोजक मुकेश सायनी ने मिलवाया था। सायनी जो नौसेना के माजी कमांडर है, ने न्यूयॉर्क में 'रॉ' के कार्यकारी (एजेंट) के तौर पर अपने सेवाकाल के दौरान सीआइए के साथ संपर्क विकसित कर लिए और रणनीतिक नीति-दस्तावेज सीआइए को सौंपने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। आइबी के निदेशक उज्ज्वल दासगुप्ता पर भी सीआइए से संबंध रखने का संदेह रहा है। एटमी ऊर्जा एक्ट के स्वीकृत हो जाने के बाद, जिसमें परमाणु वैज्ञानिकों के शोध और विकास (आर एण्ड डी) कार्यकलापों पर अमेरिकी निगरानी से संबंधित ढेरों

उपधाराएं हैं, भारत अब अमेरिकी गुप्तचर संस्थाओं के लिए आसान खेल का मैदान बन जायेगा।

भारत का परमाणु बाजार झपटलिये जाने

के लिए तैयार

यह एक घोर नग्न सच्चाई है भारत के साथ परमाणु समझौता अमेरिका के गोपनीय फौजी अड्डों की भारत में स्थापना का रास्ता सुगम कर देगा। पहले ही 127 देशों में अमेरिकी सैनिक अड्डें मौजूद हैं। 1999 में "परमाणु अस्त्रों की हिरासत (कब्जा) और विकास का इतिहास: जुलाई 1945 से सितंबर 1977 तक" नामक एक महत्वपूर्ण दस्तावेज में राबर्ट नॉरिस, नॉरिस, विलियम एम आर्किन तथा विलियम वार ने प्रस्तुत किया। ब्रिटेन, घना, मोरक्को, पश्चिमी जर्मनी, इटली, फ्रांस, तुर्की, नेदरलैंड्स, ग्रीस, बेल्जियम, दक्षिणी कोरिया, ताइवान, फिलिपीन्स, अलास्का, हवाई इत्यादि में शीतयुद्ध के दौरान अमेरिकी परमाणु-अड्डों के निर्माण और विकास पर यह दस्तावेज गहरी रोशनी डालता है, यहां तक कि परमाणु-विरोधी देश डेन्मार्क के उपनिवेश ग्रीनलैंड में भी अमेरिकी साम्राज्यवाद ने परमाणु अस्त्रों का जखीरा खड़ा कर रखा है। दुनिया को परमाणु बमों के हमले की धौंस में रखने की अमेरिका की सरगर्मियों का यह रिकार्ड है। अगस्त 1945 में, जापान सरकार के आत्मसमर्पण हेतु तैयार रहने के स्पष्ट संकेतों के बावजूद अमेरिकी साम्राज्यवाद ने अपने एटम बम हिरोशिमा और नागासाकी पर गिराये थे, हम इस घोर गंगी वास्तविकता से बेखबर और अनजान बने नहीं रह सकते। जापान द्वारा कब्जाये मंचुरिया में तेजी से कदम रखती बढ़ती लालसेना को डराने के इरादे से भी इन बमों को गिराया गया था। बाद में, पहले सोवियत संघ और फिर चीन द्वारा परमाणु क्लब में प्रवेश करने की वजह से अमेरिका एकाधिकार के नुकिले दांत गवा बैठा। फ्रांस, ग्रेट ब्रिटेन तथा कुछ और पश्चिमी देशों ने भी जल्दी ही परमाणु हथियारों के स्वामी हो गये। इन देशों से परमाणु आपूर्ति तीसरी दुनिया के कई देशों को पहले ही की जा चुकी है। अंतरराष्ट्रीय एटमी उर्जा एजेंसी के मुताबिक आज की स्थिति में 50 से ज्यादा देश परमाणु अस्त्र रखते हैं। अमेरिका में अवस्थित सप्लाइकर्ताओं द्वारा ही अब कानूनी तथा गैर कानूनी परमाणु-आपूर्ति-व्यापार ज्यादातर नियंत्रित है। फिर भी अमेरिका जिनका सिरमौर है, ऐसी महाशक्तियां ऐसी परिणामों से भयभीत है। जब परमाणु हथियारों के जखीरे ऐसे राज्यों और बलों के हाथों में पहुंच जाएं जो उनकी हुकम शायद न मानें। इसी के चलते परमाणु रंगभेद की नीति और के परमाणु प्रतिष्ठान के लिए अमेरिकी धनपतियों द्वारा परमाणु-आपूर्ति सुनिश्चित करने

के लिए भी है। 2006 में जब भारत के प्रधानमंत्री ने अमेरिकी राष्ट्रपति के साथ भोजन किया। परमाणु व्यापारियों ने भी उस बड़ी दावत में मौजूद रह कर अपनी उपस्थिति सुस्पष्ट तौर पर महसूस करा दी। एक भारत-अमेरिका व्यापार संघ ने तो अमेरिकी कांग्रेस में परमाणु अधि नियम पारित करवा लेने के लिए पहले भी की, उस कार्पोरेट लॉबी (निगम गुट) का एकमेव उद्देश्य परमाणु आपूर्ति का निर्यात कर हजारों करोड़ डॉलर के भारी मुनाफा बटोरने का था। पिछले कुछ समय से भारत के दौरे के लिए उड़ानें भर रहे हैं। अमेरिकी उप-सचिव के साथ ऐसी परमाणु-आपूर्ति का सौदा करने के लिए पहले ही 225 अमेरिकी व्यापार-प्रतिनिधि भारत आ कर गये हैं। जनरल इलेक्ट्रिकल एनर्जी, न्यूक्लियर एनर्जी इंस्टिट्यूट आदि सरीखे अमेरिकी व्यापार-गृह जल्द ही फलते-फूलते भारतीय परमाणु बाजार हथिया लेंगे। ऐटमिक एनर्जी ऐक्ट 2006, इस तरह न केवल भारत को अमेरिका के शिकंजे में बांध देता है, बल्कि साथ ही भारत का परमाणु बाजार भी अमेरिकी अरबपतियों के कब्जे में सौंप देता है।

संसदीय 'वाम' के दोगले प्रतिमान

सी पी आई (एम) की अगुआई में भारतीय 'वाम' वाम शब्दजाल का इस्तेमाल करते हुए जनता को ठगने की कला में माहिरी हासिल कर चुकी है। पश्चिम बंगाल में, जहा शासक वर्ग ने सीपीआई(एम) के नेतृत्व वाले 'वाम' मोर्चे को बीस साल से ज्यादा समय से शासन करने दिया है। अमेरिकी नियंत्रण वाले विश्व बैंक, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और साम्राज्यवादी शोषक-लुटेरों को लूटने का मुक्त अवसर दिया गया है। सीपीआई (एम) अपने अमेरिकी आकाओं को बैरी नहीं बनाना चाहती हैं यह बात तब बिना किसी शक-शूबहे के स्पष्ट हो गयी जब पश्चिम बंगाल के कालीकुंडा में सन 2005 में भारत-अमेरिका वायु सैनिक संयुक्त अभ्यास हुआ। सीपीआई (एम) ने जाहिरा तौर पर काफी गर्जना तो की और एक विशाल रैली का भी आयोजन किया। जिसमें शामिल व्यापक जनता वास्तव में महज उक्त अभ्यास का बाल-सुलभ उत्कंठा से देखने वाली दर्शकों की भीड़ बन कर रह गयी, जब मुख्यमंत्री बुद्धदेव भट्टाचार्य ने नयी दिल्ली में प्रणव मुखर्जी को आश्वासन दिया कि वहां सिर्फ एक विनम्र दिखावा ही किया जायेगा।

सीपीआई (एम) की अगुआई में भारतीय

'वाम' की स्थिति उस स्तंभ के समान है जिसके सहारे कांग्रेस की संयुक्त प्रगतिशील गठबंधन सरकार आराम से जमकर बैठती है और पूरे जोर से अमेरिकी साम्राज्यवाद-परस्त आंतरिक और पारराष्ट्रीय नीतियों पर अमल कर ही है। अमेरिका-भारत परमाणु सौदे के सवाल पर इस कथित 'वाम' ने अपना संपूर्ण दिवालियापन और बेशर्म चेहरा दिया दिया है। सीपीआइ (एम) के परमाचार्यगण (सर्वोच्च नेतृत्व) ने प्रकट तौर पर इस सौदे का विरोध दिखलाते हुए भी प्रधानमंत्री से, भारत ने अमेरिका की आदेशों के आगे समर्पण किया है, इसका खंडन करने वाला वक्तव्य जारी करें, इस पर उन्हें राजी करने की चेष्टा में संधिवार्ता चलाते रहे। खुद प्रकाश कारत लिखते हैं कि "22 जुलाई को, यूपीए-वाम संयोजन बैठक के पहले वाम पार्टियों ने मिलकर तय किया कि परमाणु संधि (का मुद्दा) संसद में उठाया जाये और इस मुद्दे पर जरूरी है कि संसद अपनी राय व्यक्त करे। संयोजन-समिति की बैठक में यह स्वीकार कर लिया गया कि इस विषय पर कोई मत विभाजन वाला प्रस्ताव नहीं होगा.....।" (पीपुल्स डिमोक्रेसी) अगस्त 07-13, 2006) कैसा क्रूर मजाक है। देश की गर्दन पर अमेरिकी फंदा जबरन कस दिया जोयगा और जनता को अमेरिकी परमाणु व्यापार-धनपिशचों के आगे फेंक दिया जायेगा। पर फिर भी इस अत्यंत ही महत्वपूर्ण सवाल पर "कोई मतदान नहीं होगा....!" कुछ यूपीए की नीतियों के खिलाफ चिकनी-चुपड़ी विरोध की बातें बघारने और देखते ही देखते केंद्र में कांग्रेस के इस भानुमति के कुनबे के आगे बार-बार घुटने टेकने के इसके बनावट भरे रिकॉर्ड को देखते हुए कोई भी विवेकी व्यक्ति सीपीआइ (एम) की अगुआई वाले वाम मोर्चे की साम्राज्यवाद-विरोधी भंगिमाओं पर विश्वास नहीं करता यह तथाकथित वाम प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से यूपीए सरकार की सभी अमेरिकापरस्त भूमंडलीकरण की नीतियों का समर्थन ही करता है। सीपीआइ (एम) के महासचिव प्रकाश कारत ने एक गैर-सरकारी टेलिविजन चैनल से सितंबर 2006 के मध्य में कहा कि केंद्र सरकार और वाम के बीच की दूरी सरकार की आंतरिक और विदेश नीतियों के निर्माण में उस (वाम) की भूमिका के चलते घट मयी है (17 सितंबर 2006, आनंद बाजार पत्रिका)। जब अमेरिकी साम्राज्यवाद के साथ परमाणु समझौते का मुद्दा राजनीतिक रंगमंच पर केंद्रीय सवाल बन कर उभरा। तब कारत की टिप्पणियां और वास्तविक कार्यकलापों ने यह

वस्तुपरक प्रमाणों के साथ साबित कर दिया कि ऐसे नकली वाम ने असलियत में परमाणु-सौदे को स्वीकार कर अमेरिकी साम्राज्यवाद के लौह शिकंजे के आगे दबूपन के साथ आत्मसमर्पण कर देने के लिए ही परदे के पीछे से काम किया है। यह केवल संयोग इत्तेफाक नहीं, अमेरिकी कांग्रेस द्वारा परमाणु विधेयक पारित कर दिये जाने के तुरत बाद जब पत्रकारों ने यह सवाल उठाया कि क्या सीपीआइ (एम) इस अधिनियम के विरोध में है, तो कारत ने जवाब देने से इंकार कर दिया और सीताराम येचूरी ने बिना लाग-लपेट के कहा: "हम न तो इस समझौते का विरोध कर रहे हैं, और न ही समर्थन। परिस्थितियों का ख्याल रखते हुए निर्णय लिये जायेंगे।" (आनंद बाजार पत्रिका 12-12-2006) संसदीय 'वाम' खासकर, सीपीआइ (एम) की विश्वासघाती भूमिका की और विस्तार से व्याख्या की अब और कोई जरूरत नहीं है।

परमाणु रिएक्टर: सच्चा जहर

मानव सभ्यता के अस्तित्व ही के लिए समूची दुनिया के परमाणु अस्त्रों को नष्ट कर देना एक बुनियादी जरूरत है। भारत में एक शक्तिशाली गुट है जो विशाल पैमाने पर परमाणु बिजली के इस्तेमाल की पैरवी करता है। ऐसी बिजली के दीर्घकालीन फायदों के बारे में एक मिथ्या धारणा फैलायी जाती है। आज की तारीख में भारत में ऐसे परमाणु-बिजली उत्पादन केंद्रों की संख्या 16 से कम नहीं है, जो कार्यरत हैं। यह ऐसा क्षेत्र है जिसकी असली कार्यकलापों के बारे में कोई सरकार विवरण नहीं देती है। ऐसी बिजली के उत्पादन पर हजारों करोड़ रुपये मुक्तहस्त खर्च किये जा रहे हैं। और मुद्रा-संसाधनों की ऐसी फिजूलखर्ची के बावजूद इतने वर्षों के बाद भी देश के समूचे बिजली उत्पादन में परमाणविक बिजली का हिस्सा बमुश्किल 2% पार कर सका है। ज्यादा चिंताजनक बात उस परमाणु कचरे से जुड़ी है जिसका विशाल ढेर रेडियो-धर्मिक है। यह परमाणविक निक्षेप ऐसा है जिसमें 80% रेडियो धर्मिता का गुण होता है। कई शोधकर्ताओं के अध्ययनों से यह ताइद हुई है कि रेडियो धर्मिता वाले तत्व मानव जीवन, जीवजंतु और वनस्पतियों पर चिरस्थायी विनाशकारी प्रभाव डालते हैं। परमाणु रिएक्टरों के बारे में संशयात्मक गोपनीयता की व्यवस्था के बावजूद जब-तब दुर्घटनाओं की खबरें रिस-छन कर, जनता के लिए त्रास का पर्याय बन कर आती ही रहती हैं। परमाणु ऊर्जा के लिए भारी पूंजी निवेश की

जरूरत है। अतः अगर हम बिजली उत्पादन की कमी से उबरना चाहते हैं तो फिर तो यह एक भयंकर विलासिता है। पहले ही भारत में 16 परमाणु बिजली संयंत्र स्थापित किये जा चुके हैं। अमेरिका-भारत परमाणु सौदे से

संबंधित सीपीआइ (एम) के किरदार का बयान ऊपर के परिच्छेद में किया जा चुका है। परमाणु बिजली संयंत्रों के बारे में भी अब उसने खुद को बेनकाब कर लिया है। पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री ने पूर्वी मेदिनापुर के हरिपुर पर, बिजली संकट से उबरने के नाम पर, एक और परमाणु बिजली संयंत्र स्थापित करने के इरादे से अपनी गिद्ध-दृष्टि केंद्रित की है। अपने इस वहसी कदम के तहत उन्होंने घोषित किया है: "विरोधों के बावजूद जो भी प्रतिरोध हो हमें परमाणु बिजली घरों की स्थापना करनी ही होगी" (गणशक्ति 25-11-06)। प्रस्तावित बिजली घर के बारे में मुख्यमंत्री घृणित झूठ का पुलिंदा भी परोस दिया: "ढेरों भ्रातियां फैलायी जा रही हैं। ऐसी मिथ्या जानकारियां परोस दी जा रही हैं कि परमाणु बिजली उत्पादन मछलियों को मार देगा, पानी को दुषित करेगा..... (गणशक्ति, 20-11-06)। यह एक खतरनाक मानसिकता है और हमें यह याद रखना होगा कि कई पश्चिमी देश भी अब परमाणु बिजली घरों को उनके भयंकर परिणामों के मद्देनजर बंद कर देने के बारे में गंभीरता से सोच रहे हैं। और यहां हमें यह जोड़ना ही पड़ेगा कि भारत में, खासकर भारत के साथ परमाणु संधि के बाद तो, कोई भी परमाणु ऊर्जा स्टेशन अमेरिका की बाज जैसी जासूसी नजरों से बचकर काम नहीं कर सकता।

भारत अमेरिका सैनिक संधि, खासकर अमानजनक परमाणु-समझौते के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था, संस्कृति, प्रतिरक्षा एवं अन्य अहम क्षेत्रों पर अंकल सैम का नियंत्रण अत्यंत प्रभावी हो जायेगा। विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी अमेरिका की अगुआई वाली अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं ने पहले ही भारत को अपने ऑक्टोपस-सदृश्य जकड़ में ले रखा है। यह एक खतरनाक हालत है भारत की जनता की क्रांतिकारी विरासत हम सब पर एक विराट साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष निर्मित और विकसित करने और देसी-स्वामियों को अमेरिका-भारत परमाणु समझौते को नष्ट करने के लिए बाध्य करने की जिम्मेदारी डालती है। भारत के क्रांतिकारी और जनवादी आंदोलन के लिए युद्धघोष है: अमेरिका-भारत सैनिक संधि मुर्दाबाद !

बीके के सम्मान में

किसी भी दुसरे दिन की ही तरह शुरू हुआ वह दिन। भोर की पक्षियों का कलरव, कोहरा..... सब कुछ वैसा ही था, जैसा दिसंबर के अंत में किसी सुबह होना चाहिए, बेशक, विश्वव्यापी तापमान वृद्धि या 'ग्लोबल वार्मिंग' के कारण जो बदलाव आया हो, उसे भुला दें। ऐसी कोई बात न थी जो मुझे उस सर्वनाशी खबर के लिए तैयार कर देता। अखबारों में भी पिछले दिन ऐसे कोई प्रश्नचिह्नित समाचार नहीं थे कि 'कोई कहीं गिरफ्तार कर लिया गया है और उसे 'पेश किया जाय' और न ही कोई आंतरिक जानकारी कि 'अमुक कामरेड मिलने वाला था, पर चूक गया। हम चिंतित हैं'। इत्यादि। पिछली रात मैंने एओबी के सचिव भास्कर की चिट्ठी का जवाब लिखने की बात सोची थी। तुरन्त यह ख्याल भी आया कि बीके को भी कुछ लिखे बिना मैं कैसे रह सकता था। इसलिए मैंने सोचा कि एक ही चिट्ठी में उन दोनों को लिखूंगा। उन कामरेडों की मधुर यादों और उन बातों के बारे में सोचते हुए, जिन्हें कहीं लिखना मैं न भूल जाऊं, चेहरे पर एक मुस्कान लिए मैं सो गया था। सुबह के व्यायाम के बाद मैंने अपनी कॉफी का प्याला उठाया और टीवी 'ऑन' कर कागज-कलम लेने ही चला था कि 'स्कॉल' में समाचार चैनल पर आ रही खबर ने मेरा ध्यान आकर्षित किया।

क्या?

वडकापुर चंद्रमौली का नाम वहां क्यों आ रहा है?

नहीं

नहीं

नहीं

यह नहीं हो सकता..... ऐसे बहुत थोड़े ही अवसर होते हैं, जब ऐसे नेताओं के नाम यूं उछल सकते हैं..... क्या यह "वही" है?

लेकिन, क्या यह सच है? रूको, रूको, मुझे ठीक से सुनने दो, कोई कह रहा है कि उन्हें लगता है कि यह वही है, पर यह कोई और भी हो सकता है..... फिर एक बार मेरा शरीर कसाव से तन गया..... पर मैं जानता हूँ कि यह पुलिस का दांव-पेंच रहा है कि किसी और का नाम घोषित कर दे ताकि यह एक सच्ची मुठभेड़ लगे, और उनके लिए यह पहचानना 'कठिन' था कि वह कौन था!! वे जहां तक मुकद्दिम होता, खबर देने में देर करते, तत्काल शुरू होने वाली प्रतिकारात्मक कार्रवाइयों को यथा संभव निष्फल करने के इरादे से। सो, मैं उत्तेजित, तनावग्रस्त और भयभीत होता चला जा रहा था।

मेरा सर चकराने लगा। मैं जानता था कि बीके की जगह कोई और कामरेड होता,

तब भी यह बड़ा ही दुःखदायी होता, पर अगर यह वही था तब? आगे क्या हो सकता है? मैं निढाल हो एक कुर्सी पर ढह गया और मेरी आंखें, जो पर्दे पर दौड़ते स्कॉल पर चिपकी सी थीं और मेरे कान जो इस अनहोनी को सुनने के लिए खड़े हो गये थे, मेरे शरीर का कोई दूसरा अवयव काम नहीं कर रहा था।

अब अपरिहार्य खबर मुझ पर गाज सी गिरी

बेहद गंभीर चेहरा लिए समाचार वाचिका ने घोषणा की-विशाखा एंजेंसी इलाके जंपारलोवा अंचल में एक मुठभेड़ हुई और भाकपा (माओवादी) के केंद्रीय सदस्य वडकापुर चंद्रमौली और उनकी पत्नी कविता मृतकों में शामिल हैं, उनके पास से प्राप्त हथियार.....

पर हथियारों के विवरण या वह क्या कह रही थी, मेरे कानों में प्रवेश नहीं कर रहे थे..... मेरी आंखों के आगे अंधेरा छा गया..... मेरे मस्तिष्क में शून्य सा छा गया। कागज-कलम मेरे हाथों से खिसक कर गिर गये। कविता.....

अब मैं 'मुठभेड़' की तफसील देते एस पी के क्रूर चेहरे को देख रहा हूँ। मेरी अनुभूतियां सुन्न-निस्पंद होती जा रही थीं, पर भीतर हर कोशिका चीख कर कह रही थी 'यह झूठ है'। मैं जानता हूँ कि वह कहीं जाने के लिए यात्रा कर रहा था, पर क्या करूणा को भी उसके संग रहना था? कुछ ही दिनों में, या शायद एक ही दिन में (कौन कह सकता है?) वह वहां जा पहुंचता, सशस्त्र साथियों की सुरक्षा में, चर्चा करता, सुनता, बोलता, हंसता, गाता, नाचता, खेलता, कैप में हर एक कामरेड के साथ घुल मिल जाता.....

ओह, उन्हें किस तरह यातनाएं दी गयी..... करूणा..... मेरी प्यारी बहन..... वह किन यंत्रणाओं से गुजरी होगी? उसकी उस दुर्बल काया के साथ वह? वीके? क्या वह सचमुच ही अब नहीं रहा? क्या यह सच है कि हमारे जन-संग्राम ने अपना सब से बेहतर कमांडर गवां दिया है? यहां बैठी यह सब कुछ सुनता हुआ क्या यह मैं ही हूँ? या कि मैं एक भयंकर दुःस्वप्न से गुजर रहा हूँ?

चैनल ने बीके का एक पुराना-व्याकुल कर देने वाला फीका सा छाया चित्र दिखाना शुरू कर दिया है, किसी हथियार से निशाना बांधते हुए उसका क्लोज-अप वाला छायाचित्र। ऐसी मग्नता के साथ निशाना साधती वो चुमने वाली नजरें, 1995 में मैंने जब उसे पहली बार देखा था, उससे कहीं कम आयु। उसके पहले ही खींची गयी तस्वीर होगी जरूर। समाचार वाचिका उसके जीवन का संक्षिप्त ब्योरा देती है, कहती है, उसने 25 वर्षों से अपना जीवन जनता को समर्पित कर दिया, पहले वह रैडिकल स्टूडेंट्स यूनियन (आर एस एफ) में शामिल हुआ। फिर उसने देहाती गरीब मजदूरों को संगठित किया और जमींदारों के विरोध में कई संघर्षों का नेतृत्व किया, अपने गांव में स्कूल के कमरे तथा सभा-समावेशों के लिए मंच के निर्माण जैसे कितने ही विकासपरक काम किये। इसके बाद उसी की अगुवाई में पुलिस डैप्युटी स्युपरिंटेंडेंट बुच्चरेड्डी का सपाया भाकापा (माले) (पीपुल्स वॉर) की एक टीम ने किया। बदले के तौर पर आंध्र प्रदेश सिविल लिबर्टीज कमेटी के उपाध्यक्ष झापालक्ष्मा रेड्डी का पुलिस ने कत्ल कर दिया। चंद्र मौली के परिवार को भी निशाना बनाया गया, इस पर उसका परिवार ने गांव छोड़ दिया और चंद्र मौली मान्यम, जिस नाम से दस एंजेंसी इलाके को जाना जाता है, चला गया। वह एक साधारण सदस्य से (पार्टी की) सर्वोच्च संस्था -केंद्रीय कमेटी- के स्तर तक विकसित हुआ, पीपुल्स वॉर और एम सी सी आई के विलय के लिए उसने अहम भूमिका निभायी। वह एक दक्ष फौजी नेता था, कि उसकी मृत्यु माओवादियों के लिए एक जोरदार आघात है, जो इन दिनों एक बुरे दौर से गुजर रही है,

इत्यादि-इत्यादि। पर प्रचार माध्यम 1987 में आइ ए एस अधिकारियों के अपहरण कांड की बात कैसे चूक गयी? इतने में वह प्रमुखता से यह कहने लगी है कि आइ ए एस आफसरों के अपहरण का सनसनी खेज कांड, जो देश में अपनी किस्म का पहली घटना थी, उसे और दूसरों को छुड़ाने के लिए घटित हुआ था और परिणामस्वरूप उन्हें मुक्त भी कर लिया गया था।

फिर चेहरे पर दुःख की झलक लिए वह घोषित करती है कि वड़कापुर गांव की जनता अपने सबसे योग्य और मशहूर सुपूत की मृत्यु पर शोकाकुल है, उसकी मौत की खबर ने समूचे जिले में दुःख और संताप की लहर फैला दी है.....

मैं यांत्रिक रूप से सुन और देख रहा था। देख रहा था। देख और सुन तो रहा था, पर फिर खबर दर्ज हो रही थी पर साथ ही वह 'भीतर' उतरने से मुकर भी रही थी।

अचानक एक और बुलेटिन शुरू हुआ। अब मैं देख रहा हूँ कि एक ट्रक आ खड़ा हुआ। फौजी वर्दी में पुलिस, फौजी टोपियां, पिट्टू-झोले, हथियारों से लैस पुलिस पीछे का किवाड़ खोल रहे हैं। मेरा हृदय एक क्षण के लिए थम सा गया..... ओह, वे अब उसकी मृत काया बाहर निकाल रहे हैं। मैं उसके जूते देख पा रहा हूँ। पेड़ों की डालियों से बनाये गये स्ट्रेचर पर रस्सियों से उसका शरीर कसकर बांधा गया है, उसे उतारा गया, अब एक और लाश, मैं चप्पलों को देख पा रहा हूँ। मैं अपनी आंखें मूंद लेना चाह रहा था। भले ही मैं इस बात से वाकिफ था कि कुछ ही पलों में सच्चाई मेरे आगे एक छुट्टे दैत्य की तरह आ खड़ी होगी। पर मैं वहीं विस्फारित नेत्रों से, बिना पलक झपकाये ताकता रहा, जब कैमरा उन लाशों पर मंडरा रहा था।

हां, विलाशक, ये वे ही थे

अपने आप को छलने की संभावना से परे, मैं उन्हें अच्छी तरह जानता था। मैं उन्हें अच्छी तरह जानता था। मैं नहीं जानता कब मेरी आंखों से कब आंसुओं की धारा बह निकली थी और कब वह थमी (अगर थमी हो)। मैं बस यही जानता था कि बीके और करूणा मेरे सामने निश्चल पड़े थे, मानों मैं सिर्फ हाथ बढ़ा दूँ तो उन्हें छू पाऊंगा.....मैं उन्हें छू लेना चाह रहा था, मैं तेलंगाना की उन महिलाओं की तरह रोना चाहता था जो एक ही साथ रोते और गाते हैं, रोते और गाते, अपने प्रियजनों के शरीर को छूते, बाल विखेर कर, जमीन पर लोट-पोट कर, अपने हाथों से धूल फेंकते हुए.....रोना चाहता था उन हत्यारों की लानत-मलामत करता.....

बीके एक बिना बाहों वाली स्वेटर, सामान्य सा शर्ट पहने था, जिसकी हल्की नीली धारीदार बांहों भीतर से दिखलाई पड़ रही थीं। करूणा साड़ी और पूरी बाहों वाला स्वेटर पहने थी जिन पर से एक शाल ओढ़ा हुआ था।

एक अल्प से पल के लिए कैमर ने उनके चेहरे दिखाये मैं रो पड़ा।

उनकी आंखों विस्फारित खुली थीं।

वो क्या कहना चाह रहे थे?

क्या वें अपने अंतिम विचार हमें बतलाना चाह रहे थे?

अपनी नज़रों के सामने बीके को गिरफ्तार होते देख करूणा को कितना बड़ा सदमा पहुंचा होगा, जब उसे एहसास हुआ होगा कि अब वह और न रहेगा, तब वह किस कदर टूट गयी होगी, खुद अपनी गिरफ्तारी से भी बड़े आघात से, अपनी आसन्न मृत्यु की संभावना से भी ज्यादा दुःखी, विचलित। इस से बड़ी यंत्रणा भला दूसरी क्या होगी?

उसे याद आया होगा

ए ओ बी इलाके के सभी गांव, और वे सभी लोग जिनके लिए उसने काम किया है

असंख्य रोगी, जिनकी उसने सेवा की

आदिवासी महिलाएं जिन्हें उसने संगठित किया

उसके वे तमाम भावी काम की योजनाएं

उसके न होने पर उन योजनाओं पर कैसा असर होगा

उसे याद आया होगा। उसने याद किया होगा

उसकी मां को, पिता को, उसके परिवार को, अपने भाई-बहनों को.....

उसके बालपन के संगी-साथियों को

उसके मरीजों को जब उसने नर्स के तौर पर काम किया

उस लेडी डॉक्टर को जिसने मरीजों की समर्पण के साथ सेवा करने के कारण तारीफों और छोटे-छोटे तोहफों की उस पर बरसात की थी

उसने जिन विभिन्न डेनों की व्यवस्था की थी वहां के तमाम उसके पड़ोसीयों को जिन्होंने महज उसके प्यार भरे और मददगार स्वभाव के कारण उसे

प्यार किया

उसने जरूर याद किया होगा

अपने पहले प्यार को, अपने प्रिय पति महेंदर को जो कुछ वर्षों पहले शहीद हो गया था।

इस मृत्यु की भारी त्रासदी से वह कैसे उबर पायी

कैसे वह इसका बदला लेने को कटिबद्ध थी

कुछ वर्षों बाद बीके से उसका विवाह

दोनों ने जो प्रेमभरे क्षण साथ बिताये थे

और अब उसकी आखों के सामने उसके चूर-चूर हो जाने की बात.....

और बीके?

कुछ घंटों पहले इन खुली आंखों के पीछे क्या चल रहा होगा? उसके दिमाग में क्या कुछ चल रहा होगा? और कितना कुछ?

मुझे अचानक याद आया, कोपरडांग मुठभेड़ के बाद जब हम उससे मिले थे तब उसने क्या कहा था वह हम सबके लिए एक बड़ी चोट थी, इसलिए जो उसमें से प्रत्यक्ष अनुभवों का विवरण सुना, शहीद कामरेडों के बारे में हमारी साझा यादें, साझा दुख बांटा। जब सब चले गये, एक ऐसे नाजुक क्षण में, जब हम हमारी सबसे गहरी भावनाओं को उच्चस्वर में मुखरित करते हैं, उसने कहा, 'मैं चहता था कि उनकी जगह मैं मर गया होता, मेरी नज़रों के सामने उन्हें जान देते देखना इतना दर्दनाक था, और तुम पदमा को जानते हो, वह तो मेरी बगल ही में थी, मैंने उसे धाराशायी होते देखा.....' मुझे अब तक स्मरण है किस तरह वह सिहर उठा था।

करूणा को अपने साथ गिरफ्तार होते देखते उसे कैसा महसूस हुआ होगा? पर ऐसे नाजुक/निर्णायक मोड़ पर उनकी मौत से आंदोलन को जो हानि होगी उसके बारे में सोचते हुए भी वह (अफसोस से) तार-तार हो गया होगा या फिर वह जिस स्थिति के मुकाबिल था, यह स्वीकार करते हुए कि हर क्रांतिकारी को अपने जीवनकाल में किसी बिंदु पर (क्रांति की सफलता तक तो) जिसका सामना करना पड़ता है, यह वही क्षण है मान कर अपने जीवन की कहीं समीक्षा तो नहीं कर रहा था? बड़े आत्मविश्वास से कि जो कुछ रह गया, उसके कामरेड और क्रांतिकारी जनता उन्हें आगे ले जायेंगे? वह जरूर यह सोच कर क्रोध से भर उठा होगा कि दुश्मन ने फिर एक बार भारी जीत हासिल की है। क्योंकि वह जानता था, जब उसके कामरेड, वह भी वरिष्ठ नेता, जो आंदोलन के लिए बेहद अहमियत के थे, शहीद हो गये थे, वह खुद उस एहसास से गुजर चुका था।

दोनों शरीर अगल-बगल रखे थे, कुछ लोग वीडियो उतार रहे थे, कुछ तस्वीरों खींच रहे थे। मैं उसकी टुड्डी, उसके उन जबड़ों को देख पा रहा हूँ जिन्होंने उसके चेहरे को एक दृढ़ निश्चयी रूप दिया था। मैं एक सच्चे छापामार की काया देख रहा था जिसने हर मायने में कठोर दिनचर्या से उसका निर्माण किया था। मुझे याद आया कि एक सिहरन देने वाली, ठिटुरन भरी ठंडी सुबह साथ के कामरेडों की चिंताओं के बावजूद, सीधे माओ से प्रेरणा लेते हुए-अपने शरीर को फौलादी बनाने की चाह से - ठंडे पानी में नहाने चला था। यह कोई अपवादात्मक-अलहदा वाक्या न था, उसने अपने जीवन को जिस अनुशासन में ढाला था, यह उसका महज एक छोटा सा हिस्सा भर था - क्योंकि हम युद्धरत हैं, इससे कुछ भी न तो कम न ही ज्यादा। बस यह यही तो था। एक समर। इस तथ्य को आत्मसात करने में उसके जीवन से उम्दा मिसाल बहुत कम ही हैं।

इस देश के क्रांतिकारी आंदोलन ने जिसका निर्माण किया है, ऐसे बेहतरीन फौजी मस्तिष्कों में से एक को मैं वहां लेटा देख रहा था। जो दुश्मन के खिलाफ और अधिक खतरनाक विन्यास सोचने से हमेशा-हमेशा के लिए रोक दिया गया है।

इस 'विजय' से आया असीम हर्षोन्माद एस पी के समूचे चेहरे पर पुता है। वह बेशर्मी के साथ उस मुठभेड़ की कथा देहराये जा रहा था जिसे श्रीकाकुलम के दिनों से ही पुलिस हजारों बार कहती आयी है। वह केवल बेशर्मा भर नहीं था। उसकी समुची भाव-भंगिमा में ही कोई और ऐसी बात थी जो मुझे बेचैन, बहुत आकुल कर रहा था। कुछ ऐसा..... कुछ ऐसा..... मैं ठीक से समझ नहीं पा रहा था। जवाब मुझे अगले दिन तब हमारे प्रियतम नेताओं बीके और करूणा को पुष्पांजली देने की 'हिम्मत' उसने की। उसका ख्याल ही!!! मैं नहीं समझता कि नाजियों, या आज के अमेरिकी नाविक (मेरीन्स) फौज या कहने के लिए कोई भी क्रूरतम शत्रु ने उस शख्स के लिए ऐसा कुछ करने का प्रयास किया है जिसकी हत्या उन्होंने ठंडे दिमाग से की हो! अपनी आंखों में एक दुर्भावनापूर्ण चमक के साथ, एक ऐसी 'सोची-समझी/ओढ़ी हुई क्रूरता के साथ जिसका दर्शन 'भिन्नतापूर्ण अभिनय' के नाम पर हमें हमारे फिल्मी खलनायकों में होता है, वह कह रहा था - 'वे हमारे दुश्मन रहें होंगे जब वे जीवित थे, पर अब जब वे निष्प्राण हैं, हम उनका सम्मान करते हैं। मैं उनका कद्र करता हूँ कि उन्होंने जतना के लिए काम किया। पर उन्हें ऐसा लोकतांत्रिक ढंग से करना चाहिए। जनतंत्र में वे हथियारों के साथ यह नहीं कर सकते उसके अल्फाज कुछ का रहे थे, उसकी आंखें कुछ और ही संदेश दे रही थीं। मैं तमाम कोशिशों के बावजूद थरथरा रहा था। बढ़ती जाती सड़ांध से बजबजाता साम्राज्यवाद ही केवल ऐसा कुछ सोच सकता है? पर्दे पर स्कॉल पर दौड़ते अक्षर कह रहे थे: विरसम ने पुलिस द्वारा दी गयी इस पुष्पांजली की भर्त्सना की है। चलसानी प्रसाद को इसकी भर्त्सना करते हुए दिखलाया गया। उन्होंने कहा कि साम्राज्यवादी जो कर रहे हैं, यह उससे कुछ भिन्न नहीं है, पहले जनता पर बमबारी और फिर खाने के पैकेट गिराना।

मैंने अब तक जो देखा था उनमें यह सबसे बेतुका था। सिर्फ एस पी ही नहीं दूसरे पुलिस अधिकारी भी उनके मृत शरीरों पर फूल रख रहे थे। कितनी हिम्मत? मेरा खून खौलने लगा। किसी भी दूसरे क्रांतिकारी का भी यही हाल होता। क्रांतिकारी ही क्यों, किसी भी ईमानदार सामान्य व्यक्ति भी खून खौल उठता! क्या उसने यह खास कदम उसे अपमानित करने के लिए उठाया, चूंकि वह हमारी केंद्रीय फौजी कमीशन (सी एम सी) का सदस्य था? कि वह ऐसा जीते जी किंवदंति बन चुका फौजी नेता था? या कि नकली मुठभेड़ की गहन्य कार्रवाई पर पर्दा डालने हेतु वह अति-चतुरता दिख रहा था?

समाचार चैनल अब एक फीका पड़ चुके बोर्ड - जिस पर 'वड़कापुर' गांव का नाम लिखा था को पृष्ठभूमि में रख कर दुःखी और विषादपूर्ण ग्रामीणों के चेहरे दिखा रहा था। एक कमजोर उम्रदराज महिला का दिखाया जा रहा था। जिसका रोना थामे नहीं थम रहा था। यह जरूर बीके की मां मानेम्मा होगी। मैंने उसके चेहरे पर बीके के निशान ढूँढने का अनायास प्रयास किया। आंखें?

रिपोर्टिंग जारी है। गांव के लोग याद कर रहे हैं कि जब वह महज छात्र ही था, तभी उसने गांव की क्या क्या सेवाएँ की...../ वे उसके मृतदेह का इंतजार कर रहे थे..... ताकि अपनी अंतिम सम्मान-अर्पण कर सके!

ए पी सी एल सी के टी श्रीराममूर्ति को इस झूठी मुठभेड़ की भर्त्सना करते दिखलाया गया। उन्होंने स्पष्ट कहा कि उन्हें दो दिन पहले उड़ीसा के संभलपुर में हिरासत में लिया गया था यंत्रणाएँ दी गयीं और हत्या कर दी गयी। अगली बार ए पी सी एल सी के बाल कृष्णा को स्पष्ट शब्दों में यह कहते दिखलाया गया कि यह तो स्वयं सिद्ध था कि यह झूठी मुठभेड़ का मामला था, उनके शरीरों पर यातनाओं के चिह्न थे, चंद्र मौली की कलाई और कविता की गर्दन पर यातनाएँ देने के निशान अपनी कहानी खुद कह रहे थे।

उसकी कहानी का जिक्र मुझे उस समस्या की याद दिला गया जब उसे स्पांडिलाइटिस हुआ-लिखने में कठिनाई की समस्या। पहले भी उसके अक्षर ऐसे थे कि हजारों में से पहचान लिया जा सके। स्पांडिलाइटिस होने के बाद वे और झुके-झुके और भी छोटे-बच्चों जैसे हो गये। वह कहता था कि कलम पकड़ने और लिख पाने में भी वह दिक्कत का सामना कर रहा था। पहले तो हमें अपने कानों पर ही विश्वास नहीं हो रहा था जब हमने सुना कि बीके को स्पांडिलाइटिस हुआ है। कहीं इसका मतलब यह तो नहीं कि जो कसरत नहीं करते और जो नियमित व्यायाम करते हैं, दोनों तरह के लोगों को यह बीमारी हो सकती है? पर वह तो वही था, कॉलर पहनना नहीं चाहता, पर पहनने को बाध्य था। वह एक कवि था। गीतकार भी और साहित्य की अन्य विधाओं में भी रचनाएं करता था। जिस शर्मिले अंदाज से वह अपनी रचनाएं कामरेडों के सामने पेश किया करता मुझे याद हो आया। एक अक्षय-कलम लेखक जो हमेशा लिखने की कोशिश में रहता और नये रंगरूटों को भी हुनर विकसित करने को उत्साहित करता। और अपने स्पांडिलाइटिस की समस्या के बावजूद वह लिखता रहा। स्वाभाविक ही था। और फिर किसी भी किस्म की विपदा के आगे बीके झुक जाये ऐसी अपेक्षा भी कौन कर सकता था भला? कोई नहीं।

करूणा के किसी एक रिश्तेदार को शवागार में बिलखते-शोक विह्वल दिखया जा रहा था पृष्ठभूमि में चंद्रमौली अमर रहे, करूणा अमर रहे के नारे फिजाओं में गूँज रहे थे। अखबारों में प्रकाशित खबरों से लगता है यह उसका बहनोई था। वह इस बावत से बेहद चिंतित था कि वह लाशों को कैसे ले जा सकेगा, उनके रास्ते में पुलिस जिन तमाम बाधाओं को खड़ी कर सकती है, उन आशंकाओं से बेहद आशंकित वह आंखों में आंसू लिए कह रहा था, “कम से कम अगर वे अब उनकी लाशें हमें समुचित ढंग से पैक कर सौंप दें तो वही काफी है।” कितना दुखद!! माधव और उसी घटना में मारे गये अन्य साथियों की लाशों को तीन दिन बाद, वह भी उनके और जनसंगठनों के द्वारा काफी आंदोलन के बाद उनके परिवारों को बेहद सड़ चुकी अवस्था में सौंपे जाने के बाद लोग अब ‘कम से कम शवों को समुचित ढंग से पैक कर सौंपने’ की मांग करने के स्वर तक उतरने को बाध्य हो गये हैं। इस षडयंत्र को उजागर करना होगा। शासन अब क्रमशः जनता को दोयम सवाल पहले करने के स्तर पर ला गिराते जा रहे हैं। उनका पहला सवाल होना तो चाहिए कि क्रांतिकारियों की इस वधशीपन के साथ हत्या करने का उन्हें क्या अधिकार है? उनकी प्रमुख मांग तो ऐसे ठंडे दिमाग से हत्याएं करने वालों पर मुकदमा चलाने की होनी चाहिए। शवों को बिना क्षतिग्रस्त किये, तत्काल सौंप देने का सवाल ऐसा मसला ही नहीं होना चाहिए जिसकी मांग करनी पड़े, जिस पर निश्चित अमल हो। वास्वत में, चैनल ने पूरी तरह नहीं दिखलाया कि रिश्तेदार क्या कह रहे थे।

अखबार सभी उक्त घटना से संबंधित रिपोर्टें और खबरों एवं वीके और करूणा की जीवनियों से अटे पड़े थे। बेहद सहानुभूति भरे। उनके समर्पण-भाव से चकित। मुठभेड़ पर शक किया जा रहा है के सांचे में ढाल कर जनता के समक्ष सच्चाई रखने की कोशिश करते से

शवों को अब सौंप दिया गया। शवदाह की व्यवस्था वड़कापुर में की जा रही है। अखबारों ने लिखा कि पुलिसिया हमलों में उनका घर ढहा दिये जाने के बाद यह परिवार गोदावरी खनी में जा बसा था। इस तरह, वास्वत में गांव में उनका अब कुछ भी नहीं है, पर अपने प्यारे नेता को अंतिम विदाई देने को, गांव के सबसे मशहूर सुपूत का अंतिम सम्मान करने को गांव के लोग कितने आतुर हैं, देखते हुए उन्होंने अंतिम संस्कार गांव में संपन्न करना कबूल किया था। गांव में पहंचने को बेताब जन-सैलाब को रोकने के कैसे-कैसे प्रयास पुलिस ने किये। और कैसे लोगों ने हर रूकावट को छिन्न-भिन्न कर, हर दरार से सिमटकर निकलते हुए अपना अंतिम सम्मान समर्पित करने के लिए शवदाह में पहुंचना जारी रखा!! एक और प्रसंग जिसे हर ऐसे मौके पर दोहराया जाता है। चैनल रिपोर्ट देते हैं कि चार किलोमीटर से भी ज्यादा लंबी रैली-शवयात्रा-हजारों की संख्या में लोग पहुंच रहे हैं, कई और हजार पुलिस द्वारा रोक लिए गये,स्कॉल दौड़ रहा है.....गदर गिरफ्तार.....फिर रिहा कर दिये गये.....

रक्त-पताका में लिपटे शव, फूलों से ढंक चुकी अवस्था में, क्रांतिकारी गीतों और नारों से गूँजते वातावरण में एक रैली में ले जाया गया। गदर को गीत गाते और अगुआई करते दिखलाया गया। हम एक बार फिर बीके की मां की झलक पाते हैं। अखबारों में रिपोर्ट आयी है कि चाडा विजयलक्ष्मी उर्फ करूणा के रिश्तेदार इतने गरीब हैं कि अंतिम संस्कार करने की स्थिति में भी नहीं हैं, और वड़कापुर के ग्रामीण उसका अंतिम संस्कार भी अपने गांव में करना चाहते हैं, क्यों कि गांव की बहू-बेटी होने के नाते वह भी उन्हीं की हुई। इस तरह दोनों शवों की चिताएं एक ही जगह बनायी गयी। एक ही साथ जलीं। अखबारों में और भी रिपोर्टें हैं, कि चंद्रमौली द्वारा गांव में निर्मित मंच आज भी है और गांव की जनता चाहती है कि सभा वहीं हो। कि उस के प्रयास से बनी कक्षाओं के कमरे भी मौजूद हैं।

अचानक समाचार वाचक को मैंने यह कहते सुना कि पुलिस ने हजारों लोगों को इस अंतिम यात्रा में हिस्सा लेने से रोका है। उन्होंने गोपना को भी रोका जो एक समय उसका सहकर्मी था, कि अब हमारा उनसे संपर्क हो गया है और वे फोन पर उपलब्ध हैं। विलाशक मैं उसकी आवाज सुन रहा हूँ-“शवयात्रा में शामिल होने से हमें रोकने की पुलिसिया करतूत की मैं कड़े शब्दों में भर्त्सना कर रहा हूँ। पुलिस इसमें हद से गुजर गयी है। हमने आत्मसमर्पण कर दिया था। हम अब कांग्रेस पार्टी में हैं। मेरी पत्नी तो अब कांग्रेस के किसी की ओर से जेड पी टी सी* की सदस्य है। पर हमें उनके हमारा अंतिम सम्मान देने नहीं दिया गया। हमें पुलिस ने रोक दिया। अगर यह कांग्रेस के किसी सदस्य के साथ होता है तब आप कल्पना कर सकते हैं कि औरों के साथ वे क्या कर रहे हैं। इस देश में कोई लोकतंत्र नहीं है। हम 13 बरस साथ काम करते रहे! 13 साल! उसकी लाश की एक अंतिम झलक पाने भर के लिए उसकी शवयात्रा में जाने की क्या हमें इच्छा नहीं होगी?.....मुझे महसूस हुआ कि मैं उसकी अवाज में उसके आंसुओं को सुन पा रहा हूँ..... समाचार वाचक ने पूछा-गोपना गारू, ऐसे बड़े नेता की मौत के कारण आंदोलन को कितनी बड़ी हानि हुई? -उसके भाव विह्वल उद्गारों पर ब्रेक सा लगाते हुए। वह कह रहा है, हां यह बड़ी क्षति है, पर तुरत उसे स्मरण हो आया कि उसे इन पहलुओं पर नहीं बोलना है, उसने विषयांतर करते हुए कहना जारी रखा- नहीं- पर मैं जिस विषय पर बोल रहा हूँ वह तो हमें जिस तरीके से रोका गया..... और दुबारा अपनी बात दोहराता है।

मुझे लगा कि मैं कल्पना कर सकता हूँ, आत्मसमर्पण कर चुके ये पति-पत्नी किस यातना से गुजर रहे थे। यही बीके की खासियत थी। एक बार आप उसके साथ काम कीजिए, और विकसित होने वाला बंधन भुलाना मुश्किल ही होता है। आपकी मदद करते हुए आपकी हिम्मतअफ़जाई करते, आपको प्रोत्साहित करते आपको वाहवाही देते। हमेशा ऐसे विनयशील होकर, उसके ऊंचे ओहदे के बावजूद काडर से कोई दूरी नहीं रखते हुए। अपनी शानदार

पृष्ठ 28 का शेष

(पी डब्लू) के नेतृत्व में किसानों के सामंतवाद व साम्राज्यवाद विरोधी संघर्षों की शक्तिशाली लहर का उभार देखा था। इस किसान उभार से प्रेरित व जागृत हो कर का. चन्द्रमौली ने सन् 1981 में पार्टी से सम्पर्क किया। उस समय वह एक जूनियर कालेज में इण्टरमीडिएट में पढ़ रहे थे। जल्दी ही उन्होंने रेडिकल स्टूडेंट्स यूनियन के नेतृत्व में छात्रों को संगठित करना शुरू कर दिया। उन्होंने सन् 1981 में ही गांव चलों अभियान में भाग लिया जो कि एक सालाना अभियान था जिसे पार्टी क्रांतिकारी छात्रों के लिए आयोजित करती थी। सन् 1982 में वे पेशेवर क्रांतिकारी बन गए। उस समय से अपनी शहादत के समय तक बीच के 25 वर्षों का उनका समूचा जीवन भारत की नवजनवादी क्रांति की विजय हासिल करने के उद्देश्य को एकाग्र रूप से समर्पित रहा।

प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल परिस्थितियों में परिवर्तित करने में समर्थ नेता के रूप में उदय!

1983 में का. चन्द्रमौली को पेढापल्ली क्षेत्र के एक ग्रामीण केंद्र सुल्तानाबाद के संगठनकर्ता के रूप में तैनात किया गया। उन्होंने बड़े पैमाने पर किसान जनता को गोलबंद करते हुए शीघ्र ही अनेक एतिहासिक किसान संघर्षों को संगठित किया व नेतृत्व दिया। 1985 तक करीमनगर जिले की समूची पार्टी कतारें उनके कठोर परिश्रम व नेतृत्कारी क्षमताओं से इतना ज्यादा प्रभावित

हो गई कि उन्होंने जिला सम्मेलन के दौरान उनके कई वरिष्ठों तक को छोड़कर उन्हें सर्वसम्मति से जिला कमेटी के लिए चुन लिया।

उस समय तक राज्य का सख्त दमन अभियान एक अघोषित युद्ध की स्थिति तक पहुँच गया था। पार्टी ने छापामार युद्ध को विस्तारित व तीव्र कर राज्य के हमले का मुकाबला करने की अपनी रणनीति के हिस्से के रूप में कुछ कार्यकर्ताओं को दण्डकारण्य भेजने का फैसला किया। तदनुसार का. चन्द्रमौली को आंध्र के पूर्वी घाट इलाके (पूर्वी गोदावरी व विशाखापट्टनम जिले के पहाड़ी क्षेत्रों से मिल कर बने) की जिम्मेदारियाँ संभालने को कहा गया जो तब दण्डकारण्य आंदोलन का ही एक भाग था। एक

सच्चे व समर्पित कम्युनिस्ट के रूप में का. चन्द्रमौली ने बेहिचक इस जिम्मेदारी को स्वीकार किया।

उसी समय जब उन्होंने नई जिम्मेदारी ग्रहण की थी, पूर्वी घाट में परिस्थिति बड़ी विकट थी। राज्य के सशस्त्र पुलिस बलों के अलावा तत्कालीन सी पी आई (एम एल) (पी डब्लू) के छापामारों को तत्कालीन चन्द्रपुल्ला रेडडी ग्रुप के कार्यकर्ताओं के हथियारबंद हमलों को भी झेलना पड़ता था। भौगोलिक स्थिति भी बहुत प्रतिकूल थी। वहाँ विभिन्न आदिवासी जनजातियों के लोग रहते थे जिनमें से प्रत्येक की अपनी अलग भाषा थी। परंतु का. चन्द्रमौली ने जल्द ही आदिवासी जनता व कार्यकर्ताओं के साथ गहराई से घुलमिल कर नई स्थानीय भाषाओं पर अच्छी पकड़ बना ली। वह अपने अनथक प्रयत्नों व समर्पित सेवा द्वारा जनता को तीखे सामंतवाद व राज्य विरोधी संघर्षों के लिए प्रेरित, जागृत व संगठित कर वहाँ मजबूत जड़ जमाने में समर्थ हो गए। उन्होंने अध्ययन व व्यवहार के जरिए जल्द ही उस क्षेत्र की स्थितियों पर मजबूत पकड़ बना ली। अपने कठोर परिश्रम व व्यवहार के बूते पर वह 1986 में रीजनल कमेटी के सचिव चुने गए। और 1987 में में सम्पन्न एक प्लेनम द्वारा बाद में रीजनल कमेटी के सचिव चुने गए। 1990 के दशक की शुरुआत में पूर्वी इलाके में क्रांतिकारी आंदोलन संकटग्रस्त हो गया। यह आंदोलन जो तब तक 5 दलम क्षेत्रों में जारी था, मात्र 2 दलम क्षेत्रों तक सिकुड़ गया। डिवीजन कमेटी बिखर गई। उच्चतर कमेटी की तरफ से कोई नियमित मार्गदर्शन नहीं था। का. चन्द्रमौली ने इन कठिनाइयों का ऐसी जबरदस्त दृढ़ता से सामना किया जैसा कि केवल एक समर्पित कम्युनिस्ट ही करने में सक्षम हो सकता है। अनथक प्रयत्नों व पूर्ण समर्पण से स्वयं के लिए उच्च व्यक्तिगत मानक निर्धारित करके कार्यकर्ताओं को प्रेरित, सक्रिय, आंदोलन को पुनः खड़ा कर दिया तथा इन जोरदार प्रयासों द्वारा उन्होंने कार्यकर्ताओं के बीच से दूसरी श्रेणी का नेतृत्व विकसित किया जिसने शीघ्र ही डिवीजन स्तर की जिम्मेदारियाँ संभाल लीं। यह उनके नेतृत्व व दूरदृष्टि के ही कारण संभव हो सका कि पूर्वी इलाके में आंदोलन नई उर्जा व ताजगी के साथ पुनः खड़ा हो गया।

वह सन् 1995 में सम्पन्न राज्य सम्मेलन में आंध्र प्रदेश राज्य कमेटी व इसके सचिवालय में चुन लिए गए जबकि पूर्वी रीजन को आंध्र प्रदेश आंदोलन का भाग बनाया गया। वह 2001 में सम्पन्न पार्टी की 9 वीं कांग्रेस में भूतपूर्व सी पी

आई (एम एल) (पी डब्लू) की केंद्रीय कमेटी में चुन लिए गए और केंद्रीय कमेटी ने उन्हें केंद्रीय सैन्य कमीशन में शामिल कर लिया।

गहरी विचाराधारात्मक और राजनीतिक समझ!

जीवन पर्यन्त अध्ययन व व्यवहार द्वारा का. चन्द्रमौली ने एक गहरी विचाराधारात्मक, राजनीतिक व सांगठनिक समझदारी अर्जित की थी। दो दशकों से भी ज्यादा समय तक छापामार युद्ध में खुद भाग लेकर पी एल जी ए के योद्धाओं को नेतृत्व दे कर उन्होंने सैनिक मामलों में गहन समझदारी हासिल की थी। चर्चा व बहसों के दौरान व अपने विचारों को स्पष्ट, सुव्यवस्थित व संक्षिप्त ढंग से पेश किया करते थे। वह अपने विचारों को दो-टुक ढंग से रखने में कभी भी नहीं हिचकाए। वास्तव में वह भारत की ठोस परिस्थितियों में एम एल एम के बुनियादी सिद्धांतों को लागू करने पर विशेष जोर देते हुए इनकी और गहरी समझ हासिल करने के लिए हमेशा प्रयासरत एक अनथक विद्यार्थी थे। उनकी पद्धति अध्ययन व क्रांतिकारी व्यवहार द्वारा अपने ज्ञान को उन्नत करने तथा सिद्धांत को ठोस व्यवहार के साथ मिलाने की थी और इस पद्धति के द्वारा उन्होंने स्वयं को पार्टी व जनयुद्ध की व्यावहारिक जरूरतों के विकास के साथ-साथ निरंतर विकसित किया।

एक असाधारण व साहसी कमाण्डर, कार्यनीतिकार और पी एल जी ए शक्तियों के प्रशिक्षक !

का. चन्द्रमौली अपने क्रांतिकारी कैरियर के एकदम शुरू से ही सैनिक मामलों में गहरी रुचि रखते थे। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से पी एल जी ए बलों के अपने योद्धाओं का प्रांतीय व केंद्रीय अर्द्धसैनिक बलों के साथ कई मुठभेड़ों, एम्बुशों (घात लगाकर किए जाने वाले हमलों), छापों तथा बड़े सैनिक अभियानों में नेतृत्व किया था। वह सिद्धहस्त कार्यनिर्तज्ञ थे। जिन्होंने पी एल जी ए बलों के विभिन्न कमाण्डों के लिए उनके कार्यनीतिक प्रत्याक्रमण अभियानों के लिए कार्यनीतियाँ सूत्रबद्ध की तथा उन्हें नेतृत्व दिया।

उन्होंने खास तौर से शत्रु बलों से हथियार पी एल जी ए बलों को हथियारबंद करने में महान भूमिका अदा की। पी एल जी ए बलों ने

कोरापुट, कलिमेला, व उदयगिरी जैसे जबरदस्त अभियानों के जरिए सैकड़ों की तादाद में विभिन्न किस्म के आधुनिक हथियार तथा हजारों की तादाद में गोली-बारूद हासिल किए, जिनकी योजना का. चन्द्रमौली के प्रत्यक्ष नेतृत्व में बनी और उन्हीं के प्रत्यक्ष नेतृत्व में जिन्हें पूरी कुशलता से अंजाम दिया गया। बारीक से बारीक ब्यौरे पर भी निगाह रखते हुए वह इतने कुशल थे कि ऐसी कार्रवाईयों में भाग लेने वाले छापामार अपनी सफलता के प्रति एकदम निश्चित रहते थे क्योंकि योजना उनके व्यक्तिगत निरीक्षण में बनी होती थी सैन्य प्रशिक्षक के रूप में ओर विभिन्न कार्रवाईयों में पी एल जी ए बलों के कमाण्डर के रूप में का. चन्द्रमौली ने एक प्रकार से नौ जवान कमाण्डरों की एक पूरी पीढ़ी को ही प्रशिक्षित व विकसित किया जो कि पी एल जी ए बलों के विभिन्न कमाण्डों का नेतृत्व करने में पूर्णतः समर्थ है।

विनम्रता उनकी पहचान

का. चन्द्रमौली का जीवन विनम्रता का मूर्त रूप था। जैसा कि का. माओ के एक सच्चे शिष्य को होना चाहिए। निचले स्तर की कतारों से लेकर पार्टी की सर्वोच्च कमेटी-केंद्रीय कमेटी व केंद्रीय सैन्य कमीशन तक उनके विकास की समूची अवधि में उनकी विनम्रता ने कभी उनका साथ नहीं छोड़ा। उन्हें एक कम्युनिस्ट के पूर्ण उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है जिसने उन गुणों को हासिल किया जिन्हें अर्जित करने के लिए का. माओ बारंबार कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित करते थे- जैसा कि सच्ची विनम्रता, अपने व्यक्तित्व को जंग लगने से बचने के लिए रती भर भी चापलूसी व आत्मप्रवंचना को कदापि इजाजत न देना। वास्तव में यह उनके स्वभाव की सादगी व सच्ची विनम्रता जैसे गुण ही थे जिन्होंने उन्हें, जिन क्षेत्रों में भी उन्होंने कार्य किया, वहां हजारों पार्टी कार्यकर्ताओं, पी एल जी ए बलों के योद्धाओं व कमाण्डरों और लाखों-लाख क्रांतिकारी जनता का चहेता बना दिया। लगातार बढ़ती जा रही क्रांतिकारी जिम्मेदारियों के बावजूद जिनमें उनका अधिकांश समय लगता था, जब भी कोई साथी उनसे सलाह मांगता था वह हमेशा कुछ उसे समय देने व उसकी बात सुनने के लिए तैयार रहते थे।

एक शब्द में, का. चन्द्रमौली ने एक क्रांतिकारी जीवन जिया तथा शहादत भी उसी अंदाज में दी जो एक महान कम्युनिस्ट क्रांतिकारी को शोभा देता है। निस्संदेह गिने-चुने किन्तु समर्पित

कम्युनिस्ट ही ऐसा जीवन जी सकते हैं जिस पर कोई एक मामूली दाग भी नहीं दिखा सकता। सैद्धांतिक मसलों में डटे रहना, राजनीतिक मसलों में दो टूक रवैया अपनाना, अपने जनाधार पर मजबूती से जमे रहना, एक सादा व विनम्र जीवन व्यतीत करना, कठिनाइयों से न घबराने व आत्मबलिदान के लिए तत्पर रहने की निजी मिसाल पेश करके दूसरों का नेतृत्व करना, समस्याओं के प्रति आलोचनात्मक नजरिया रखना, सैन्य कार्रवाईयों में साहस, वीरता व सृजनात्मकता प्रदर्शित करना और जनता के हितों को सर्वोपरि रखना- ये ही खास गुण हैं जो का. चन्द्रमौली को हमारे दौर के एक महान कम्युनिस्ट क्रांतिकारी के रूप में अलग खड़ा करते हैं। वास्तव में इस महान शहीद की स्मृति में सबसे बड़ी श्रद्धांजलि हर संभव तरीके से उसके क्रांतिकारी जीवन के प्रत्येक पहलू को अपने जीवन में उतारने की कोशिश करना है।

का. करुणा - जनता की एक क्रांतिकारी डाक्टर

का. करुणा (कविता, सत्यक्का) का क्रांतिकारी जीवन अपने जीवन साथी चन्द्रमौली की तरह ही बहुमुखी था। वह करीमनगर जिले के नवाबपेट गांव के एक किसान परिवार में पैदा हुई थीं जो क्रांतिकारी आंदोलन के प्रति हमदर्दी रखता था। उन्होंने सन् 1985 के लगभग क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय रुचि लेना शुरू किया। उनका विवाह जल्दी हो गया जैसा कि भारत के अधिकतर ग्रामीण इलाकों में रिवाज है। उनका पति शहीद साथी महेन्द्र (जयपाल) था जो विशाखापट्टनम शहर में पार्टी संगठनकर्ता के रूप में काम करता था। सन् 1986 में का. करुणा पेशेवर क्रांतिकारी के रूप में उसके साथ चली गईं और उस शहर में तकनीकी क्षेत्र में काम करना शुरू किया। चूंकि वह ग्रामीण क्षेत्रों में काम करके सीधे जन युद्ध में भाग लेने की इच्छुक थीं इसलिए उन्होंने शहर में रहने के दौरान नर्स प्रशिक्षण कोर्स किया। उन्होंने मजदूर वर्ग की महिलाओं से सम्पर्क भी स्थापित किए। का. महेन्द्र की एक फर्जी मुठभेड़ में शहादत के बाद उन्होंने पार्टी से ग्रामीण क्षेत्रों में सेवा करने की प्रार्थना की। अपने निजी जीवन में इतने बड़े हादसे को झेलने के बाद भी उनके दृढ़ संकल्प को सराह कर पार्टी ने उनका तबादला श्रीकाकुलम जिले में करके उनकी प्रार्थना को मंजूर किया। वहां वह कुछ समय तक श्रीकाकुलम कस्बे में झुग्गी-बस्तियों

में काम करने के बाद उद्दमन एरिया स्क्वाड में एक कमेटी सदस्य के रूप में शामिल हुईं। बाद में वह झंझावटी स्क्वाड में शामिल हो गईं। श्रीकाकुलम डिवीजन के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने के दौरान उन्होंने ग्रामीण जनता को सामंतवाद व साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष में संगठित करने पर ध्यान केंद्रित किया जबकि उसी दौरान उन्होंने न केवल अपने स्क्वाड की बल्कि व्यापक गरीबों की स्वास्थ्य समस्याओं पर भी ध्यान दिया। जिनकी आधुनिक दवाओं तक कोई पहुँच नहीं थी। इससे भी ज्यादा महत्व की बात यह है कि वह सैनिक मामलों में प्रशिक्षण लेने को बहुत आतुर थीं। उन्होंने इसके लिए जोर दिया और अपने स्क्वाड द्वारा की गई अधिकतर कार्रवाईयों में हिस्सा लिया और इस तरह से उन्होंने स्वयं को एक दक्ष छापामार योद्धा के रूप में विकसित किया। वह लैंगिंग मामलों में गहरी समझ रखती थी और सिद्धांत व व्यवहार दोनों में पुरुष सत्ता व पितृसत्ता के खिलाफ संघर्ष में आगे रही।

उन्होंने सन् 1996 में का. चन्द्रमौली से विवाह किया और इसके शीघ्र बाद उन्होंने पूर्वी डिविजन में कार्य शुरू किया।

पूर्वी डिविजन में ही उनकी प्रच्छन्न (छिपी हुई) व अर्जित क्षमताएं वस्तुतः पूर्णतया विकसित हुईं। तमाम हथियारबंद झड़पों में राज्य के सशस्त्र पुलिस बलों के साथ लड़ने में एक कमाण्डर के रूप में अपने स्क्वाड की अगुआई करते हुए तथा अपने पक्ष की बहुत कम तादाद के बावजूद भी एकदम मामूली नुकसान झेलते हुए उन्होंने अनुकरणीय साहस, संकल्प व आत्मबलिदान की भावना का प्रदर्शन किया। जर्जर शारीरिक अवस्था और स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त रहने के बावजूद यह बहादुर योद्धा हमेशा कार्रवाई के बीच में रहना चाहती थी। का. करुणा ने खुद को गहन अध्ययन तथा समर्पित क्रांतिकारी व्यवहार की प्रक्रिया द्वारा विकसित किया और इस प्रकार स्वयं को पिछड़े ग्रामीण इलाके की एक साधारण किसान लड़की से एक निर्भय योद्धा, एक समर्थ व सक्षम नेता व जनता की एक काबिल डाक्टर के रूप में बदल दिया। इस बात को देखते हुए यह एह कमाल का काया पलट था कि क्रांतिकारी आंदोलन में आने से पहले उन्होंने मामूली औपचारिक शिक्षा ग्रहण की थी और मेडिकल कालेज का तो मुंह भी नहीं देखा था। मशहूर कलिमेला व दाराकोंडा आपरेशनों के दौरान हमलावर टीम की कमाण्डर तथा अपनी समूची फोर्स के डाक्टर के रूप में जुड़वा जिम्मेदारियों को निभाते हुए जो भूमिका उन्होंने निभायी वह



उन ऊंचाइयों की महज एक गवाह है जिन तक सिर्फ संकल्प, घनघोर परिश्रम और समृद्ध क्रांतिकारी व्यवहार व अध्ययन के जरिए यह महान योद्धा पहुंची।

दवाओं से भी ज्यादा यह उनका कामरेडाना प्यार, स्नेहमयी देखभाल, चिंता व बर्ताव ही था जिससे बहुत से पी एल जी

ए के गम्भीर रूप से घायल योद्धा मौत के मुंह से भी वापस आ गए। एक मामले में एक साथी की शत्रु की गोलीबारी के दौरान पूरी तरह क्षत-विक्षत उंगलियों को दुरुस्त करने में उन्होंने कामयाबी हासिल की। गंभीर रूप से घायल व रक्तश्राव से ग्रस्त लोगों का उपचार करते हुए कोमल स्वर में उनको निश्चित रूप से स्वस्थ हो जाने के प्रति आश्वस्त करने के अपने तरीके से वह उनके लिए मानसिक शांति का एक विराट श्रोत बन जाती थीं तमाम गंभीर रूप से घायल लोगों पर उनकी कोमल किन्तु दृढ़ आश्वस्तिकता का असर करती थी।

उनकी चिकित्सकीय प्रतिभा व समर्पित सेवा से एकदम कायल पार्टी के केंद्रीय सैन्य आयोग

ने हाल ही में उनके नेतृत्व में एक विशेष मेडिकल टीम गठित करने का निर्णय किया था। परंतु वहशी आंध्र प्रदेश पुलिस ने इस योजना के मूर्त रूप से लेने से पूर्व ही उन्हें पकड़ कर मार दिया।

जैसा कि पहले कहा गया है का. करुणा हमारे समाज में गहरी जड़ जमाए पितृसत्तात्मक व्यवहार के चलते महिलाओं द्वारा झेली जा रही समस्याओं के प्रति गहरा सरोकार रखती थीं और सामंतवाद व साम्राज्यवाद विरोधी संघर्ष के साथ-साथ पितृसत्तात्मक उत्पीड़न के विरुद्ध महिलाओं को विशेषकर आदिवासी महिलाओं को गोलबंद करने के लिए उन्होंने कठिन परिश्रम किया। उनकी पहल व नेतृत्व के अंतर्गत ही क्रांतिकारी आदिवासी महिला संगठन का प्रभागीय सम्मेलन पहली बार पूर्वी डिविजन में हुआ और वह इसकी सभापति चुनी गईं।

का. करुणा एक अच्छी कवियित्री भी थी। यद्यपि उनके द्वारा रचित कविताएं कोई ज्यादा नहीं हैं। चूंकि वह अपनी बहुमुखी सृजनात्मकता के इस विशेष पहलू के लिए अधिक समय

निकालने की स्थिति में नहीं थी, फिर भी जो कविताएं उन्होंने रचीं व सार व रूप दोनों में क्रांतिकारी काव्य का नगीना हैं।

उनकी शहादत से सी पी आई (माओवादी) और पी एल जी ए ने अपना एक सबसे वीर योद्धा, सर्वाधिक समर्पित डाक्टर तथा अपना एक अत्यन्त सम्भावनाशील उदीयमान नेता खो दिया है।

युगल जिसने उच्च आदर्श स्थापित किए

जो लोग एक बार भी दोनों में से किसी एक से कभी मिले थे उनके शानदार कम्युनिस्ट मूल्यों के कारण उन्हें कभी भी नहीं भूल सकते। वे दोनों आदर्श कम्युनिस्ट और सच्चे कम्युनिस्ट नेता थे। आने वाली पीढ़िया अवश्य ही उनके गुणों को अपनाने की कामना करेंगी तथा अपने जीवन में उतारने की कोशिश करेंगी क्रांतिकारी जीवन एवं संघर्ष में उनके द्वारा चरितार्थ आदर्शों व उनके निजी दृष्टांत का अनुकरण करना ही इन दोनों के प्रति एक सच्ची श्रद्धाजलि होगी।

संपादक: पी. गोविंदन कुट्टी मोबाइल: 9947276692

पी. गोविंदन कुट्टी, पेरुर हौस, त्रिपुनिथुरा, एन. एफ. ईरनाकुलम, केरल-682301
द्वारा संपादित व प्रकाशित तथा दी बेस्ट ओफसेट प्रिन्टर्स एवं
पब्लिशर्स ५५, चिट्टूर रोड, अय्यप्पनकावु, कोच्चि - ६८२ ०१८ द्वारा मुद्रित

ईमेल: peoplesmarch@gmail.com
peoplesmarch@inditimes.com
peoplesmarch2000@rediffmail.com

एक असाधारण कम्युनिस्ट नेता – का. चन्द्रमौली

एक महान क्रांतिकारी योद्धा व जनता की डाक्टर – का. करुणा –शारदा

दिसंबर 29, को भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी) को इस वर्ष का सबसे जबरदस्त धक्का लगा जब खून की प्यासी आंध्र प्रदेश पुलिस ने आंध्र प्रदेश के पूर्वी घाट इलाके (ए ओ बी एरिया) में केंद्रीय कमेटी सदस्य का. वदकापुर चन्द्रमौली और उनकी साथी व पत्नी का. करुणा की फर्जी मुठभेड़ में हत्या कर दी। यह पार्टी के लिए खास तौर पर और भी ज्यादा दुःखद घटना थी क्योंकि इसके वरिष्ठ कार्यकर्ता व नेता उसी दौरान नौवीं पार्टी की कांग्रेस-एकता कांग्रेस का आयोजन करके एकीकरण की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने के लिए किसी दूसरी जगह जमा हो रहे थे। वास्तव में कामरेड चन्द्रमौली व करुणा जब सम्भलपुर से पार्टी कांग्रेस में हिस्सा लेने जा रहे थे तो आंध्र प्रदेश पुलिस के स्पेशल इंटीलीजेंस ब्यूरो के लोगों ने उनका अपहरण कर लिया। हत्या करने से पहले पुलिस द्वारा दोनों को कूरतापूर्वक यातनाएं दी गयीं। परंतु दोनों ने अमानवीय यातनाओं का सामना किया और कोई भी ऐसा भेद प्रकट नहीं किया जिससे की पार्टी अथवा क्रांतिकारी आंदोलन को कोई नुकसान पहुंचता-इस प्रकार उन्होंने अनुकरणीय साहस व आत्मबलिदान की भावना का परिचय दिया जो महान कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों में मिलती है। महान कम्युनिस्ट क्रांतिकारी, जनमुक्ति छापामार सेना के शीर्ष कमाण्डर, लाखों-लाख क्रांतिकारी जनता के प्रिय नेता का. चन्द्रमौली तथा जनता के प्रति पूर्णतः समर्पित क्रांतिकारी डाक्टर व निर्भय योद्धा का. करुणा, जिन्होंने देश की शोषित जनता की साम्राज्यवादी-सामंती आतताइयों व शोषकों के जुए से मुक्ति के लिए लड़ते हुए स्वेच्छा से अपने प्रणों की आहुति दे दी, के प्रति लाखों-लाख जनता के साथ-साथ अपनी क्रांतिकारी श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए पीपुल्स मार्च नतमस्तक है।

चन्द्रमौली-बहुमुखी क्षमता के एक महान नेता!

का. चन्द्रमौली (नवीन, बालकृष्ण) पिछले 25 वर्षों से क्रांतिकारी आंदोलन में सक्रिय थे। वह एक महान नेता और माओवादियों के जन मुक्ति छापामार सैन्य बलों के एक शीर्ष कमाण्डर

थे। उनकी क्षमताएं बहुमुखी थीं – वे पार्टी कार्यकर्ताओं व साथ ही क्रांतिकारी जनता के एक महान संगठनकर्ता थे, एक असाधारण व



साहसी कमाण्डर थे जिसने अपने गुरिल्ला योद्धाओं का मोर्चे पर हमेशा अगुवा रह कर नेतृत्व किया, वह एक प्रतिभाशाली शिक्षक थे जिसने प्रारम्भिक व उच्चतर दोनों स्तरों पर पार्टी के सैकड़ों कार्यकर्ताओं को मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओवाद

के बुनियादी सिद्धांतों की शिक्षा दी, सिद्धांत और व्यावहारिक अभ्यासों-दांवपेचों दोनों में वह सर्वोत्तम सैनिक प्रशिक्षक माने गए, वह एक अच्छे कवि थे जिन्होंने क्रांतिकारी जीवन पर कई कविताएं व गीत रचे, वह एक अच्छे शिक्षक ही नहीं बल्कि आजीवन एक अच्छे विद्यार्थी बने रहे जिसमें एम एल एम को और गहराई व पूर्णता से जानने व आत्मसात करने की अनथक प्यास थी ताकि क्रांतिकारी आंदोलन की जटिल समस्याओं को सुलझाने में समर्थ हो सकें तथा भारतीय नवजनवादी क्रांति की रणनीति-कार्यनीति को बेहतर बना सकें। एक शब्द में वह सी पी आई (माओवादी) की केंद्रीय कमेटी के एक महान नेता थे, एक असाधारण सैन्य कमाण्डर व कार्यनीतिकार थे, जनयुद्ध की राह पर आगे बढ़ने में वरिष्ठ कार्यकर्ताओं के साथ-साथ नई पीढ़ी के हजारों पार्टी कार्यकर्ताओं व पी एल जी ए योद्धाओं को उत्साहित, जागृत व नेतृत्व करने में एकदम समर्थ कामरेड थे!

समर्पित क्रांतिकारी जीवन के 25 वर्ष

का. चन्द्रमौली का 25 वर्ष तक क्रांतिकारी जीवन एक ऐसे कार्यकर्ता की अनुकरणीय कथा है जिसने अपना क्रांतिकारी जीवन एक छात्र संगठनकर्ता के रूप में आरम्भ किया जो क्रांतिकारी आंदोलन के साथ-साथ विकसित होते हुए पार्टी के एक शीर्ष नेता-केंद्रीय कमेटी व केंद्रीय सैनिक कमीशन के सदस्य के पद तक पहुँच गया तथा यह सब उसने समर्पित व दृढ़ क्रांतिकारी व्यवहार व अध्ययन के बलबूते किया, समय व परिस्थिति की मांग के अनुसार अपना स्तर ऊँचा उठाते हुए जन युद्ध को आगे बढ़ाने में अपनी समस्त क्षमताओं को उभार कर किया, और इस सबके पीछे एकमात्र उद्देश्य था देश की उत्पीड़ित जनता के हितों की सेवा करना। का. चन्द्रमौली आंध्र प्रदेश के करमीनगर जिले के पेद्दापल्ली तहसील के बदकापुर गांव में पिछड़ी जाति के एक ग्रामीण दस्तकार परिवार में पैदा हुए थे – यह एक ऐसा क्षेत्र था जिसने सन् 1970 के दसक के अंत में 1980 के दशक के शुरु में भूतपूर्व सी पी आई (एम एल) शेष पृष्ठ 25 पर